डाक पंजीयन क्र. MP/Bhopal/186/2024-2026
लाइसेंस क्र. Tech/23-04/08/2024-2026
आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या 38506/84

रोज़गार और निर्माण

टेलीग्राम चैनल से जुड़ने के लिए यहां क्लिक करें

प्रति सोमवार को प्रकाशित, भोपाल 25 03 2024 से 31 03 2024 वर्ष-41 अंक-13 मूल्य रु 10.00

इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) के प्रथम रेंडमाइजेशन की प्रक्रिया हुई संपन्न

भोपाल, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया कि लोकसभा निर्वाचन-2024 को लेकर 34 जिलों में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों (ईवीएम) के प्रथम रेंडमाइजेशन की प्रक्रिया संपन्न हो गई है। उन्होंने बताया कि ईवीएम रेंडमाइजेशन की प्रक्रिया मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय राजनैतिक दलों के अधिकृत प्रतिनिधियों तथा संबंधित जिले के कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारियों की उपस्थिति में हुई। रेंडमाइजेशन प्रक्रिया पूरी होने के बाद इन मशीनों को विधानसभा क्षेत्रवार अलॉट कर दिया गया है। ईवीएम को विधानसभा क्षेत्र के स्ट्रांग रूम में सुरक्षित रख दिया गया है। लोकसभा निर्वाचन को ध्यान में रखते हुए श्योपुर, मुरैना, भिंड, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, अशोकनगर, सागर, टीकमगढ़, छतरपुर, दमोह, सतना, रीवा, सीधी, सिंगरौली, अनूपपुर, उमरिया, कटनी, जबलपुर, डिंडोरी, मंडला, बालाघाट, सिवनी, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, बैतूल, हरदा, नर्मदापुरम, रायसेन, विदिशा, भोपाल, सीहोर, राजगढ़ एवं निवाड़ी जिले में 21 मार्च को ईवीएम का रेंडमाइजेशन किया गया।

20 मार्च से शुरू हुई नामांकन प्रक्रिया, 19 अप्रैल से मतदान और 4 जून को होगी मतगणना

1500 से अधिक मतदाताओं वाले 367 मतदान केंद्रों में विकसित किए जाएंगे "सहायक मतदान" केंद्र

भोपाल, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने निर्वाचन सदन, भोपाल में मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के पदाधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने प्रदेश में लोकसभा निर्वाचन-2024 के संबंध में प्रभावशील आदर्श आचरण संहिता के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश में चार चरणों में लोकसभा चुनाव संपन्न कराए जाएंगे। पहले चरण में लोकसभा संसदीय क्षेत्र क्रमांक-11 सीधी, क्रमांक-12 शहडोल, क्रमांक-13 जबलपुर, क्रमांक-14 मंडला, क्रमांक-15 बालाघाट एवं लोकसभा संसदीय क्षेत्र क्रमांक-16 छिंदवाड़ा में निर्वाचन कराया जायेगा। पहले चरण के लिए 20 मार्च से नामांकन प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि 27 मार्च है। नामांकन पत्रों की संवीक्षा 28 मार्च को की जाएगी। नामांकन भर चुके प्रत्याशी 30 मार्च तक नाम वापस ले सकेंगे। पहले चरण के लिए 19 अप्रैल को मतदान होगा। सभी चरणों के मतदान की मतगणना 4 जून को होगी।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने लोकसभा निर्वाचन 2024 के संबंध में राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के पदाधिकारियों के साथ बैठक की।

367 सहायक मतदान केंद्र बनेंगे

श्री राजन ने बताया कि प्रदेश में कुल मतदान केंद्रों की संख्या 64 हजार 523 है। 1500 से अधिक मतदाताओं वाले चिन्हित 367 मतदान केंद्रों में सहायक मतदान केंद्र बनाने का प्रस्ताव भारत निर्वाचन आयोग को भेजा गया है। लोकसभा चुनाव में मतदाता पर्ची का वितरण पृथक-पृथक चरणों में मतदान तिथि से 10 दिन पहले प्रारंभ कर मतदान दिवस के 5 दिन पहले ही पूरा कर लिया जायेगा।

आपराधिक प्रकरणों की जानकारी देनी होगी

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन ने बताया कि निर्वाचन में प्रत्येक उम्मीदवार द्वारा अधिकतम 4 फॉर्म भरे जा सकेंगे। प्रत्येक अभ्यर्थी को अपने नाम निर्देशन पत्र के साथ निर्धारित प्रपत्र में एक शपथ पत्र भी देना होगा। अभ्यर्थी द्वारा प्रस्तुत शपथ पत्र मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय की वेबसाइट www.ceomadhyapradesh.nic.in पर 24 घंटे में प्रदर्शित किए जाएंगे। शपथ पत्र में उम्मीदवार को अपने आपराधिक प्रकरणों की जानकारी भी देनी होगी, जिससे मतदाता ऐसे उम्मीदवारों की पृष्ठभूमि के बारे में जान सकें। प्रत्याशी के चयन के 48 घंटे में समाचार पत्र, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एवं पार्टी की वेबसाइट पर फॉर्म सी-7 में प्रकाशित करना होगा।

चुनाव प्रचार में अभ्यर्थी 95 लाख रुपये तक कर सकेंगे खर्च

लोकसभा निर्वाचन के लिए चुनाव प्रचार व्यय की सीमा 95 लाख रुपये निर्धारित है। इसके लिये अभ्यर्थी को बैंक में एक पृथक खाता खोलना आवश्यक है। रिटर्निंग अधिकारी से प्राप्त निर्वाचन व्यय रजिस्टर में सभी दैनिक व्यय लेखा का रख-रखाव करना होगा। सभी पोस्टर, बैनर, चाहे वे नाम निर्देशन के पहले मुद्रित, प्रकाशित किए गए हों, परंतु नाम निर्देशन के बाद उपयोग या प्रदर्शित किए जा रहे हों, यह सभी अभ्यर्थी के निर्वाचन व्यय में जुड़ेंगे। श्री राजन ने बताया कि नाम निर्देशन पत्र दाखिल करने के दौरान अभ्यर्थी को अधिकतम 3 वाहन एवं अभ्यर्थी सहित अधिकतम 5 व्यक्तियों की अनुमति रहेगी।

जिलों में कंट्रोल रूम एवं शिकायत सेल क्रियाशील

श्री अनुपम राजन ने बताया कि सभी लोकसभा संसदीय क्षेत्रों में संपत्ति विरूपण के विरुद्ध कार्रवाई जारी है। अब तक शासकीय भवन से 2 लाख 76 हजार 892, सार्वजनिक सम्पत्ति एक लाख 88 हजार 203 और निजी सम्पत्ति 57 हजार 992 स्थानों पर सम्पत्ति विरूपण की कार्यवाही की गई है।

5 करोड़ से अधिक मतदाता करेंगे मत का प्रयोग

श्री अनुपम राजन ने बताया कि वर्तमान में मध्यप्रदेश में 5 करोड़ 64 लाख 76 हजार 110 मतदाता हैं। इसमें 2 करोड़ 90 लाख 13 हजार 307 पुरुष मतदाता, 2 करोड़ 74 लाख 61 हजार 575 महिला मतदाता एवं 1 हजार 228 अन्य (थर्ड जेन्डर) मतदाता शामिल हैं।

प्राधिकृत पत्रकारों को मिलेगी पोस्टल बैलेट की सुविधा

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा अब मतदान दिवस के कवरेज में शामिल प्राधिकृत पत्रकारों को भी पोस्टल बैलेट से वोट डालने की सुविधा प्रदान की गई है। आयोग ने अधिसूचना जारी कर पत्रकारों के कार्य को अत्यावश्यक सेवा श्रेणी में स्थान देकर यह सुविधा प्रदान की है। यह सुविधा केवल उन पत्रकारों को मिलेगी, जिन्हें निर्वाचन कार्य के कवरेज के लिए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा प्राधिकार पत्र जारी किया गया हो। चुनाव कार्य के कवरेज में संलग्न पत्रकार को अपना प्राधिकार पत्र लगाकर पोस्टल बैलेट से मतदान करने के लिये आवेदन करना होगा।

मतदाताओं को वोट के लिए प्रेरित करने जागरूकता वाहन किये रवाना

भोपाल, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने निर्वाचन सदन, भोपाल से मतदाता जागरूकता के लिये तैयार किये गये 75 विशेष प्रचार वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। श्री राजन ने बताया कि विधानसभा निर्वाचन-2023 में प्रदेश के 26 जिलों की 75 विधानसभा क्षेत्रों में मतदान का प्रतिशत 75 फीसदी से कम रहा था। इन 75 विधानसभा क्षेत्रों में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिये ये विशेष जागरूकता वाहन तैयार किये गये हैं।

इन मतदाता जागरूकता वाहनों में बैनर्स, पोस्टर्स, स्लोगन्स, प्लाज्मा टीवी के जरिये मतदाता जागरूकता गीत, रील और वीडियो आदि दिखाकर मतदाताओं को उनके मताधिकार का उपयोग अवश्य करने के लिये प्रेरित किया जायेगा।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन ने मतदाता जागरूकता वाहनों को हरी झंडी दिखाई

यह प्रचार वाहन अगले एक महीने तक (लोकसभा निर्वाचन-2024 के दौरान) संबंधित विधानसभा क्षेत्रों में रहकर अधिकतम आबादी तक पहुंचकर वोटिंग के लिये प्रेरित करने का कार्य करेंगे।

इन जिलों में भेजे गये हैं प्रचार वाहन

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन ने बताया कि यह प्रचार वाहन 26 जिलों क्रमशः मुरैना, भिण्ड, ग्वालियर, दतिया, गुना, सागर, छतरपुर, दमोह, पन्ना, सतना, रीवा, सीधी, सिंगरौली, शहडोल, कटनी, जबलपुर, भोपाल, देवास, खण्डवा, बड़वानी, अलीराजपुर, झाबुआ, धार, इंदौर, उज्जैन एवं रतलाम भेजे गये हैं।

/ संक्षिप्त खबर /

अवकाश के दिन जमा नहीं होंगे नाम निर्देशन पत्र

भोपाल, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया कि जिला निर्वाचन कार्यालयों में अवकाश के दिन नाम निर्देशन पत्र जमा नहीं होंगे। उन्होंने बताया कि प्रदेश में लोकसभा निर्वाचन के पहले चरण के लिए नाम निर्देशन भरने की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। प्रथम चरण के लिए नाम निर्देशन पत्र दाखिल करने की अंतिम तारीख 27 मार्च है। श्री राजन ने बताया कि लोकसभा का चुनाव लड़ने के लिए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निक्षेप राशि (जमानत राशि) निर्धारित की गई है। अनारक्षित वर्ग के अभ्यर्थी को 25 हजार रुपये और अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के अभ्यर्थी को 12 हजार 500 रुपये की निक्षेप राशि जमा करानी होगी।

महिला एवं दिव्यांग कर्मी भी करेंगे मतदान बूथ का संचालन

भोपाल, लोकसभा निर्वाचन-2024 में प्रदेश में 3500 मतदान केन्द्रों पर महिला मतदान कर्मियों द्वारा मतदान कराया जायेगा। यह जानकारी मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने दी। उन्होंने बताया कि इन मतदान केन्द्रों पर तैनात पूरा मतदान दल महिला अधिकारी, कर्मचारियों का होगा। इसी तरह लगभग 250 मतदान केन्द्रों पर दिव्यांग मतदान कर्मियों द्वारा मतदान कराया जायेगा। श्री राजन ने बताया कि लोकसभा निर्वाचन-2024 के संचालन के लिये लगभग 5 लाख 20 हजार मतदान कर्मी, सेक्टर ऑफिसर, पुलिसकर्मी के रूप में अधिकारियों और कर्मचारियों की निर्वाचन ड्यूटी लगाई जा रही है। मतदान के दिन प्रत्येक मतदान केन्द्र में संबंधित बीएलओ भी उपस्थित रहेंगे।

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में स्क्रीनिंग कमेटी गठित

भोपाल, राज्य शासन द्वारा मुख्य सचिव की अध्यक्षता में स्क्रीनिंग कमेटी का गठन किया गया है। यह कमेटी मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के माध्यम से भारत निर्वाचन आयोग को प्रेषित किए जाने वाले विभागों के प्रस्ताव का परीक्षण एवं अनुशंसा करेगी। समिति में प्रमुख सचिव, सामान्य प्रशासन तथा प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले विभागों से संबंधित अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव, सचिव सदस्य होंगे। आचार संहिता के दौरान अब कोई भी विभाग अपना प्रस्ताव स्क्रीनिंग कमेटी के परीक्षण, अनुशंसा के पहले मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अथवा सीधे भारत निर्वाचन आयोग को प्रेषित नहीं करेगा।

भीतर के पृष्ठों पर

- **पिछला सप्ताह** - देश-विदेश की साप्ताहिक खबरों का संक्षिप्त विवरण
- **चर्चा में** - चर्चित व्यक्तियों और ध्यान आकर्षित करने वाली खबरों की चर्चा
- **खेल चर्चा** - प्रमुख खेल गतिविधियों का विवरण
- **सामयिकी** - देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

(स्रोत : समाचार एवं फोटो जनसंपर्क विभाग, मध्यप्रदेश से साभार)

16 मार्च

अंटार्कटिका में डाकघर को कर्मचारियों की तलाश

● दुनिया के सबसे दक्षिणी छोर पर स्थित पेंगुइन डाकघर को 4 महीने के लिए पेंगुइनों

की गिनती और पत्र छांटने के लिए 3 कर्मियों की तलाश है। गौडियार द्वीप पर डाकघर का संचालन यूके अंटार्कटिक हेरिटेज ट्रस्ट कर रहा है। ट्रस्ट के अनुसार प्रतिवर्ष गर्मियों में क्रूज और जहाज के यात्री आते हैं। इस दौरान यहां से 80 हजार पत्र और पोस्टकार्डों का लेन-देन होता है।

● अमेरिका सरकार ने साइबर सुरक्षा को मजबूत बनाने के लिए फरवरी 2024 में 'बैक टू द बिल्डिंग ब्लॉक्स-ए पाथ टुवर्ड सिक्योर एंड में असुरेबल सॉफ्टवेयर' शीर्षक से रिपोर्ट जारी की है। इसमें सरकार ने टेक्नोलॉजी कंपनियों से कहा है कि वे हैकर्स के लिए आसान साबित होने वाली पुरानी प्रोग्रामिंग लैंग्वेज छोड़कर नई लैंग्वेज का इस्तेमाल करें। रिपोर्ट के अनुसार 'सी' और 'सी++' जैसी पुराने लैंग्वेज में कुछ कमजोरियां थीं, हैकर्स जिनका फायदा उठा लेते थे।

● दुनियाभर में रोबोट की वजह से सबसे ज्यादा बेरोज़गारी नजर आ रही है। अमेरिकी थिंक टैंक इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड इनोवोटिव फाउंडेशन द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में बेरोज़गारी बढ़ रही है और इसका सबसे ज्यादा प्रभाव चीन पर देखा जा रहा है। चीन में लगभग हर उद्योग में इंसानों की जगह रोबोट काम कर रहे हैं। दुनियाभर के उद्योगों में काम करने वाले कुल रोबोटों का 51 प्रतिशत चीन में है। परंतु माना जा रहा है कि अभी चीन की रोबोट इंडस्ट्री सॉफ्टवेयर के लिए आत्मनिर्भर नहीं है। वह सॉफ्टवेयर के लिए पूरी तरह से अमेरिका और जापान जैसे विकसित देशों पर निर्भर है।

17 मार्च

ब्रिटेन में खुले फ्री रिपेयर कैफे

● ब्रिटेन में इन दिनों फ्री रिपेयर कैफे खुलते जा रहे हैं। यह रिपेयर कैफे मुफ्त, समुदाय

संचालित स्थल हैं जहां पर टूटी हुई या खराब हो गई वस्तुएं ठीक की जाती हैं। यहां गैजेट्स से लेकर इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं, फर्नीचर, कपड़े आदि तक की रिपेयरिंग मुफ्त में की जाती है। उल्लेखनीय है कि महंगाई बढ़ने के कारण लोगों ने चीजों को रिपेयर करके पुनः उनका इस्तेमाल चालू कर दिया है। रिपेयर कैफे में काम करके लोग नयी स्किल्स भी सीख रहे हैं। यह सतत विकास में भी लाभकारी है।

● भारत में कैंसर ग्रस्त मरीजों के इलाज के लिए काईमेरिक रिसेप्टर टी सेल थेरेपी (सीएआर-टी) का परीक्षण किया जा रहा है। चंडीगढ़ के पीजीआईएमईआर में भर्ती 22 वर्षीय कमल पुधीर इस थेरेपी के जरिए ठीक होने वाले पहले मरीज़ बन गए हैं। वह ब्लड कैंसर से पीड़ित थे। अब वह इस थेरेपी के जरिए बिलकुल स्वस्थ हैं। उल्लेखनीय है कि देश के 3 अस्पतालों में इस थेरेपी के जरिए इलाज का परीक्षण हो रहा है।

18 मार्च

भारत-मालदीव ने की भारतीय सैनिकों की वापसी की समीक्षा बैठक

● भारत और मालदीव ने भारतीय सैनिकों की वापसी की समीक्षा बैठक की। इस

बैठक में मालदीव ने कहा कि भारतीय सैनिकों का दूसरा समूह 10 अप्रैल तक रवाना हो जाएगा। बैठक में मालदीव के लोगों को मानवीय और चिकित्सा निकासी सेवाएं प्रदान करने वाले भारतीय विमानन प्लेटफार्मों के संचालन को सक्षम करने के लिए और भारतीय तकनीकी कर्मियों की चल रही प्रतिनियुक्ति की समीक्षा भी की गई।

● भारतीय नौसेना ने एक अभियान में सोमालिया के समुद्री डाकुओं से जहाज एमवी रूएन को मुक्त कराया। यह जहाज 3 महीने पहले अदन की खाड़ी से अपहर्त कर लिया गया था। भारतीय नौसेना ने 40 घंटे लंबा रेस्क्यू ऑपरेशन चलाकर इस जहाज और 17 बंधकों को भी मुक्त कराया। यह ऑपरेशन युद्धपोत आईएनएस सुभद्रा, आईएनएस कोलकाता और सी गार्जियन ड्रोन की सहायता से किया गया।

● देश की पहली सिकल सेल रोग से लड़ने वाली दवा 'हाईड्रोक्सीयूरिया' ओरल सस्पेंशन जल्द ही लॉन्च होने वाली है। यह दवा एकम्स दवा कंपनी द्वारा बनाई गई है। यह दवा सिकल सेल रोग के लिए भारत की पहली घर के सामान्य तापमान में रखी जा सकने वाली दवा है। इसकी कीमत भी इसके आयातित संस्करणों के मुकाबले कम होगी। ज्ञात रहे, सिकल सेल एनीमिया एक अनुवांशिक बीमारी है। लाल रक्त कोशिकाएं जो सामान्य रूप से गोल आकार तथा लचीली होती हैं, वह जब अर्ध गोलाकार एवं सख्त हो जाए तो उन्हें सिकल सेल कहा जाता है। यह धमनियों में अवरोध पैदा करती हैं जिससे शरीर में हीमोग्लोबिन एवं खून की कमी होने लगती है।

19 मार्च

विलुप्त होने की कगार पर हैं दुनिया के सबसे बड़े मेंढक

● दुनिया के सबसे बड़े मेंढक गोलियथ की संख्या लगातार गिर रही है, जिससे वह विलुप्त होने की कगार पर पहुंच गया है। पिछले 15 वर्षों में इसकी आबादी 50 प्रतिशत कम हुई है। यह मेंढक अफ्रीका में पाया जाता है। इसकी लंबाई 13 इंच और वजन 3 किलो का है। यह मनुष्यों को

देखकर छिपने की कोशिश करता है, जिसके कारण विशेषज्ञों द्वारा इसे डरपोक जीव की श्रेणी में रखा गया है। आईयूसीएन (IUCN) द्वारा गोलियथ को लुप्तप्राय प्रजाति माना गया है।

● यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के एक शोध के अनुसार प्रतिदिन 11 घंटे टीवी या लैपटॉप के सामने बैठे रहने वालों की मौत की संभावना साढ़े 9 घंटे बैठने वालों से 57 प्रतिशत अधिक होती है। इस शोध के अनुसार बैठने का समय जितना अधिक होता है, मौत या बीमारी की संभावना उतनी ही बढ़ जाती है। एक दूसरे शोध से यह भी सामने आया है कि लगातार बैठे रहने के दुष्परिणामों को व्यायाम भी कम नहीं कर सकता है। रिपोर्ट के अनुसार लगातार बैठे रहने वालों को हर आधे घंटे के बाद कुछ मिनटों के लिए खड़े रहना या थोड़ा घूम लेना चाहिए अन्यथा हाई बीपी या शुगर की समस्या हो सकती है।

● ऑस्ट्रेलिया में उबर को टैक्सी चालकों को 14 अरब का मुआवजा देना होगा। दरअसल उबर के आने से टैक्सी चालकों को भारी नुकसान उठाना पड़ा, उनकी आय कम हो गई और कई टैक्सी ड्राइवरों को अपना 40 साल पुराना धंधा बंद भी करना पड़ा। इसके चलते ड्राइवरों ने उबर के खिलाफ कोर्ट का रुख किया और कई दलीलों के बाद अब उबर समझौते के लिए तैयार हो गई।

20 मार्च

हांगकांग ने पास किया नया राष्ट्रीय सुरक्षा कानून

● हांगकांग ने एक विशेष सत्र में नया राष्ट्रीय सुरक्षा कानून पारित कर दिया है।

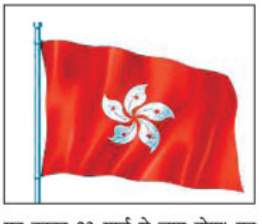

यह कानून 23 मार्च से लागू होगा। यह कानून हांगकांग सरकार को असहमति दबाने की अधिक शक्ति प्रदान करेगा। इस कानून में राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरे वाली गतिविधियों के लिए कठोर दण्ड का प्रावधान है। इस कानून के अनुसार देशद्रोह के लिए आजीवन कारावास हो सकता है, देश के खिलाफ लेख या साहित्य रखने के लिए कई सालों की कैद हो सकती है। इसके साथ ही यह कानून दुनिया में कहीं भी किए गए कृत्यों के लिए आपराधिक मुकदमा चलाने की अनुमति भी देता है। नागरिक संगठन इस कानून का यह कहते हुए विरोध कर रहे हैं कि यह नागरिक स्वतंत्रता को कमज़ोर कर देगा।

● अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा, यूरोपियन स्पेस एजेंसी (ईएसए) और गूगल अर्थ साथ मिलकर बाघों के लिए एक नया रियल टाइम मॉनिटरिंग सिस्टम तैयार कर रहे हैं। इस सिस्टम का नाम टाइगर कंजर्वेशन लैंडस्केप 3.0 (टीसीएल 3.0) है। यह बाघों की आबादी पर निगरानी रखेगा एवं उनके रिहाएशी इलाकों में हो रहे बदलावों की भी जानकारी देगा। इसके साथ-साथ सैटेलाइट की मदद से वास्तविक समय में लगातार हाई रिजॉल्यूशन की तस्वीरें भी सिस्टम में अपडेट की जाएंगी। बता दें कि आईयूसीएन (IUCN) के मुताबिक दुनिया में अब सिर्फ 4500 बाघ ही बचे हैं, जिसका एक मुख्य कारण बाघों के पर्यावास का नष्ट होना है। टीसीएल 3.0 उन क्षेत्रों की पहचान करके जिन्हें प्राथमिकता देनी चाहिए उन जगहों की बाघों के संरक्षण में सहायता करेगा।

● अमेरिकी कंपनी एनवीडिया ने 6जी टेलीकॉम नेटवर्क की टेस्टिंग के लिए एआई पर आधारित नया साफ्टवेयर प्लेटफार्म लॉन्च किया। इसमें एक ऐसी एप्लिकेशन भी है, जो क्लाउड आधारित कम्यूनिकेशन एनवॉयरनमेंट बनाती है। इसके माध्यम से 6जी नेटवर्क्स की वास्तविक समय में टेस्टिंग की जा सकेगी। यह टेक्नोलॉजी अभी यूनिवर्सिटी ऑफ बोस्टन में इस्तेमाल की जा रही है।

21 मार्च

23 जून को होगी मध्यप्रदेश राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा-2024

● पूर्व में 28 अप्रैल को होने वाली एमपीपीएससी राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा-2024 अब 23 जून को आयोजित की जाएगी। यह फैसला लोकसभा चुनाव को ध्यान में रखकर लिया गया है। इसी के चलते 2 जून को होने वाली सहायक प्राध्यापक परीक्षा की तारीख भी आगे बढ़ा दी गई है। नई तारीख की घोषणा अभी नहीं की गई है।

● हैदराबाद की इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (आईआईएल) ने डेंगू से बचाव

का टीका तैयार करने का दावा किया है। आईआईएल के प्रबंध निदेशक डॉक्टर के. आनंद कुमार के अनुसार अगर सब ठीक रहा तो आगामी दो साल में यह टीका (वैक्सीन) बन कर तैयार हो जाएगा। इसके पहले चरण का परीक्षण सफलतापूर्वक हो गया है। अब दूसरे चरण की तैयारी है।

● पिछले साल 2023 में दुनियाभर में भीषण गर्मी पड़ी थी। इस वर्ष (2023) को सबसे गर्म साल के तौर पर दर्ज किया गया। यह खुलासा यूनाइटेड नेशंस की हाल ही में जारी रिपोर्ट में किया गया है। यूएन की वर्ल्ड मीट्रियोलॉजिकल आर्गेनाइजेशन की ओर से जारी रिपोर्ट के अनुसार 2023 ही नहीं, 2014 से 2023 तक पूरा दशक भयंकर गर्मी की चपेट में रहा है। इसका असर समंदर से लेकर ग्लेशियर तक दिखा था। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने चेतावनी देते हुए कहा कि रिपोर्ट बताती है कि धरती लगातार खतरे की ओर बढ़ रही है। ज्ञात रहे कि डब्ल्यूएमओ की रिपोर्ट के अनुसार पिछले साल पृथ्वी की सतह का औसत तापमान 14.5 डिग्री सेल्सियस ज्यादा था। जबकि 2015 पेरिस जलवायु समझौते के मुताबिक तापमान की अधिकतम सीमा 1.5 डिग्री तय की गई है।

22 मार्च

यूपीएससी की प्रारंभिक परीक्षा 16 जून तक स्थगित

● संघ लोक सेवा आयोग ने 26 मई को होने वाली सिविल सेवा प्रारंभिक,

परीक्षा को लोकसभा चुनाव के कारण 16 जून तक के लिए स्थगित कर दिया है। भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस), भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) और भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) एवं अन्य अधिकारियों का चयन करने के लिए यूपीएससी प्रतिवर्ष तीन चरणों-प्रारंभिक, मुख्य और साक्षात्कार में सिविल सेवा परीक्षा आयोजित कराता है।

● रूस के सुदूर पूर्व में अमूर क्षेत्र में एक खदान ढहने से लगभग 13 लोग मलबे में दब गए हैं। रूस की स्थानीय आपातकालीन सेवा द्वारा दी गई जानकारी में अभी और ज्यादा लोगों के फंसे होने की आशंका है। स्थानीय समाचार एजेंसी आरआईए के अनुसार खदान में चट्टान अचानक ही कंपन्न के साथ ढह गयी। बचाव दल लगातार लोगों को बचाने का कार्य कर रहा है। जांच अधिकारियों के अनुसार अभी हादसे के कारणों की जांच भी की जा रही है।

● जापान के केन्द्रीय बैंक ने अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए 17 वर्षों में पहली बार अपनी प्रधान उधारी दर को बढ़ा दिया है। बैंक ऑफ जापान ने अपनी नीति बैठक में अल्पकालिक ब्याज दर को ऋणात्मक 0.1 प्रतिशत से बढ़ाकर 0.1 प्रतिशत कर दिया है। ब्याज दरों में बैंक ने फरवरी 2007 के बाद पहली बार बढ़ोत्तरी की है। बैंक ऑफ जापान के प्रमुख काजुओ उएदा ने कहा कि ब्याज दर बढ़ाना बैंक के हित में ही है। इसलिए सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया है।

● अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारतवंशी विवेक रामास्वामी की

अमेरिका के उप राष्ट्रपति बनने की संभावना को खारिज कर दिया है। ब्लूमबर्ग रिपोर्ट के मुताबिक ट्रम्प ने यह जानकारी स्वयं रामस्वामी को दी। इसी रिपोर्ट के अनुसार अगर ट्रम्प जीतते हैं, तो वह रामास्वामी को कैबिनेट में एक पद दे सकते हैं।

(स्रोत : संपादकीय टीम द्वारा संकलित
फोटो : गूगल से साभार)

वर्ष 41, अंक 13 25.03.2024 से 31.03.2024
रोज़गार और निर्माण
www rojgaraurnirman.in

● प्रबंध संचालक - संदीप यादव
● सम्पादक - रंजना चितले
● प्रबंधक - वंदना चतुर्वेदी (विज्ञापन एवं प्रसार)
● प्रबंधक - सुभाष चन्द्र जोशी (मुद्रण)
● आकल्पन - अरविन्द टोप्पो
● वेबसाइट - आत्माराम शर्मा

वार्षिक सदस्य बनने के लिये रुपये 500/- (पाँच सौ) का डी.डी., मनीऑर्डर अथवा पोस्टल ऑर्डर रोज़गार और निर्माण, भोपाल के नाम बनवाकर नीचे लिखे पते पर भेजें :-
रोज़गार और निर्माण, मध्यप्रदेश माध्यम, 40 प्रशासनिक क्षेत्र, अरेरा हिल्स, भोपाल (म.प्र.) पिन-462011
फोन- 2760006, 2551330, 4281330, फैक्स - 4228409, e-mail : madhyam.rojgar@gmail.com
रोज़गार और निर्माण कार्यालय में नगद राशि जमा कर भी इसकी वार्षिक सदस्यता प्राप्त की जा सकती है। रोज़गार और निर्माण में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद के लिये न्यायालयीन अधिकार क्षेत्र भोपाल रहेगा। रोज़गार और निर्माण में निजी संस्थाओं के विज्ञापन भी प्रकाशित किये जाते हैं, इन विज्ञापनों में किए गए दावे और तथ्य निजी संस्थाओं के अपने होते हैं। इसका समाचार पत्र के प्रबंधन से कोई संबंध नहीं है।

सम्पादकीय

लोकतंत्र का उत्सव और आदर्श आचार संहिता का महत्व

चुनाव हमारी लोकतांत्रिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह नागरिकों को उनके प्रतिनिधि चुनने का मौका देती है। एक निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनाव प्रक्रिया लोकतंत्र के लिए अति महत्वपूर्ण है। चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्ष, पारदर्शी नियंत्रित और शांतिपूर्ण बनाए रखने के लिए आदर्श आचार संहिता का पालन किया जाता है। आदर्श आचार संहिता में विभिन्न नियम और दिशानिर्देश शामिल होते हैं। चुनावी प्रक्रिया के दौरान नेताओं और राजनैतिक दलों को इन्हें अपनाना होता है। यह नियम और दिशानिर्देश उन्हें उनके आचार के लिए दिशा प्रदान करते हैं, ताकि चुनाव प्रक्रिया निष्पक्षता, समर्पण और सम्मान के साथ संचालित हो। लोकसभा चुनाव 2024 की घोषणा के साथ ही देश भर में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है। आदर्श आचार संहिता की शुरुआत से लेकर वर्तमान तक भारतीय चुनाव प्रक्रिया में सुधार और नियंत्रण का सफर निरंतर चल रहा है। आदर्श आचार संहिता न केवल राजनीतिक प्रक्रिया को शांतिपूर्ण और निष्पक्ष बनाती है, बल्कि एक सामाजिक आदर्श स्थापित करती है। आदर्श आचार संहिता का सबसे पहले उपयोग 1960 में केरल विधानसभा चुनाव में किया गया था। तब से लेकर आज तक यह सभी राजनीतिक दलों के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य कर रही है। चुनाव आयोग ने सभी दलों को आदर्श आचार संहिता का पालन करने के लिए प्रेरित किया है। यह न केवल निष्पक्षता की गारंटी है, बल्कि राजनीतिक प्रक्रिया में अनैतिक कार्यों को रोकने में मदद करती है। चुनावी नियमों को और अधिक प्रभावशील बनाने के लिए चुनाव आयोग ने 1991 में आदर्श आचार संहिता को और भी मजबूत बनाया। इस तरह भारत में आदर्श आचार संहिता अखंडता, समानता और पारदर्शिता के सिद्धांतों का प्रतीक है। सोशल मीडिया और डिजिटल संचार के युग में चुनाव आयोग के सामने कई चुनौतियां बढ़ गई हैं। सूचना का तेजी से प्रसार और गलत सूचना का प्रसार चुनावों के लिए नए खतरे उत्पन्न करता है, जिससे चुनावी नियमों में निरंतर नवाचार की आवश्यकता होती है। भारतीय राजनीति में निष्पक्षता, ईमानदारी और नैतिकता की महत्वपूर्ण भूमिका है। लेकिन राजनीतिक प्रक्रिया में विभिन्न चुनौतियां भी हैं। इन सभी मामलों में आदर्श आचार संहिता एक महत्वपूर्ण और आवश्यक उपाय है। यह न सिर्फ चुनाव प्रक्रिया को विश्वसनीय बनाती है, बल्कि राजनीतिक दलों और नेताओं को लोगों के साथ सच्चा और ईमानदार संबंध बनाए रखने में भी मदद करती है। आदर्श आचार संहिता का पालन करना चुनावी प्रक्रिया को न केवल सशक्त और विश्वसनीय बनाता है, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र की मजबूती का परिचायक भी है। आदर्श आचार संहिता चुनावी प्रक्रिया में जनता का विश्वास बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्हें आश्वासन देती है कि उनकी पसंद का सम्मान किया जाएगा और उनकी आवाज सुनी जाएगी। आदर्श आचार संहिता विपरीत परिस्थितियों में लोकतांत्रिक आदर्शों के प्रमाण के रूप में खड़ी होती है। निष्पक्षता, जवाबदेही और समावेशिता के सिद्धांतों के साथ लोकतंत्र केवल शासन की एक प्रणाली नहीं है, बल्कि एक सामूहिक आकांक्षा और आशा की किरण है, जो बेहतर भविष्य की राह को रोशन करता है। लोकतंत्र के संरक्षक के रूप में चुनावी प्रक्रिया की पवित्रता को संजोना और बनाए रखना हमारा कर्तव्य है। इसमें सबसे निर्णायक भूमिका चुनाव आयोग, आदर्श आचार संहिता और समाज की होती है। इसलिए आदर्श आचार संहिता का पालन कीजिए और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित कीजिए।

अटलांटिक महासागर के नक्शे को परिवर्तित करने में सक्षम है सबडक्शन जोन

दुनियाभर में विज्ञान के दृष्टिकोण से अलग-अलग शोध कार्य हो रहे हैं। कई शोध कार्यों से मिले परिणामों से वैज्ञानिकों का आत्मविश्वास बढ़ता है, वे उत्साहित हो जाते हैं। लेकिन कई बार ऐसे परिणाम भी सामने आते हैं जिन्हें देख वैज्ञानिकों का समूह चिंतित हो जाता है। विगत दिनों जियोलॉजी जर्नल में प्रकाशित एक रिपोर्ट ने वैज्ञानिकों की चिंता को बढ़ा दिया है। जर्नल के अनुसार आने वाले कुछ वर्षों में अटलांटिक महासागर में एक बड़ा बदलाव संभावित है। महासागर में एक सबडक्शन जोन पैदा हो सकता है जिसके शीघ्र सक्रिय होने की संभावना है। सबडक्शन जोन ऐसे क्षेत्र को कहा जाता है जहां पर धरती के नीचे मौजूद टेक्टॉनिक प्लेट दूसरी प्लेट में जाकर मिल जाती है। मतलब एक प्लेट दूसरी प्लेट के ऊपर या नीचे चली जाती है। ऐसा ही एक सबडक्शन जोन जिब्राल्टर जलडमरूमध्य के नीचे जल्द ही एक्टिवेट हो सकता है जिसे वैज्ञानिक अब तक सुप्त समझ रहे थे। यह अटलांटिक महासागर का नक्शा ही बदल कर रख देगा। इस रिसर्च जर्नल से जुड़े समूह के सदस्यों के अनुसार पृथ्वी की ऊपरी सतह के नीचे टेक्टॉनिक प्लेट होती है जो खिसकती भी है। इनमें होने वाली गतिविधि भी धरती की सतह पर विनाशकारी भूकंप ले आती है और ज्वालामुखी फटने लगते हैं। जिब्राल्टर के नीचे ऐसा ही जोन मौजूद है जिसे जिब्राल्टर आर्क भी कहा जाता है। रिपोर्ट के अनुसार यह 3 करोड़ सालों से पश्चिम की ओर घूम रहा था, लेकिन पिछले 50 लाख सालों से यह निष्क्रिय अवस्था में था। इसमें कोई गतिविधि नहीं हो रही थी और वैज्ञानिकों ने इसे सुप्त मान लिया था। जर्नल में प्रकाशित स्टडी के अनुसार सबडक्शन जोन की निष्क्रियता अस्थायी थी। शोधकर्ताओं ने इसके इतिहास और भविष्य को जानने के लिए कंप्यूटर सिमुलेशन का उपयोग किया। शोध के दौरान वैज्ञानिकों को इस बात का आभास हुआ कि यह टूट भी सकता है और अटलांटिक में प्रवेश कर सकता है। शोध के अनुसार इन सबसे पता चलता है कि सबडक्शन निष्क्रिय नहीं, बल्कि सक्रिय है।

- विकास तिवारी

(लेखक, प्रतियोगी परीक्षाओं से जुड़े विषयों पर लेखन करते हैं)

विश्व रंगमंच दिवस - 27 मार्च

जन-जागरूकता में रंगमंच की महत्वपूर्ण भूमिका

27 मार्च को विश्वभर में रंगमंच के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए विश्व रंगमंच दिवस मनाया जाता है। नाटक, थिएटर या रंगमंच एक ऐसा सशक्त, महत्वपूर्ण और मनोरंजक साधन है, जिसके माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों, कमजोरियों और अव्यवस्था को आसानी से उजागर कर जागरूकता फैलाई जा सकती है। अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच दिवस की शुरुआत साल 1961 में नेशनल थियेट्रिकल इंस्टीट्यूट द्वारा की गई थी। विश्व रंगमंच दिवस लोगों को प्रभावित करने, मनोरंजन करने, सिखाने और बदलने में रंगमंच कलाओं के मूल्य को पहचानता और रेखांकित करता है। यह दिन हर साल 27 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय थिएटर समुदाय और इंटरनेशनल थिएटर इंस्टीट्यूट (ITI) द्वारा मनाया जाता है।

विश्व रंगमंच दिवस का प्रस्ताव फिनलैंड के हेलसिंकी में संगठन के नौवें वैश्विक सम्मेलन में आईटीआई के संस्थापक अरवी किविमा द्वारा किया गया था। विश्व रंगमंच दिवस अभी भी ITI, विश्व प्रदर्शन कला संगठन द्वारा आयोजित किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन द्वारा इसका सहयोग किया जाता है। इस दिन का एक महत्वपूर्ण आयोजन अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच संदेश है, जो विश्व के किसी जाने माने रंगकर्मी द्वारा रंगमंच तथा शांति की संस्कृति पर विचार व्यक्त करता है। विश्व रंगमंच दिवस का पहला मैसेज 1962 में जिन कोक्टयू द्वारा लिखा गया था। यह नाटक पांचवीं शताब्दी के शुरुआती दौर का माना जाता है। वर्ष 2002 में यह संदेश भारत के प्रसिद्ध रंगकर्मी गिरीश कर्नाड को देने का अवसर मिला था।

रंगमंच - रंग और मंच दो शब्दों से मिलकर बना है। रंग किसी भी दृश्य को आकर्षक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दृश्य को आकर्षक बनाने के लिए दीवारों, छतों और पर्दों पर तरह-तरह की चित्रकारी होती है और अभिनेताओं की वेशभूषा तथा साज-सज्जा में भी अलग अलग रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। दर्शकों की सुविधा के लिए रंगमंच का तल फर्श से कुछ ऊंचा उठा रहता है इसलिए इसे मंच कहा जाता है। समूचे भवन को प्रेक्षागृह, रंगशाला, नाट्यशाला या नृत्यशाला कहते हैं। पश्चिम में इसे थिएटर या ऑपेरा नाम दिया गया।

थिएटर न केवल मनोरंजन प्रदान करता है, बल्कि यह एक कला रूप भी होता है जो व्यक्तियों को शिक्षित और प्रेरित करता है। रंगमंच सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाता है, सांस्कृतिक विविधता को प्रोत्साहित करता है और नाटकों के माध्यम से सहानुभूति और समझ को बढ़ावा देता है। यह व्यक्तियों के दृष्टिकोण को चुनौती देने तथा संवाद और चर्चा के लिए एक मंच प्रदान करने में भी सहायता करता है। विश्व रंगमंच दिवस हर साल किसी न किसी थीम पर आधारित होता है। सन् 1599 में विलियम शेक्सपियर ने अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर लन्दन में ग्लोब थिएटर की स्थापना की थी। पाश्चात्य में ग्लोब थिएटर ने रंगमंच को एक विशिष्ट पहचान दिलाई। नाटकों की दुनिया में विलियम शेक्सपियर का नाम आज भी दुनियाभर में सम्मान के साथ लिया जाता है। भारत सहित दुनियाभर के देशों में उनके नाटकों का मंचन अब भी होता है।

बात यदि भारत की हो तो यहां रंगमंच का इतिहास बहुत पुराना है। ऐसा समझा जाता है कि नाट्यकला का विकास सर्वप्रथम भारत में ही हुआ। ऋग्वेद के सूत्रों में यम और यमी, पुरुरवा और उर्वशी आदि के कुछ संवाद हैं। इन संवादों में लोग नाटक का विकास ही मानते हैं। माना जाता है कि इन्हीं संवादों से प्रेरणा लेकर नाटक की रचना हुई और नाट्यकला का विकास हुआ। बाद में भरतमुनि ने उसे शास्त्रीय रूप दिया।

संस्कृत साहित्य में नाट्य ग्रंथ और तत्संबंधी जैसे ढेरों शास्त्रीय ग्रंथ लिखे गए। साहित्य में नाटक लिखने की शुरुआत संस्कृत से होती हुई हिंदी तक पहुंची। संस्कृत नाटक उत्कृष्ट कोटि के हैं और वे अधिकतर अभिनय करने के लिए ही लिखे जाते थे। अभिनीत भी होते थे।

नाट्यकला प्राचीन भारतीयों के जीवन का अभिन्न अंग थी, जिसका उल्लेख संस्कृत तथा पाणी ग्रंथों में किया गया है।

हिंदी रंगमंच संस्कृत नाटक, लोक रंगमंच एवं पारसी रंगमंच की पृष्ठभूमि का आधार लेकर विकसित हुआ है। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में 'नाट्य' शब्द का प्रयोग केवल नाटक के रूप में न करके व्यापक अर्थ में किया है जिसके अंतर्गत रंगमंच, अभिनय, नृत्य, संगीत, रस, वेशभूषा, रंगशिल्प, दर्शक आदि सभी पक्ष आ जाते हैं। हिंदी में अव्यावसायिक रंगमंच का सूत्रपात 1868 ईस्वी में बनारस थिएटर के साथ हुआ। 1884 में बनारस में 'नेशनल थियेटर' की स्थापना हुई। भारतेन्दु के अंधेर नगरी का प्रथम मंचन नेशनल थियेटर में ही किया था। हिंदी रंगमंच के विकास में 'भारतेन्दु नाटक मंडली' (1906) की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। इस मंडली ने लगभग डेढ़ दर्जन नाटकों का मंचन किया जिसमें 'सत्य हरिश्चंद्र', 'सुभद्रा हरण', 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' प्रमुख हैं। इस नाटक मंडली ने भारतेन्दुयुगीन नाटकों के साथ-साथ प्रसाद के नाटकों को भी सफलतापूर्वक मंचित कर हिंदी के अपने स्वतंत्र रंगमंच के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

आगे चलकर काशी हिंदू विश्वविद्यालय की 'विक्रम परिषद' की स्थापना 1939 ईस्वीं में हुई थी। इसने नाटकों में स्त्री पात्र के लिए स्त्रियों द्वारा ही अभिनय की परम्परा डाली इसके पहले तक स्त्री किरदार भी पुरुषों द्वारा किये जाते थे। हिंदी रंगमंच के विकास में काशी के साथ ही प्रयाग के रंगमंचों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहां के महत्वपूर्ण नाट्य मंच 'आर्य नाट्य सभा', 'श्री राम लीला नाटक मंडली' तथा 'हिंदी नाट्य समिति' थे। कानपुर की संस्थाओं ने भी हिंदी रंगमंच को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहां के प्रमुख नाट्य मंच हैं - 'भारत नाट्य समिति' और 'भारतीय कला मंदिर'।

आधुनिक भारतीय नाट्य साहित्य का इतिहास एक शताब्दी से अधिक पुराना नहीं है। नाटक को मुगलकाल में उस प्रकार का प्रोत्साहन नहीं मिला जिस प्रकार का प्रोत्साहन अन्य कलाओं को मुगल शासकों से प्राप्त हुआ था। इस कारण मुगलकाल में भारतीय परंपरा की अभिनयशालाओं अथवा प्रेक्षागारों का अस्तित्व लगभग खत्म हो गया था । परन्तु राम लीला सहित अन्य लोक कलाओं के माध्यम से भारतीय थिएटर जीवित रहा। अंग्रेजों का प्रभुत्व देशभर में फैलने के कारण पाश्चात्य की अनेक वस्तुओं के साथ मनोरंजन का सशक्त साधन पाश्चात्य नाटकों का भी प्रवेश भारत में हुआ। अंग्रेजों ने अपने नाटकों के अभिनय के लिए भारत में अभिनय शालाओं की स्थापना की जो थिएटर के नाम से अधिक प्रसिद्ध हुई। आधुनिक भारतीय रंगमंच ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन औपनिवेशिक शासन के दौरान, 19वीं शताब्दी के मध्य से 20वीं सदी के मध्य तक विकसित हुआ। इस दौरान की भारतीय नाट्यशैली में पाश्चात्यशैली की झलक भी दिखाई देने लगी थी। भारत में संस्कृत शास्त्रीय और पश्चिमी शास्त्रीय नाटकों, विशेषकर शेक्सपियर की रचनाओं के अनुवादित स्वरूप दिखाए जाने लगे थे। अब तक भारतीय भाषाओं में नाटक एक प्रमुख साहित्यिक शैली के रूप में विकसित नहीं हुआ था।

बीसवीं सदी के हिंदी रंगमंच के विकास में भारतेन्दु नाटक मण्डली का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। इस मण्डली ने करीब डेढ़ दर्जन नाटकों का मंचन किया। इंडियन पीपल थिएटर एसोसिशन इप्टा ने भी थियेटर के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इप्टा का जन्म आजादी की लड़ाई और विश्वव्यापी फासीवादी विरोधी आंदोलन से हुआ था। 1960 तक इप्टा द्वारा ढेरों नाटकों का मंचन किया गया। ढेरों प्रसिद्ध साहित्यकार, लेखक, निर्देशक और अभिनेता इप्टा की ही देन हैं। 1944 में पृथ्वीराज कपूर ने पृथ्वी थिएटर की नींव रखी। इसकी स्थापना से रंगमंच को राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान मिली। इप्टा के सहयोग से पृथ्वी थिएटर ने देश भर में नाटक किये। भारत में रंगमंच के विकास को देखते हुए 1959 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की स्थापना की गई। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने हिंदी रंगमंच को नई पहचान और स्थान दिया। हिंदी रंगमंच के विकास में देश के विभिन्न क्षेत्रों ने अपना-अपना योगदान दिया। नुक्कड़ नाटक इन दिनों खूब लोकप्रिय और प्रभावी हो रहे हैं। जैसा कि नाम से स्पष्ट है इन्हें किसी सड़क, नुक्कड़, चौराहे पर बिना किसी साज-सज्जा के किया जाता है। नुक्कड़ नाटक सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लोगों को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। साहित्यिक नाटक भारत के विभिन्न भागों में महान भारतीय भाषा लेखकों द्वारा लिखे गए। ऐसे नाटककारों में से सबसे प्रसिद्ध रवीन्द्रनाथ टैगोर थे, जिन्होंने कविता और उपन्यास के साथ साथ नाटक की शैली को समृद्ध किया था।

रंगमंच के क्षेत्र में आज भी ढेरों सम्भावनाएं हैं। बहुत सी ऐसी संस्थाएं और संस्थान हैं जिन्होंने रंगमंच को अपने पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया है। रंगमंच में रुचि रखने वाले युवा ऐसे संस्थानों में प्रवेश कर न केवल एक्टिंग बल्कि रंगमंच की अन्य विधाएं जैसे लेखन, निर्देशन, साज-सज्जा सहित अन्य चीजें सीख कर इसे कॅरियर के रूप में अपना सकते हैं। विभिन संस्थान रंगमंच में तीन वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाती हैं। इस क्षेत्र में ग्रेजुएशन के साथ साथ स्नातकोत्तर डिग्री भी मिलती है।

विश्व रंगमंच दिवस जंहा हर साल 27 मार्च को मनाया जाता है वहीं हिंदी रंगमंच दिवस प्रतिवर्ष 3 अप्रैल को मनाया जाता है। हमारे पास आज मनोरंजन के बहुत सारे विकल्प हैं, रंगमंच भले ही अब धीरे-धीरे अपनी लोकप्रियता खो रहा हो, लेकिन यह रंगमंच आज भी समाज के लिए एक मजबूत स्तंभ है। रंगमंच पर जब समाज की दशा को जीवंत किया जाता है तो दर्शक उसके साथ आसानी से जुड़ जाते हैं। रंगमंच समाज का आइना ही नहीं, बल्कि परिवर्तन का सशक्त माध्यम भी है।

वीणा सबलोक पाठक

(लेखिका : वरिष्ठ पत्रकार और स्तम्भकार हैं।)

देश की अठारहवीं लोकसभा के गठन की तैयारी

लगभग 97 करोड़ मतदाता चुनेंगे अपनी पसंद की सरकार, 4 जून को परिणाम

लोकसभा चुनाव की घोषणा हो गई है। देश की अठारहवीं लोकसभा के गठन के लिये कुल सात चरणों में वोट डाले जायेंगे और चार जून को परिणाम आयेंगे।

संसार में मुख्यतया तीन प्रकार की शासन पद्धतियां हैं। कुछ देशों में राजतंत्र है। इन देशों में सत्ता प्रमुख राजा होता है। थाईलैंड, सऊदी अरब आदि देशों में राजतंत्र है। कुछ देशों में एकतंत्र होता है। ऐसे देशों में एक ही पार्टी का प्रभुत्व होता है। इनमें उत्तर कोरिया, चीन आदि देश माने जाते हैं। और तीसरी शासन प्रणाली लोकतांत्रिक होती है। जिसमें जन सामान्य अपनी पसंद की सरकार बनाता है। सरकार बनाने की यह प्रक्रिया आम चुनाव से होती है। इसमें अमेरिका, भारत जैसे देश हैं। अंतर केवल इतना है कि अमेरिका जैसे लोकतांत्रिक देश में राष्ट्रपति के पास सर्वाधिक अधिकार होते हैं और जनता सीधे राष्ट्रपति का चयन करती है। जबकि भारत में जनता पहले अपना संसदीय प्रतिनिधि चुनती है और ये प्रतिनिधि मिलकर सदन का नेता अर्थात् प्रधानमंत्री का चयन करते हैं। प्रशासनिक अधिकार प्रधानमंत्री के पास अधिक होते हैं। भारत संसार में सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और यहां की शासन प्रणाली सर्वाधिक पारदर्शी मानी जाती है। भारत में सरकार के गठन के लिय सभी वयस्क नागरिक मतदान करते हैं।

मतदाता और मतदान की तैयारी

लोकतंत्र में मतदान की प्रक्रिया मतदाता सूची की तैयारी से होती है। भारत में अठारह वर्ष या इससे अधिक आयु के नागरिक को मताधिकार प्राप्त हो जाता है। इस लोकसभा चुनाव में कुल 96.8 करोड़ मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इसमें 49.7 करोड़ पुरुष मतदाता और 47.1 करोड़ महिला मतदाता होंगे। 1.82 करोड़ ऐसे नये युवा मतदाता हैं जो पहली बार वोट करेंगे।

मतदान प्रबंध के लिये लगभग डेढ़ करोड़ कर्मचारी तैनात रहेंगे। कुल 10.5 लाख मतदान केन्द्र बनाये जायेंगे और 55 लाख से अधिक इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनें तैनात होंगी।

यही नहीं इस बार एक ऐसा एप भी तैयार किया गया है जिसके माध्यम से मतदाता अपने उम्मीदवार के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। 85 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को उनके घर से ही मतदान करने की सुविधा मिलेगी।

चुनाव आयोग द्वारा निर्वाचन की घोषणा

चुनाव आयोग द्वारा घोषित चुनाव कार्यक्रम के अनुसार कुल 543 संसदीय क्षेत्रों में निर्वाचन होगा। चुनाव आयोग ने इन सभी लोकसभा सीटों पर चुनाव कार्यक्रम की घोषणा कर दी है। चुनाव निष्पक्ष हों आदर्श प्रक्रिया से हों इसके लिये आदर्श चुनाव आचार संहिता भी लागू हो गई है।

देश में लोकसभा चुनावों के साथ कुछ विधानसभा चुनाव भी होंगे। ये वे राज्य हैं जिनका कार्यकाल पूरा हो गया है। इनमें ओडिशा, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और आंध्रप्रदेश राज्य हैं। जबकि कुछ राज्यों के विधानसभा क्षेत्र रिक्त हैं। देश भर के विभिन्न राज्यों में ऐसे रिक्त स्थानों की संख्या 26 है। लोकसभा चुनाव के साथ विधानसभाओं के इन रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिय उपचुनाव भी होंगे। ओडिशा विधानसभा चुनाव चार चरणों में और अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम एवं आंध्रप्रदेश विधानसभाओं के चुनाव एक ही चरण में पूरे हो जायेंगे।

तकनीकी रूप से निर्वाचन प्रक्रिया का पहला दिन वह माना जाता है जो तिथि मतदान के पहले चरण की होती है। लेकिन चुनाव अवधि वह पूरा कालखंड होता है, जो आदर्श आचार संहिता की अवधि होती है। आचार संहिता 16 मार्च से लागू हो गई है, जो चुनाव प्रक्रिया पूर्ण होने तक जारी रहेगी। चुनाव आयोग की इस घोषणा और आचार संहिता के लागू होने के साथ ही निर्वाचन प्रक्रिया की अनौपचारिक शुरुआत हो जाती है। भारत की पहली निर्वाचित लोकसभा 17 अप्रैल, 1952 को अस्तित्व में आई थी। इस पहली लोकसभा के गठन के लिए आम चुनाव 25 अक्टूबर, 1951 से आरंभ होकर 21 फरवरी, 1952 तक चले। पहली लोकसभा के निर्वाचन के समय देश में मतदाताओं की संख्या 17 करोड़ से अधिक थी। इस प्रकार पहली लोकसभा के गठन की तुलना में इस अठारहवीं लोकसभा के गठन में करीब अस्सी करोड़ अधिक मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे।

कुल सात चरणों की प्रक्रिया

भारत की अठारहवीं लोकसभा के गठन के लिये होने वाले यह चुनाव कुल सात चरणों में होंगे। पहले चरण के मतदान की तिथि 19 अप्रैल है और अंतिम चरण का मतदान एक जून को। चार जून को मतगणना की जाएगी।

19 अप्रैल को पहले चरण में 21 विभिन्न प्रदेशों के 102 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान होगा। इनमें 10 राज्य ऐसे हैं जिनके अंतर्गत आने वाले सभी लोकसभा क्षेत्रों में मतदान हो जायेगा। 26 अप्रैल को दूसरे चरण में 13 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की कुल 89 सीटों पर मतदान होगा। तीसरे चरण 7 मई को 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 94 सीटों पर मतदान होगा। चौथे चरण 13 मई को 10 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 96 सीटों पर मतदान होगा। पांचवें चरण 20 मई को 8 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 49 सीटों पर वोटिंग होगी। छठे चरण 25 मई को 7 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों की 57 सीटों पर मतदान होगा। अंतिम और सातवें चरण में 1 जून को 8 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों की 57 सीटों पर मतदान होगा।

आदर्श आचार संहिता

चुनाव बिना किसी लालच, प्रभाव अथवा तनाव रहित निष्पक्ष हों, इसके लिये आदर्श आचार संहिता लागू होती है। भारतीय चुनाव आयोग द्वारा 16 मार्च को निर्वाचन प्रक्रिया की घोषणा के साथ आदर्श आचरण संहिता लागू हो गई है। निष्पक्ष निर्वाचन के लिये आदर्श आचार संहिता के नियम 1960 में बनाये गये थे और सबसे पहले केरल प्रांत में हुए विधानसभा चुनाव में लागू हुए थे। चुनाव आयोग ने लोकसभा निर्वाचन में पहली बार 1962 में आचार संहिता लागू की। इस संहिता को 1974, 1979, 1991, 2013 में संशोधित किया गया।

आदर्श चुनाव आचार संहिता के अंतर्गत राजनैतिक दलों के कार्यकर्ताओं पर कुछ काम करने पर रोक लग जाती है। वे कुछ इस प्रकार हैं-

1. चुनाव की घोषणा होने के साथ ही मंत्रियों और अन्य अधिकारियों को किसी भी वित्तीय अनुदान की घोषणा करने या उसके वादे करने से रोक लग जाती है।
2. सरकार से जुड़े किसी भी व्यक्ति पर शिलान्यास करने या किसी भी प्रकार की परियोजनाओं या योजनाओं का कार्य आरंभ करने पर रोक लग जाती है। ऐसे कार्यों में सड़कों के निर्माण, पेयजल सुविधाओं के प्रावधान आदि से संबंधित वादे भी नहीं किए जा सकते हैं।
3. बिना चुनाव आयोग की अनुमति से कोई भी सरकार किसी अधिकारी या कर्मचारी का ट्रांसफर या पोस्टिंग नहीं कर सकती।
4. चुनाव आयोग राज्य और केंद्र सरकार के अधिकारियों और कर्मचारियों की ड्यूटी चुनाव प्रक्रिया में लगा सकता है और चुनाव प्रक्रिया पूरी होने तक चुनाव आयोग के कर्मचारी की तरह काम करेंगे।
5. आचार संहिता के दौरान शासकीय धन, संपत्ति या साधनों का उपयोग विज्ञापन या जनसंपर्क करने के लिए नहीं किया जा सकता। अगर पहले से ही ऐसे विज्ञापन चल रहे हों तो उन्हें हटा लिया जाएगा।
6. किसी भी तरह की कोई नई योजना, निर्माण कार्य, उद्घाटन या शिलान्यास नहीं किया जा सकता। लेकिन यदि कोई कार्य पहले आरंभ हो गया है तो वो जारी रह सकता है।
7. यदि कोई आकस्मिक आपदा जैसे आंधी, तूफान, भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदा या कोई रोग महामारी आये तब सरकार चुनाव आयोग की अनुमति लेकर राहत या सहायता कार्य कर सकती है।
8. सरकारी विमान, वाहन, मशीनरी और कर्मियों सहित सरकारी परिवहन का उपयोग सत्तारूढ़ दल के हितों को आगे बढ़ाने के लिए नहीं किया जा सकता है।
9. चुनावी बैठकें आयोजित करने के लिए मैदान और फ्लाइट्स के लिए हेलीपैड जैसे सार्वजनिक स्थान समान नियमों और शर्तों पर सभी दलों और उम्मीदवारों के लिए सुलभ होने चाहिए।
10. चुनाव के प्रचार-प्रसार का कार्य मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा अथवा किसी धार्मिक स्थल से नहीं हो सकता।
11. चुनाव प्रचार के लिए राजनीतिक दल जिन वाहनों का उपयोग करेंगे उसकी अनुमति चुनाव आयोग से लेनी होगी। इसमें दो पहिया वाहन भी शामिल हैं।
12. बिना अनुमति लिये कोई सभा नहीं हो सकती। यदि किसी राजनैतिक दल या प्रत्याशी को रैली या जुलूस निकालना है, सभा करनी है तो स्थानीय प्रशासन और पुलिस से इसकी अनुमति लेनी होगी।
13. रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक डीजे का इस्तेमाल नहीं हो सकता। अगर कोई रैली भी होनी है, तो सुबह 6 बजे से रात 10 बजे के बीच ही हो सकेगी।
14. राजनैतिक दल या उम्मीदवार चुनाव के दौरान प्रचार के लिय विश्राम गृहों, डाक बंगलों और अन्य सरकारी आवासों अथवा भवनों का उपयोग नहीं कर सकेंगे।
15. कोई राजनीतिक दल या उम्मीदवार चुनाव प्रचार के दौरान ऐसी कोई बात नहीं करेगा जिससे सामाजिक या धार्मिक सहिष्णुता प्रभावित हो, परस्पर दूरियां बढ़ें अथवा सामाजिक, धार्मिक या साम्प्रदायिक विद्वेष फैले।

मतदान के दौरान सामान्य सावधानी

एक ओर जहां चुनाव प्रचार के दौरान आदर्श नागरिक आचार संहिता के माध्यम से कुछ अधिकार सीमित किये जाते हैं उसी प्रकार मतदान प्रक्रिया में निर्वाचन आयोग सहयोग की अपेक्षा करता है।

1. शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित मतदान सुनिश्चित करने और वोटर्स को बिना किसी परेशानी या बाधा के अपने मताधिकार का प्रयोग करने की पूरी आजादी सुनिश्चित करने के लिए चुनाव ड्यूटी पर तैनात अधिकारियों के साथ सहयोग की अपेक्षा की जाती है।
2. मतदान के दिन और उससे पहले शराब परोसने या वितरित करने पर रोक लगा दी जाती है।

मतदान केंद्रों के पास राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों द्वारा लगाए गए शिविरों के पास गैर-जरूरी भीड़ जमा करने पर रोक लगा दी जाती है।

आचार संहिता के उल्लंघन पर ..

- अगर कोई भी प्रत्याशी आचार संहिता का उल्लंघन करता है, तो उसके प्रचार करने पर रोक लगाई जा सकती है।

आचार संहिता का उल्लंघन करने पर प्रत्याशी के खिलाफ आपराधिक मुकदमा दर्ज किया जा सकता है। इसमें जेल का भी प्रावधान है।

- चुनाव आयोग के पास 1968 के चुनाव चिह्न (आरक्षण और आवंटन) आदेश के पैराग्राफ 16ए के तहत किसी पार्टी की मान्यता को निलंबित करने या वापस लेने का अधिकार है।

- रमेश शर्मा

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार हैं)

लोकसभा निर्वाचन

आदर्श आचार संहिता से संबंधित जानकारी

चुनाव आयोग ने लोकसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान कर दिया है। चुनाव आयोग की घोषणा के साथ ही देशभर में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है। आपकी जिज्ञासा होगी कि आदर्श आचार संहिता आखिर क्या होती है, इसे कौन लागू करता है और इस दौरान क्या प्रतिबंधित होता है और क्या नहीं? प्रतिबंध तोड़े जाने पर सजा का क्या प्रावधान है। इस संबंध में प्रस्तुत है विस्तृत विवरण।

आदर्श आचार संहिता चुनाव आयोग के बनाए नियम

चुनाव आयोग ने देश में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव करवाने के लिए कुछ नियम बनाए हैं। इन्हीं नियमों को आदर्श चुनाव आचार संहिता कहा जाता है। लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव और उप चुनावों के दौरान इन नियमों का पालन करना राजनेताओं और राजनीतिक दलों के लिए आवश्यक होता है।

भारतीय चुनाव आयोग संविधान के आदर्श आचार संहिता के प्रावधानों का उपयोग करते हुए संसद और राज्य विधानसभाओं के लिए स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण निर्वाचन करवाने के उद्देश्य से केंद्र और राज्यों में सत्तारूढ़ दलों, विपक्षी राजनीतिक दलों और चुनाव में नामांकन करने वाले उम्मीदवारों से पालन सुनिश्चित करता है। यह निर्वाचन आयोग का कर्तव्य है कि वह निर्वाचन के उद्देश्य से अधिकारी तंत्र का दुरुपयोग न होना सुनिश्चित करे। आचार संहिता लागू होते ही सरकारी कर्मचारी चुनाव प्रक्रिया पूरी होने तक निर्वाचन आयोग के कर्मचारी बन जाते हैं। आचार संहिता सभी राजनीतिक दलों की सहमति से लागू एक चुनाव करवाने की प्रशासन प्रणाली है।

आचार संहिता की शुरुआत कब हुई?

आदर्श आचार संहिता की शुरुआत सबसे पहले फरवरी 1960 में केरल विधानसभा चुनाव में हुई थी, जिसमें बताया गया कि उम्मीदवार क्या कर सकता है और क्या नहीं। चुनाव आयोग ने 1962 के लोकसभा चुनाव में पहली बार इसके बारे में सभी राजनीतिक दलों को अवगत कराया था। 1967 के लोकसभा और विधानसभा चुनावों से आचार संहिता की व्यवस्था लागू हुई। तब से अब तक नियमित इसका पालन हो रहा है। हालांकि समय-समय पर इसके दिशा-निर्देशों में बदलाव होता रहा है।

चुनाव प्रक्रिया के प्रारंभ से पूर्ण होने तक प्रभावी रहती है आचार संहिता

चुनाव आयोग जब चुनाव का कार्यक्रम घोषित करता है, ठीक उसी क्षण से आचार संहिता लागू हो जाती है। वर्तमान आचार संहिता 16 मार्च, 2024 से लागू हो चुकी है। आचार संहिता चुनावी प्रक्रिया पूरी होने तक लागू रहेगी। चुनाव प्रक्रिया पूरी होते ही आचार संहिता समाप्त हो जायेगी।

राजनेता, अधिकारी और आम नागरिक, सभी पर लागू आचार संहिता

आदर्श आचार संहिता मात्र राजनेताओं, राजनीतिक दलों, प्रशासनिक अधिकारियों ही नहीं किसी भी आम नागरिक पर भी लागू होती है। इन नियमों का उल्लंघन करने पर सबके विरुद्ध आचार संहिता उल्लंघन की कार्रवाई की जा सकती है। उदाहरण के लिए यदि कोई किसी नेता के प्रचार में संलग्न है तब भी इन नियमों के प्रति जागरूक रहना होगा। कोई राजनेता आपको इन नियमों के विरुद्ध कार्य करने के लिए कहता है तो आप उसे आचार संहिता की जानकारी देकर ऐसा करने से मना कर सकते हैं, क्योंकि उल्लंघन पाए जाने पर कार्रवाई तत्काल होती है, आपको हिरासत में भी लिया जा सकता है।

सरकार नहीं कर सकती स्थानांतरण या पद-स्थापना

आचार संहिता लागू होने के बाद किसी भी सरकारी अधिकारी, कर्मचारी का स्थानांतरण या पद-स्थापना सरकार नहीं कर सकती है। बहुत जरूरी हो गया हो तब सरकार अथवा प्रशासन को इसके लिए चुनाव आयोग की सहमति लेनी होगी। इस दौरान राज्य के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी आवश्यकता के अनुरूप निर्णय ले सकते हैं।

रैली, जुलूस जैसे सार्वजनिक आयोजनों के लिए पुलिस को देनी होगी जानकारी

राजनीतिक दलों को जुलूस, रैली या सभा के लिए पूर्व अनुमित लेनी होती है। इसकी जानकारी प्रत्याशी को पास के पुलिस थाने में भी देनी होती है। जनसभा और स्थान की जानकारी पुलिस अधिकारियों को देना आवश्यक होता है।

आचार संहिता के उल्लंघन पर हो सकती है सजा

चुनाव आचार संहिता लागू होने के बाद लागू नियमों का उल्लंघन कोई भी राजनेता या राजनीतिक दल नहीं कर सकता है। चुनाव आयोग को प्रशासन के साथ मिलकर यह भी सुनिश्चित करना होता है कि निर्वाचन के दौरान अपराध, कदाचार, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, मतदाताओं को प्रलोभन, मतदाताओं को धमकाना और भयभीत करने जैसी गतिविधियां नहीं हों। इनके उल्लंघन के मामले में उचित कार्रवाई की जाये, कोई व्यक्ति या राजनीतिक दल नियमों का उल्लंघन करे तो चुनाव आयोग उसके विरुद्ध कार्रवाई कर सकता है। प्रत्याशी को चुनाव लड़ने से रोका भी जा सकता है, साथ ही उसके विरुद्ध एफआईआर भी की जा सकती है।

आचार संहिता लागू होने से पहले के कार्यों पर भी कार्रवाई संभव

उदाहरण के लिए चुनाव आयोग के सामने 2010 में शिकायत आई थी कि किसी पार्टी ने सरकारी पैसे से अपने चुनाव चिह्न की प्रतिमाएं बनवाकर आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन किया है। इस शिकायत पर चुनाव आयोग ने कहा कि आचार संहिता की समय-सीमा से बाहर किसी भी राजनीतिक दल की ओर से सरकारी शक्ति और तंत्र के कथित उपयोग पर कार्रवाई नहीं कर सकते हैं। आयोग के इस रुख को कोर्ट में चुनौती दी गई। न्यायालय ने निर्देश दिये थे कि चुनाव आयोग को इस तरह की परिस्थितियों में निर्णय लेना चाहिए।

चुनावी खर्च का विवरण नहीं देने पर तीन साल के लिए अयोग्य घोषित

चुनावी खर्च में वो राशि शामिल है जो एक उम्मीदवार चुनाव अभियान के दौरान कानूनी रूप से खर्च करता है। इसमें सार्वजनिक बैठकों, रैलियों, पोस्टर, बैनर, वाहनों और विज्ञापनों पर खर्च शामिल होता है। जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 77 के तहत प्रत्येक उम्मीदवार को नामांकन से परिणाम घोषित होने की तिथि तक किए गए सभी व्ययों का अलग और सही विवरण रखना पड़ता है। चुनाव संपन्न होने के 30 दिनों के अंदर उम्मीदवारों को चुनाव आयोग के समक्ष अपना व्यय विवरण प्रस्तुत करना होता है। यदि किसी ने गलत विवरण प्रस्तुत किया तो अधिनियम की धारा 10 के तहत चुनाव आयोग उसे तीन साल के लिए अयोग्य घोषित कर सकता है।

पूर्व से जारी प्रक्रिया पर नहीं होता प्रतिबंध?

आचार संहिता लगने से पहले जिस सरकारी योजना या प्रक्रिया पर काम शुरू हो गया है। वह आचार संहिता लागू होने के बावजूद जारी रहती है। जिन नई योजनाओं को मंजूरी मिल चुकी है और उसके लिए राशि भी स्वीकृत हो चुकी हो तो वो भी चलती रहेंगी। ड्राइविंग लाइसेंस, जाति एवं निवास प्रमाण-पत्र, जमीन तथा संपत्तियों का पंजीकरण आदि कार्य आचार संहिता के दौरान भी जारी रहते हैं।

आचार संहिता के दौरान इन पर होता है प्रतिबंध

- आचार संहिता लागू होने पर सरकार नई योजनाओं और किसी प्रकार की नई घोषणाएं नहीं कर सकती। भूमिपूजन और लोकार्पण भी नहीं किये जा सकते।
- चुनाव प्रचार के लिए सरकारी संसाधनों का इस्तेमाल जैसे सरकारी गाड़ी, बंगला, हवाई जहाज का उपयोग वर्जित होता है।
- राजनीतिक दलों को रैली, जुलूस अथवा चुनावी बैठक एवं सभा लिए पूर्व अनुमति लेनी होती है।
- धार्मिक स्थलों और प्रतीकों का इस्तेमाल चुनाव प्रचार के दौरान नहीं किया जा सकता।
- मतदाताओं को किसी भी तरह से रिश्वत का प्रलोभन नहीं दिया जा सकता है।
- आचार संहिता लागू होते ही दीवारों पर लिखे गए शासन संबंधी नारे, होर्डिंग, बैनर और पोस्टर समेत सभी प्रकार की प्रचार सामग्री हटानी पड़ती है।
- मतदान केंद्रों पर वोटरों को लाने के लिए वाहन उपलब्ध नहीं कराए जा सकते हैं।
- मतदाता को लुभाने के लिए शराब या साड़ी जैसी उपभोक्ता सामग्री वितरित नहीं की जा सकती है।
- चुनाव कार्यों से जुड़े किसी भी अधिकारी को किसी भी राजनेता या मंत्री या दूसरे जनप्रतिनिधियों से उसकी निजी यात्रा या आवास में मिलने पर प्रतिबंध होता है।
- किसी भी प्रत्याशी या पार्टी पर व्यक्तिगत हमले नहीं किए जा सकते हैं।
- किसी भी चुनावी रैली में धर्म या जाति के नाम पर वोट नहीं मांगे जा सकते।
- आदर्श आचार संहिता लगने के बाद पेंशन फॉर्म जमा नहीं हो सकते और नए राशन कार्ड भी नहीं बनाए जा सकते।
- विधायक, सांसद या विधान परिषद के सदस्य स्थानीय विकास निधि से नई राशि जारी नहीं कर सकते हैं।
- सरकारी खर्चे पर किसी नेता के आवास पर रोज़ा इफ्तार-सेहरी पार्टी या इसी तरह के अन्य धार्मिक आयोजन नहीं कराए जा सकते हैं।
- कोई भी नया सरकारी काम शुरू नहीं होगा। किसी नए काम के लिए टेंडर भी जारी नहीं होंगे।
- आदर्श आचार संहिता लगने के बाद बड़े भवनों की परियोजनाओं को अनापत्ति नहीं दी जा सकती है।
- मतदान के दिन मतदान केंद्र से सौ मीटर के दायरे में चुनाव प्रचार पर रोक लागू रहती है और मतदान से एक दिन पूर्व किसी भी बैठक पर रोक लागू रहती है।
- हथियार रखने के लिए नया आर्म्स लाइसेंस नहीं बनेगा। इसी तरह बीपीएल या किसी भी सरकारी लाभकारी योजना के कार्ड्स नहीं बनाए जा सकते।
- मंत्री अपने आधिकारिक दौरे को निर्वाचन प्रचार के साथ नहीं मिला सकते हैं।
- कोई भी केंद्रीय मंत्री या राज्य सरकार का मंत्री निर्वाचन अवधि के दौरान किसी आधिकारिक चर्चा के लिए किसी राज्य या निर्वाचन क्षेत्र के निर्वाचन संबंधी अधिकारी को नहीं बुला सकता है।
- कोई अधिकारी निर्वाचन अवधि के दौरान मंत्री या राजनीतिक जनप्रतिनिधि एवं पदाधिकारी से नहीं मिल सकते हैं, ऐसा करने पर अधिकारी संगत सेवा नियमों के अधीन कदाचार के दोषी होंगे और यदि वह लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 129(1) में उल्लेखित पदाधिकारी हैं तो उन्हें उस धारा के सांविधिक उपबंधों का उल्लंघन करने का अतिरिक्त दोषी माना जाएगा। उनके विरुद्ध तत्संबंधी दंडात्मक कार्रवाई भी की जा सकती है।
- अपवाद स्वरूप यदि कोई मंत्री संबंधित विभाग के प्रभारी होने के नाते या कोई मुख्यमंत्री कानून एवं व्यवस्था के असफल हो जाने या प्राकृतिक आपदा या किसी आपातकाल में ऐसे किसी निर्वाचन क्षेत्र का आधिकारिक दौरा करते हैं जहां अधीक्षण, मदद, राहत आदि की जरूरत हो तो इसी प्रकार के विशेष प्रयोजन के लिए ऐसा कर सकते हैं।
- मंत्री या किसी अन्य राजनीतिक कार्यकर्ता को निर्वाचन अवधि के दौरान निजी या आधिकारिक दौरे पर किसी पायलट कार या किसी रंग की बीकन लाइट अथवा किसी भी प्रकार के सायरन सहित वाहन का प्रयोग करने की अनुमति नहीं होगी, भले ही राज्य प्रशासन ने उसे सुरक्षा कवर दिया हो। यह प्रतिबंध सरकारी व निजी स्वामित्व वाले दोनों प्रकार के वाहनों पर लागू होगा।
- निर्वाचन अवधि के दौरान प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सरकारी कोष की लागत पर पार्टी की उपलब्धियों के संबंध में विज्ञापन और सरकारी संपर्क तथा मीडिया का दुरुपयोग प्रतिबंधित है।
- धार्मिक स्थान जैसे मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा अथवा पूजा के अन्य स्थानों का चुनाव प्रचार के मंच के रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त, मत प्राप्त करने के लिए जाति या सांप्रदायिक भावनाओं के आधार पर कोई अपील नहीं की जाएगी।
- रिटर्निंग अधिकारी के कार्यालय की परिधि में आने वाले वाहनों की अधिकतम संख्या को तीन तक और रिटर्निंग अधिकारी के कार्यालय में जाने वाले व्यक्तियों की अधिकतम संख्या को प्रत्याशी समेत पांच तक सीमित रखा गया है।
- चुनाव प्रचार के लिए प्रत्याशी कितने भी वाहन, टू-व्हीलर समेत सभी यांत्रिकीय और मोटरयुक्त वाहन चला सकता है, किंतु इसके लिए उसे रिटर्निंग अधिकारी द्वारा जारी अनुमति पत्र की मूल प्रति साथ रखनी होगी और जांच के दौरान मांगे जाने पर प्रस्तुत करनी होगी।
- आचार संहिता के दौरान रात 10.00 बजे से प्रात: 6.00 बजे के बीच लाउडस्पीकर का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है।
- जन सभाएं सुबह 6.00 बजे से पहले और शाम 10 बजे के बाद आयोजित नहीं की जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त, मतदान के 48 घंटे पहले चुनाव प्रचार बंद करना होता है। जनसभाएं और जुलूस नहीं निकाल सकते।
- प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक अथवा किसी अन्य मीडिया द्वारा किसी भी जनमत सर्वेक्षण या एक्जिट पोल के परिणाम को प्रकाशित, प्रचारित या प्रसारित नहीं किया जा सकता।

(संपादकीय टीम द्वारा संकलित)

जॉब अलर्ट

उत्तराखंड लोक सेवा आयोग

पद का नाम - डिप्टी कलेक्टर, पुलिस उपाधीक्षक, जिला कमांडेंट होमगार्ड, सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी, कार्य अधिकारी, जिला ग्रामोद्योग अधिकारी, परिवीक्षा अधिकारी, उप शिक्षा अधिकारी/कर्मचारी अधिकारी/विधि अधिकारी, प्रोबेशन ऑफिसर, वित्त अधिकारी/कोषागार अधिकारी, सहायक आयुक्त राज्य कर, राज्य कर अधिकारी, सहायक नगर आयुक्त/कार्यकारी अधिकारी
पदों की संख्या - 189
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 03 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://psc.uk.gov.in/

महाराष्ट्र राज्य पुलिस विभाग

पद का नाम - पुलिस कांस्टेबल, एसआरपीएफ, जेल कॉन्स्टेबल
पदों की संख्या - 17471
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 31 मार्च 2024
वेबसाइट - https://www.mahapolice.gov.in/

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास

पद का नाम - अधीक्षण अभियंता, कनिष्ठ तकनीशियन
पदों की संख्या - 41
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 02 अप्रैल 2024
वेबसाइट - https://www.iitm.ac.in/

भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला

पद का नाम - सहायक, कनिष्ठ वैयक्तिक सहायक
पदों की संख्या - 16
योग्यता - कंप्यूटर के उपयोग में प्रवीणता, किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय द्वारा 60% अंकों के साथ स्नातक, कनिष्ठ वैयक्तिक सहायक के लिए अंग्रेजी आशुलिपि में 60 शब्द प्रति मिनट की न्यूनतम गति
अंतिम तिथि - 31 मार्च 2024
वेबसाइट - https://www.prl.res.in/prl-eng/

बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय

पद का नाम - सहायक प्रोफेसर (पशु चिकित्सा फिजियोलॉजी और जैव रसायन, पशुधन उत्पादन प्रबंधन, पशु चिकित्सा रोग विज्ञान, पशु चिकित्सा माइक्रोबायोलॉजी), एसोसिएट प्रोफेसर (पशु चिकित्सा फिजियोलॉजी और जैव रसायन, पशु चिकित्सा शरीर रचना विज्ञान, पशुधन उत्पादन प्रबंधन), प्रोफेसर (पशुधन उत्पादन प्रबंधन, पशु चिकित्सा सूक्ष्म जीव विज्ञान, पशु चिकित्सा रोग विज्ञान, पशु आनुवांशिकी एवं प्रजनन, पशु पोषण)
पदों की संख्या - 11
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 30 मार्च 2024
वेबसाइट - https://buat.edu.in/

फ्लूइड कंट्रोल रिसर्च इंस्टीट्यूट

पद का नाम - अनुसंधान अभियंता
पदों की संख्या - 03
योग्यता - विशिष्ट क्षेत्रों में 5 वर्ष के अनुभव के साथ मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीई/बीटेक या विशिष्ट क्षेत्रों में 3 वर्ष के अनुभव के साथ इंजीनियरिंग में एमई/एमटेक और मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीई/बीटेक
अंतिम तिथि - 31 मार्च 2024
वेबसाइट - https://www.fcriindia.com/

हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय

पद का नाम – डायरेक्टर, डिप्टी डायरेक्टर, असिस्टेंट डायरेक्टर, ड्राइवर
पदों की संख्या - 10
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 30 मार्च 2024
वेबसाइट- https://hnbgunt.samarth.edu.in

राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, कुंडली

पद का नाम – प्राध्यापक, सह-प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक
पदों की संख्या - 14
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 31 मार्च 2024
वेबसाइट – www.niftem.ac.in

अंतर विश्वविद्यालय त्वरक केंद्र

पद का नाम – वैज्ञानिक-सी, अभियंता-सी, कनिष्ठ अभियंता-सी, तकनीशियन-डी
पदों की संख्या - 15
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 31 मार्च 2024
वेबसाइट – https://www.iuac.res.in/

रक्षा सेवा स्टाफ महाविद्यालय

पद का नाम - विविध कार्य कर्मचारी (एमटीएस) - कार्यालय एवं प्रशिक्षण
पदों की संख्या - 06
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 30 मार्च 2024
वेबसाइट- https://www.dssc.gov.in/

एडमिशन अलर्ट

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास

पाठ्यक्रम का नाम - एमएस (अनुसंधान) और पीएच.डी. (नियमित/अंशकालिक/बाहरी योजनाओं के कार्यक्रम के तहत)
योग्यता - पदानुसार
अंतिम तिथि - 31 मार्च 2024 (जुलाई 2024 प्रवेश सत्र के लिए)
वेबसाइट - https://research.iitm.ac.in/

इंस्टीट्यूट ऑफ एग्री बिजनेस मैनेजमेंट

पाठ्यक्रम का नाम - कृषि व्यवसाय प्रबंधन में एमबीए और पीएच.डी.
योग्यता - पाठ्यक्रमानुसार
अंतिम तिथि - 31 मार्च 2024
वेबसाइट - www.iabmbikaner.org

स्कॉलरशिप

केसी महिंद्रा स्कॉलरशिप

किनके लिए - ऐसे छात्र जो ग्रेजुएशन के बाद पोस्ट ग्रेजुएशन के लिए विदेश जाना चाहते हैं।
योग्यता - प्रथम श्रेणी से ग्रेजुएशन या समान मानक का समकक्ष डिप्लोमा होना चाहिए।
क्या मिलेगा - चयनित उम्मीदवारों में तीन टॉपर्स को अधिकतम 10 लाख रुपए और शेष सफल आवेदकों को अधिकतम 5 लाख रुपए की स्कॉलरशिप दी जाएगी।
अंतिम तिथि - 31 मार्च 2024
वेबसाइट - https://www.kcmet.org/what-we-do-Scholarship-Grants.aspx

(स्रोत : संपादकीय टीम द्वारा संकलित)

जल संरक्षण

विश्व प्राचीन ग्रंथ वेद में जल का महत्व

विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद, जो पाँच हजार वर्ष पूर्व के माने गये हैं, इसमें जल को देवता के रूप में मानते हुए प्रार्थना की गई है और यज्ञ की आहुति ग्रहण करने के लिए उनका आह्वान किया गया है। वेदों में इन्द्र, अग्नि, वायु, पृथ्वी एवं वरुण के साथ ही जल की स्तुति में हजारों ऋचाएँ हैं।
ऋग्वेद में जल को पालनकर्ता कहा गया है तथा यज्ञ की आहुति अर्पित की गई है। जीवन की रक्षा करने वाले देव के रूप में जल की प्रार्थना इस प्रकार की गई है -

समुद्र ज्येष्ठा सलिलस्य मध्यात पुनाना यन्त्यनिविशमाना:।
इन्द्रा या वज्री वृषभो ररद ता आपो देवीरिह मामवन्तु।।

(ऋग्वेद 7:49:1)

अर्थात् जिन जलों से समुद्र का विस्तार है, वह जल प्रवाहयुक्त है। जल देवता अन्तरिक्ष से आते हैं। इन्द्र ने जिन्हें मुक्त किया वे जल हमारे रक्षक हों। जल सभी का प्राणतत्व है, उसका उद्गम स्थल जो भी हो वे वंदनीय है। ऋषि गण प्रार्थना में कहते हैं -

या आपोदिव्य उत वा स्रवन्ति खनित्रिया उत वा या: स्वयंजा:।।
समुद्रार्था या: शुचय: पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।।

(ऋग्वेद 7:49:2)

अर्थ है, कि अन्तरिक्ष में उत्पन्न होने वाले जल, नदी में प्रवाहित या कूप रूप में खोदकर निकाले गये जल और समुद्र की ओर जाते हुए जल यह सब हमारे रक्षक हों। जलों के स्वामी वरुण यमलोक में विचरण करते हैं और वे प्रकाशयुक्त रस से सम्पन्न हैं, ऐसा जल हमारी रक्षा करे। जल में - देवों का निवास है -

'यासु राजा वरुणो या सोमो विश्वेदेवा यासूर्ज मदन्ति।
वैश्वानरो यास्वाग्नि: प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।।

अर्थात् जिन जलों में वरुण और सोम निवास करते हैं उनसे और अन्न से विश्वेदेवा प्रसन्न होते हैं और जिनमें वैश्वनार अग्नि का निवास है, वे जल हमारे रक्षक हों।
वेदों में जल प्रवाहिनी नदियों की महिमा का बखान किया गया है। ऋग्वेद के मंडल दो सूक्त अट्ठाईस की ऋचा चार में ऋषि कहते हैं कि 'विश्व को धारण करने वाले अदिति-वरुण जल की रचना करते हैं और उन्हीं की महिमा से नदियाँ बहती हैं। ये सदा चलती रहती हैं और पीछे की ओर नहीं लौटतीं। नदियाँ वेग सहित आती हैं, जो जीवन को पल्लवित करती हैं।'
एक ऋचा में कहा गया है कि

'आ धनेव: पयसा तूण्यर्था अमर्धन्तीरूप नो यन्तु माधवा।
महो राये बृहती: सप्त विप्रो मयोभुवो जरिता जोहवीति।।

(ऋग्वेद 5:43:1)

जिसका अर्थ है कि वेग से बहने वाली नदियाँ मधुर जल के सहित निर्बाध गति से हमारे पास आएँ। अत्यंत प्रीति वाले स्तोता श्रेष्ठ ऐश्वर्य के लिए सुख के कारणभूत-सप्त महानदियों को आहूत करें। ऋग्वेद के मंडल सात सूक्त पचास की ऋचा चार में प्रार्थना है कि- 'प्रवत देश, निम्न देश तथा उन्नत देश में जो नदियाँ बहती हैं और जिनसे जल के द्वारा लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं, वे संसार की उपकारी नदियाँ रोग को दूर करने की कृपा करें। वे नदियाँ हमें हानि न पहुँचाएँ। इसका अभिप्राय यह भी है कि अतिवृष्टि, बाढ़ व तेज प्रवाह से किसी की हानि नहीं हो ऐसी कृपा प्राप्त करने हेतु प्रार्थना की गई है।'

वेदों में जल का औषधि तत्व के रूप में वर्णन किया गया है। जल जीवन को स्वस्थ, निरोगी व ऊर्जावान बनाये रखता है। ऋग्वेद के - प्रथम मंडल के तेईसवें सूक्त की बीसवीं ऋचा - में सोम के कथनानुसार जल वह औषधि तत्व है, जो सर्वसुखदाता और आरोग्य देने वाला है। प्रार्थना है-

'आप: पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे मम।
ज्योक् च सूर्यं दृशे।।
इन्द्रमाप: प्रवहतयत किं च दुरितं मयि।
यद् वाहमभि दुद्रोह यद् वा शेष उतानृतम्

(ऋग्वेद 1:23:21-22)

अर्थात् हे जलो! चिरकाल तक सूर्यदर्शन के निमित्त: निरोग रहने के लिए शरीर-रक्षक औषधि को मेरी देह में स्थित करो। मुझमें स्थित पाप को बहा दो। मेरे द्रोह-भाव, अपगंध और मिथ्याचरण को प्रताड़ित करो। अथर्ववेद में जल को श्रेष्ठ औषधियुक्त कहा गया है। जो समस्त व्याधियों का निवारण करता है-

ईशाना वार्याण क्षयंतीश्चर्षणीनाम्।
अपो याचामि भेषजम्।

(अथर्ववेद 1:5:4)

अथर्ववेद में वर्णित है कि जल चेहरे का सौंदर्य तथा कोमलता और क्रान्ति बढ़ाने में औषध-रूप है। भोजन के पाचन में अधिक जल पीना लाभदायक है -

'आपो भद्र घृतामिदाय आसन्नग्नीषो मेरे ब्रिध्रत्याय इत्ता:।
तीव्रो रसो मधुपृचकामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्चसा गमेत्।।'

(अथर्ववेद 3:13:5)

अर्थ है, कि जल मंगलमय और घी के समान पुष्टिदाता है तथा वही मधुरता भरी जलधाराओं का स्रोत भी है। भोजन के पचाने में उपयोगी तीव्र रस है। प्राण, कांति, बल और पौरुष देने वाला, अमरता की ओर ले जाने वाला मूल तत्व है। अथर्ववेद के मण्डल तीन के सूक्त एक की ऋचा छः में कहा गया है कि जल से ही देखने-सुनने एवं बोलने की शक्ति प्राप्त होती है।
जल के अमृत तत्व के कारण ऋषिगण प्रार्थना में इसके सेवन की आकांक्षा व्यक्त करते हैं -

'तं वो वयं शुचि मरि प्रमद्य घृतप्रुषं मधुमन्तं वनेम्।'

हे जल देवता ! अध्वर्युओं द्वारा इन्द्र के पान योग्य जो सोम रस निष्पन्न किया गया है उसका हम भी सेवन करें।
वेदों में लिखा गया है कि मकान के पास ही शुद्ध जल से भरा जलाशय होना चाहिये। जल की शुद्धता पर अधिक जोर दिया गया है। इस संबंध में ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में अनेक ऋचाएँ विद्यमान हैं -

'शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु न:।'

(ऋग्वेद 10:9:4)

अर्थात् सुखमय जल हमारे अभीष्ट की प्राप्ति के लिए तथा रक्षा के लिए कल्याणकारी हो। जल हम सब पर सुख-समृद्धि की वर्षा करे। शुद्ध जल मनुष्य को दीर्घायु प्रदान करता है तथा यह कल्याणकारी है। ऋषिगण कहते हैं-

'इमा आप: प्र भराम्यक्ष्मा यक्ष्मनाशनी:।
गृहानुप प्र सीमाम्यमृतेन सहाग्निगा।।'

(अथर्ववेद 3:12:9)

अर्थ है, कि अच्छे प्रकार से रोगरहित इस जल को मैं लाता हूँ। शुद्ध जलपान करने से मृत्यु से बचा रहूँगा। अन्न, घृत, दुग्ध आदि सामग्री तथा अग्नि के सहित घरों में आकर अच्छी तरह बैठता हूँ।
ऋग्वेद के दसवें मंडल के नौवें सूक्त की तीसरी ऋचा में कृषि के लिए जल का महत्व बताया गया है। किसानों के नेत्र जल के लिए वर्षा ऋतु में बादलों पर ही लगे रहते हैं।
ऋषि कहते हैं कि हे जल! तुम पर जीवन तथा नाना प्रकार की औषधियाँ, वनस्पतियाँ एवं अन्न आदि पदार्थ निर्भर हैं। जल का महत्व स्थापित करते हुए ऋग्वेद के षष्ठम मंडल के सत्तरवें सूक्त में कहा गया है कि - 'द्यवापृथिवी जल द्वारा आच्छादित है।' इसीलिए प्रथम मंडल तेईसवें सूक्त की अठारहवीं ऋचा में कहा गया है कि 'जिस जल को हमारी गायें पीती हैं उसे हवि देनी है।' पंचम मंडल में पर्जन्यदेव की स्तुति में कहा गया है कि पर्जन्यदेव मेघों को अन्तरिक्ष में एकत्र करते हैं और जलवृष्टि हेतु प्रेरित करते हैं। ऋषिगण जल द्वारा पृथ्वी व आकाश भिगो देने की कामना करते हैं जिसमें गौओं को पीने के लिए मधुर जल की कमी न रहे, सभी जीवों को जल प्राप्त हो। यजुर्वेद के नौवें अध्याय में कहा गया है:

'अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपापुत
प्रशस्तिष्वश्वा भवत वाजिन:।'

(अध्याय 9:6)

अर्थात् जलों में अमृत है और जलों में ही आरोग्यदायिनी तथा पुष्टि देने वाली औषधियाँ हैं। यजुर्वेद में समुद्र के जल को राष्ट्रदाता कहा गया है और उसकी आराधना की गई है। 'हे जलो ! तुम राष्ट्रदाता हो मुझे भी राष्ट्र प्रदान करो।' इसका सीधा-सा अभिप्राय यह है कि जहां जल है वहाँ व्यक्ति है, वनस्पति है, जीवन है, समाज है और राष्ट्र है।
इस प्रकार हम देखते हैं कि ऋषि-मुनियों ने पाँच हजार वर्ष पूर्व ही वेदों में मानव जीवन के कल्याण के लिये जल के महत्व को व्यक्त करते हुए जल की आराधना व रक्षा के लिए समाज को सचेत किया है। जिसे हम ग्रहण कर पालन करते तो शायद आज मानवता विनाश के कगार पर नहीं पहुंचती। सारतत्व यही है कि वेदों में वर्णित जल के महत्व को हम पहचानें और जल के संरक्षण व संवर्धन का कार्य कर मानव संस्कृति को विनाश से बचाएँ।

- शशांक मणि पांडे
(लेखक सम-सामायिक विषयों पर लेखन करते हैं।)

मध्यप्रदेश : हमारा जिला सीहोर

पुरातात्विक, पर्यटन और आध्यात्मिक विकास की नगरी

मध्यप्रदेश विविधता से समृद्ध है। प्रदेश के हर क्षेत्र की अपनी विशेषता है, क्षमता है और दक्षता है। यहां का प्रत्येक जिला अपना इतिहास, कला, संस्कृति, परंपरा, उपज और अन्य क्षेत्रीय विशेषताएं लिए हुए है। 'रोज़गार और निर्माण' के इस अंक से हम मध्यप्रदेश के प्रत्येक जिले से आपको परिचित करवायेंगे। इस अंक में प्रस्तुत है सीहोर जिले का परिचय-

सीहोर मालवा क्षेत्र के मध्य में विंध्याचल रेंज में स्थित है। वर्तमान का सीहोर जिला कभी सिद्धपुर के नाम से जाना जाता था। मध्यप्रदेश के उत्तर पश्चिमी सीमा पर 6578 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में स्थित यह जिला धार्मिक, पौराणिक और आध्यात्मिक मान्यताओं से समृद्ध शहीदों की भूमि है। शैव, शक्ति, जैन, वैष्णव, बौद्ध और नाथ संप्रदाय के पुजारियों ने इसे गहन चिंतन, अध्ययन साधना का केन्द्र बनाया था।

यह जिला 22.5 से 23.67 उत्तरी अक्षांश तथा 76.4 से. 78.13 पूर्वी देशांश के मध्य में स्थित है। इस जिले की सीमा प्रदेश के 6 जिलों भोपाल, रायसेन, नर्मदापुरम, देवास, शाजापुर और राजगढ़ से लगती है। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल जिले के गठन से पहले, भोपाल, सीहोर जिले की तहसील था और अब भोपाल संभाग में सीहोर जिला आता है। प्रदेश की राजधानी भोपाल के दक्षिण में 37 किलोमीटर की दूरी पर भोपाल-इन्दौर राजमार्ग पर स्थित 13 लाख 11 हजार 332 जनसंख्या वाले इस जिले को प्रशासनिक दृष्टि से 8 तहसीलें- सीहोर, आष्टा, इछावर, बुदनी, भैरूंदा, श्यामपुर, रेहटी, जावर, 534 मण्डल, 4 ब्लॉक सीहोर, आष्टा, इछावर और बुदनी में बांटा गया है। जिले में सीहोर, आष्टा तथा इछावर प्रमुख नगर हैं सीहोर में जिला मुख्यालय है।

धरातलीय बनावट- जिले का अधिकांश भाग मालवा पठार का एक अंग है। जिले का मध्यवर्ती भाग पठारी, उत्तरी पश्चिम भाग पहाड़ी, दक्षिण में नर्मदा का बेसिन तथा उत्तर पश्चिम में पार्वती नदी की घाटी पाई जाती है। मध्यवर्ती पठारी भाग में जिले की सीहोर, आष्टा तथा इछावर तहसीलें आती हैं। यह पठार समुद्र तल से 500 मीटर से लेकर 580 मीटर तक ऊंचा है। पठार का ढाल दक्षिण में नर्मदा की ओर तथा उत्तर-पश्चिम में पार्वती की ओर है। पहाड़ी क्षेत्र जिले की बुदनी, इछावर तथा भैरूंदा तहसीलों में विंध्याचल श्रेणी के रूप में फैला है। यह पहाड़ियां वनों से ढंकी हुई हैं। नर्मदा का मैदान बुदनी और भैरूंदा तहसीलों के दक्षिणी भाग में फैला है। यह एक संकरी पट्टी के रूप में लगभग 5 से 15 किलोमीटर की चौड़ाई में फैला है। पार्वती नदी का मैदान भी उपजाऊ है।

किला गिन्नौरगढ़

सागौन रिट्रीट से 4 किलोमीटर दूरी पर देलाबाड़ी के पास किला गिन्नौरगढ़ है यहां लगभग 10 से अधिक गौड़ राजाओं ने राज्य किया था। रानी कमलापति के शासन काल में मोहम्मद खां ने छल-बल से इसे कब्जे में कर लिया था। अंततः रानी कमलापति ने आत्म बलिदान किया। इस किले का पुरातन वैभव आज भी गौंड कालीन वास्तु परम्परा का स्मरण कराती है।

जल क्षेत्र- सीहोर जिले की जलप्रवाह प्रणाली यमुना और नर्मदा बेसिन के अंतर्गत आती है। जिले का उत्तरी-पश्चिमी भाग यमुना बेसिन में, जिसकी मुख्य नदी पार्वती तथा उसकी सहायक नदियां-उतावली, नेवज, पीरू तथा सीवन है। जिले का दक्षिणी भाग नर्मदा बेसिन के अंतर्गत आता है। जिसमें मुख्य नदी नर्मदा तथा उसकी सहायक नदियां कोलार, सिप, गुंजारी तथा ढोबी है।

जलवायु- सीहोर जिले की जलवायु मानसूनी है। यहां तीन ऋतुएं प्रमुख हैं- ग्रीष्मऋतु, शीतऋतु तथा वर्षाऋतु। ग्रीष्मकाल में यहां अधिकतम तापमान लगभग 44 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। शीतकाल में तापमान लगभग 4 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। यहां वर्षा लगभग 120 सेन्टीमीटर तक होती है।

वन- मानसूनी जलवायु का प्रभाव वनस्पति पर पड़ना स्वाभाविक है इसलिए यहां मानसूनी वनस्पति ही पाई जाती है। जिले में वन मध्यवर्ती तथा उत्तरी-पश्चिमी भागों में इछावर, बुदनी तथा आष्टा तहसीलों में फैले हैं। सीहोर तहसील के उत्तरी भाग में भी वन पाए जाते हैं। वनों में मुख्यतया साल, सागौन, खेर, तेंदू, बबूल, आम आदि प्रकार के वृक्ष पाए जाते हैं। जिनसे गोंद, तेंदू के पत्ते, कत्था, इमारती लकड़ी, जड़ी बूटियाँ तथा जलाऊ लकड़ी प्राप्त होती है, जो अपना आर्थिक महत्व रखती है।

खनिज- जिले में बहुत ही कम मात्रा में खनिज प्राप्त होते हैं। जिले में अभ्रक-छीपानेर, तहसील भैरूंदा में, बलुआ पत्थर-महाराजपुर, तहसील भैरूंदा में चूना पत्थर-गिलोरगढ़ तहसील भैरूंदा में तथा कालिया देह पहाड़ी इछावर तहसील में पाया जाता है। लौह अयस्क सीहोर तहसील के दोराहा नामक स्थान के पास पाया जाता है।

प्रमुख फसलें- मानसूनी जलवायु होने के कारण यहां मुख्यत: गेहूं, ज्वार, गन्ना, चना, चावल, दालें तथा कपास पैदा होता है। जिले का मुख्य खाद्यान्न गेहूं तथा ज्वार है।

सारूमारू गुफाएं

भोपाल से 80 किलोमीटर की दूरी पर सलकनपुर के पास सारू-मारू विहार सम्राट अशोक का शिलालेख, टपकेश्वर महादेव मंदिर, लाखों वर्ष पुराने शैलचित्र और कई गुफाएं पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं। इसे राष्ट्रीय पर्यटन स्थल घोषित किया है।

शौर्य और पराक्रम

शौर्य और पराक्रम का प्रतीक सीहोर क्षेत्र शहीदों की भूमि है। गेट वे ऑफ इंडिया के नाम से विख्यात पुरातन सिद्धपुर आज का सीहोर विभिन्न कालखण्डों से होता हुआ पेशवाओं के साम्राज्य का हिस्सा रहा है। चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक और राजा भोज के शासन के बाद यह पेशवाओं के साम्राज्य का हिस्सा बन गया। इसीलिये सीहोर के मंदिरों में पेशवाई स्थापत्य का समावेश है। पेशवा काल के बाद गोंड रानी कमलापति के लम्बे संघर्ष और बलिदान से रंजित इस क्षेत्र पर दोस्त मोहम्मद खां के द्वारा मुस्लिम शासन आरम्भ हुआ। 1818 में ईस्ट इंडिया कम्पनी के कैप्टन स्टेवई और भोपाल नवाब नजर मोहम्मद खां के बीच समझौता हुआ। समझौते के तहत सिद्धपुर के मैदान को अंग्रेजों को सौंप दिया गया। अंग्रेजों ने सीहोर में अपनी छावनी स्थापित की। मैडाक को पॉलिटिकल एजेंट बनाया गया और एक हजार संख्या वाली फौज रखी गयी। फौज का वेतन और सारा खर्च भोपाल रियासत के जिम्मे था। कैंटोन्मेंट के आसपास अन्य बस्तियां भी बस गईं। 1819 से 1926 तक लगभग 100 वर्षों तक भोपाल रियासत में बेगमों का शासन था।

पर्यटन स्थल

पर्यटन और पुरातात्विक धरोहर- सीहोर में आध्यात्मिक आस्था का केन्द्र है स्वयंभू चिंतामण गणेश मंदिर, यह स्वयं स्थापित होने वाले देश के चार स्वयंभू चिंतामन गणेश मंदिरों में से एक है।

प्राचीन विक्रमादित्यकालीन यह ऐतिहासिक मंदिर सीहोर के वायव्य पश्चिम उत्तर कोण में गोपालपुर में स्थित है। लगभग दो हजार वर्ष पूर्व सम्राट विक्रमादित्य ने मंदिर का निर्माण करवाया था।

आख्यानों के अनुसार लगभग 500 वर्ष पूर्व बाजीराव पेशवा जब शिवाजी महाराज का ध्वज लेकर यहां से आगे बढ़ रहे थे तो उन्होंने चिंतामन गणेश जी की इस प्रतिमा को देखा और उन्होंने इसे पूना ले जाकर स्थापित करने की योजना बनाई। अनेक प्रयत्नों के बाद भी श्री गणेश मूर्ति को हिला भी न सके। रात्रि में यह मूर्ति आधी जमीन के अंदर धस गई, तभी से आधी मूर्ति के ही दर्शन संभव है। बाजीराव पेशवा ने मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया, सभा मंडल का निर्माण किया और भोग प्रसाद आदि के लिये पुजारी नियुक्त करवाया।

मान्यता है कि यह मंदिर जप-तप-साधना का केन्द्र है। यह तपस्वियों की तपो भूमि रही है। इस मंदिर में श्रद्धालु अपनी इच्छा लेकर आते हैं। उल्टा स्वास्तिक लगाकर परिक्रमा करते हैं और मन्नत पूरी होने पर स्वास्तिक सीधा करते हैं। हर गणेश चतुर्थी को यहां उत्सव आयोजन स्वरूप मेला लगता है।

कुँवर चैनसिंह की समाधि

भोपाल नवाब द्वारा भोपाल के साथ-साथ नरसिंहगढ़, खिलचीपुर और राजगढ़ रियासतों से संबद्ध राजनीतिक अधिकार मैडाक को सौंप दिये गये। भोपाल नवाब अंग्रेजों के पक्ष में रहे, लेकिन अन्य रियासतें, अंग्रेजों की गुलामी को बर्दाश्त नहीं कर सकी। यह वह समय था जब मध्यभारत में स्वाधीनता की चेतना आकार ले रही थी, सभी रजवाड़ों ने एकजुट होने के लिये बैठक बुलाई।

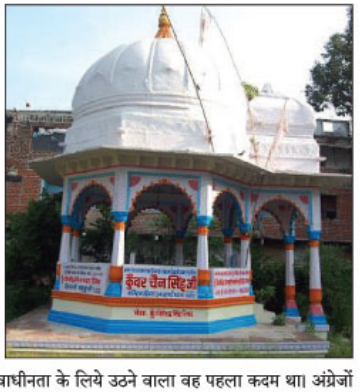

मिल-जुलकर स्वाधीनता के लिये उठने वाला वह पहला कदम था। अंग्रेजों को क्रांतिकारी गतिविधियों की जानकारी देने वाले नरसिंहगढ़ रियासत के दीवान गद्दार आनंदराम बख्शी और मंत्री रूपराम वोहरा को कुंवर चैनसिंह ने मौत के घाट उतार दिया। मैडाक ने कुँवर चैनसिंह को सीहोर आने के लिये कहा। चैनसिंह नियत समय पर सीहोर पहुंचे। पॉलिटिकल एजेंट के निवास पर हुई बैठक में मैडाक ने चैनसिंह के शस्त्र मांगे तो चैनसिंह ने एक ही तलवार देकर कहा 'राजपूत की कमर शस्त्र से खाली नहीं रहती।' इसी बात पर झगड़ा बढ़ गया मैडाक ने चैनसिंह को बंदी बनाने का आदेश दे दिया। आखिर चैनसिंह ने हमला किया पॉलिटिकल एजेंट भाग खड़ा हुआ। चैनसिंह उनके पीछे भागे। सीहोर के वर्तमान तहसील चौराहे पर चैनसिंह और अंग्रेजों के बीच भीषण युद्ध हुआ। चैनसिंह के मुकाबले अंग्रेजों की फौज कई गुना अधिक थी।

सीहोर के दशहरा बाग मैदान में चैनसिंह और उनके साथी बहादुरी से लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए। सीहोर के दशहरा बाग मैदान में स्थित कुँवर चैनसिंह की छतरी उनके साथियों हिम्मत खां, बहादुर खां और शेरू की कब्रें, 1824 के संग्राम और बलिदान की गाथा है।

अमलेश्वर महादेव मंदिर आंवली घाट

आध्यात्मिक आस्था का मुख्य केन्द्र है नर्मदाजी का आंवली घाट। आंवलीघाट पर स्थित महादेव मंदिर को लेकर मान्यता है कि अज्ञातवास के दौरान पांचों पांडव यहां आये थे। भीम ने इसी घाट पर तपस्या की थी। मान्यता यह भी है कि सूर्यदेव के पुत्र बृद्धदेव और भगवान विश्वकर्मा ने संयुक्त रूप से अमलेश्वर धाम, आंवलीघाट में तपस्या की थी। यह ब्रह्मजोन अब अनेक बाधाएं और पीड़ा से मुक्ति के लिये आस्था स्थल है।

पुरासंपदा- पुरातत्वविदों का मानना है सीहोर क्षेत्र का उद्गम क्षीर सागर से हुआ है। करोड़ों वर्ष पूर्व सीहोर क्षेत्र क्षीरसागर (समुद्र) के अथाह जल में डूबा था। इसका प्रमाण है बुधनी, भीमबैठका, बरखेड़ा, मिसघाट, काला पहाड़, आंवलाखेड़ा और चार बडली की पहाड़ियों पर समुद्र की लहरों के कटाव, समय की उथल-पुथल, प्राकृतिक कारणों के सारे प्रमाण सीहोर क्षेत्र की क्षीरसागर से उत्पत्ति को प्रमाणित करते हैं।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

मध्यप्रदेश का प्रमुख जनजातीय समाज और संस्कृति

मध्यप्रदेश में बड़ी संख्या में जनजातीय समाज निवास करता है। यह जनजातियां आदि संस्कृति, परम्परा, विविध कलाओं से प्रदेश को समृद्ध करती हैं। उनके जीवन मूल्य और परम्पराएं सांस्कृतिक चेतना की पहचान हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार देशभर में 10 करोड़ 43 लाख से अधिक जनजातीय जनसंख्या निवास करती है। मध्यप्रदेश में अनुसूचित जनजातियों की संख्या 1 करोड़ 53 लाख 16 हजार 784 से अधिक है, जो प्रदेश की कुल जनसंख्या का 21.1 प्रतिशत है तथा देश की कुल जनजातीय जनसंख्या का 13.57 प्रतिशत है। संख्या अनुसार यहां सबसे बड़ा जनजातीय समूह भील है उसके बाद गोंड और कोल आते हैं।

जनजातियों के समूह बीहड़ वनों, मरुस्थलों के उस क्षेत्र और अंचल में निवास करते हैं जहां आधुनिक समाज रहने की कल्पना भी नहीं कर सकता। जनजातियों की विशेषता है कि वे एक साथ रहते हैं, मिलजुल कर कार्य करते हैं, और एक दूसरे के सुख-दुःख में पूरे मन से भागीदार होते हैं। जनजातियों के निवास और व्यवहार को लेकर विभिन्न विद्वानों ने अपने मत व्यक्त किये हैं- जैकब्स और स्टर्न लिखते है: 'एक ऐसा ग्रामीण समुदाय या ग्रामीण समुदायों का एक ऐसा समूह जिसकी समान भूमि हो और जिस समुदाय के व्यक्तियों का जीवन आर्थिक दृष्टि से एक-दूसरे पर निर्भर हो, जनजाति कहलाता है।'

गिलिन और गिलिन की परिभाषा के अनुसार : 'स्थानीय जाति समूहों का एक ऐसा समुदाय जनजाति कहलाता है जो एक सामान्य क्षेत्र में निवास करता है तथा जिसकी एक समान संस्कृति है।'

राल्फ पिडिंगटन ने जनजाति का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है : 'हम एक जनजाति की व्याख्या व्यक्तियों के ऐसे समूह के रूप में कर सकते हैं जो समान भाषा बोलता हो, समान भू-भाग में निवास करता हो तथा जिसकी संस्कृति में समानता पायी जाती हो।'

भारतीय विद्वानों में डॉ. मजूमदार का मत है : 'एक जनजाति परिवारों के समूह का संगठन होता है, जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक निश्चित भू-भाग में रहते हैं, समान भाषा बोलते हैं और विवाह, व्यवसाय या उद्योग के विषय में विकसित निषेधात्मक नियमों का पालन करते हैं तथा 'पारस्परिक कर्तव्यों की एक सुविकसित व्याख्या करते हैं।' देशभर में व्याप्त इन जनजातियों को सूचीबद्ध किया गया और उन्हें अनुसूचित जनजाति के रूप में स्थान प्राप्त हुआ।

मध्यप्रदेश की अनुसूचित जनजातियां

मध्यप्रदेश की अनुसूचित जनजातियों में शामिल हैं - 1. अगरिया 2. आन्ध 3. बैगा 4. भैना 5. भारिया, भूमिया, भुईहार भूमिया, भूमिआ, भारिया, पालिहा, पांडो, 6 भत्रा, 7. भील, 8. भील मीणा 9. भुंजिया 10.बियार 11. बिंझवार 12. बिरहोर 13. दामोर 14. धनवार 15. गडवा, 16. गोंड, अरख, अर्रख, अगरिया, असुर, बड़ी मारिया, बड़ा मारिया, भटोला, भीमा, भुत्ता, कोईलाभुता, कोलियाभुती, भार, बिसोनहार्न, मारिया, छोटा मारिया, दंडासी, मारिया, थुरू, धुरवा, धोबा, धुलिया, डोरला, गयकी, गट्टा, गट्टी, गेटा, गोंड, गावारी, हिल मारिया, कंडरा, कलंगा, खटोला, कोइतर, कोया, खिरवारग, खिरवारा, कुचा, मारिया, कुचाकी, मारिया, माडिया, माना, मन्नेवार, मोध्या, मोगिया, मोधय, मुडिया, मुरिया, नगारची, नागवंशी, ओझा, रगाज गोंड, सोन्झारी, झरेका, थाटिया, बड़ी मारिया, बड़ी मारिया दारोई। 17. हल्बा, हल्बी 18. कमार 19. कोरकू 20. कंवर, कौर, चेखा, राथिया, तंवर, छत्री 21 कीर 22. खैरवार, कोंदर 23. खारिया, खारि 24. खोड, कांध, कोथ 25. कोल 26. कोलम 27. कोरकू, बोपची, मोवासी निहाल, नाहुल, बोधी, बोडेया 28. कोरवा, कोडाकू 29. माझी 30 मंझवार 31. मंवासी 32. मीणा 33. मुण्डा 34. नगेसिया, नगासिया 35. उरांव, धनका, धांगड 36. पनिका, 37. पाव, पाओ 38 परधान, पथारी, सरोती 39. पारधी 40. पारधी, बहेलिया, बहेल्लिया, चिता पारधी, लंगोली पारधी, फांस पारधी, शिकारी, टकनकर, टाकिया 41. परजा 42. सहारिया, सहारिआ, सेहारिआ, सेहरिआ, सोसिआ, सोर 43. सांवता, सांढ़ता, साओंता, सौंता 44. सौर 45. सवरा, सवर तथा 46. सौंरा।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

देलाबाड़ी

सीहोर से 95 किलोमीटर दूर रेहटी में स्थित देलाबाड़ी, पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। यहां की विशेषता है दुर्लभ प्रजाति के सागौन पौधे से निर्मित होटल। देशभर में यह एकमात्र ऐसा होटल है जिसे सागौन रीट्रीट कहते हैं।

खेल

हर क्षेत्र में खेल की अपनी परम्परा और विशेषता रहती है। सीहोर जिले को भोपाल के बाद हॉकी की नर्सरी कहा जाता है। यहां से लतीफ मोहम्मद और वहीद उर रहमान ने 1948 के ओलिंपिक खेलों में सहभागिता की। लगभग दो दशकों तक जिले ने हॉकी के क्षेत्र में अपना स्थान कायम रखा 1964-1970 के बीच दाउद मोहम्मद ने मध्यप्रदेश कोटे से हॉकी में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

इसी जिले से राजेश बंता ने मूक बधिर श्रेणी में राष्ट्रीय स्तर की कुश्ती के खेल में अपनी पहचान बनाई और राजा राम पहलवान भी कुश्ती में इसी मुकाम पर पहुंचे। सीहोर जिले के उलझावन गांव के नजदीक स्थित भोजनगर की 24 वर्षीय मेघा परमार ने 22 मई 2019 को विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट, सागरमाथा पर समिट पूर्ण करने की सफलता अर्जित की है।

परम्परागत भोजन

दाल-बाफला लड्डू यहां का मुख्य भोजन है इसके अलावा हींग वाली कचौरी यहां की विशेषता है।

तीखी, चटपटी, हींग की खुशबू भरी इस कचौरी की कल्पना मात्र से मुंह में पानी आ जाता है। यहां के मोती चूर के लड्डू भी बड़े प्रसिद्ध हैं। गणेश जी का भोग हो या फिर अन्य मंदिरों में प्रमुखता से इसी लड्डू का प्रसाद चढ़ाया जाता है, शायद इसीलिये यहां मोतीचूर लड्डू के प्रसाद का बड़ा प्रचलन है।

सिपाही बहादुर सरकार

सीहोर का दशहरा मैदान भीषण स्वतंत्रता संग्राम और बलिदान का साक्षी है। यहाँ एक दो नहीं 356 कब्रें हैं, जो हमें याद दिलाती हैं अंग्रेजों के क्रूरतम अत्याचार की। जो 1857 महासंग्राम के बलिदानी इतिहास का अंश है। हम सभी जानते हैं कि भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम 1857 में हुआ था।

10 मई 1857 को मेरठ से शुरू हुआ स्वाधीनता संग्राम, दिल्ली, उत्तरप्रदेश होता हुआ मध्यभारत तक आ पहुंचा, तो बुन्देलखंड और मालवा जल उठा। भोपाल रियासत की जनता ने अपने खून से आजादी का गौरवमय इतिहास लिखा। भोपाल नवाब सिकंदर जहां बेगम अंग्रेजों के साथ थीं। आम जनता ने जागीरदारों, सिपाहियों, मौलवियों और संतों के साथ क्रांति का झंडा थामा और प्रथम मुक्ति संग्राम का शंखनाद किया।

क्रांतिकारियों ने चार केन्द्र स्थापित किये, पहला केन्द्र था बैरसिया, इसका नेतृत्व किया गुजात खां, कामदार खां और सरफराज खां ने। दूसरा केन्द्र था, सीहोर जिसकी कमान थामी फौजी अफसर वली शाह, आरिफ शाह, महावीर कोठ और रमजूलाल ने। तीसरा केन्द्र था फाजिल मोहम्मद और आदिल मोहम्मद के क्षेत्र गढ़ी अंबापानी में और क्रांति के चौथे केन्द्र छीपानेर का नेतृत्व जागीरदार ठाकुर दौलतसिंह ने किया।

इन चारों स्तम्भों ने मिलकर 6 अगस्त 1857 को सीहोर में अंग्रेजी राज के विरुद्ध क्रांति की, और पूरी छावनी पर कब्जा कर लिया। 8 अगस्त को सीहोर में सिपाही बहादुर सरकार की स्थापना की। यह भारत की पहली लोकतंत्रात्मक सरकार थी। एक ऐसा अनूठा गौरवपूर्ण इतिहास जो सीहोर के वीर योद्धाओं ने अंग्रेज पॉलिटिक्स एजेंट के मुख्यालय में रचा।

इसके प्रतिशोध में भोपाल नवाब सिकंदर बेगम ने 10 अक्टूबर 1857 को क्रांतिकारी प्रमुखों के नाम गिरफ्तारी के वारंट जारी किये। सिपाहियों पर जुल्म ढाये गये। उन्हें सीमा से बाहर कर दिया गया। गढ़ी अम्बापानी पर हमला किया गया, 16 दिन के घेराव के बाद 12 नवम्बर को फाजिल मोहम्मद की हार हुई। 26 सितम्बर 1857 को शुजात खां पर हमला बोला उन्हें 4 जनवरी 1858 को सीहोर में ईदगाह के पास महुए के पेड़ के नीचे फांसी दी गई।

8 जनवरी 1858 को ह्यूरोज विशाल सेना लेकर सीहोर आया, उसने क्रांतिकारी सैनिकों पर मुकदमा चलाया। भोपाल कंटेनमेंट के 356 क्रांतिकारी सिपाहियों को सजा-ए-मौत की सजा सुना दी गयी। 14 जनवरी 1858 का वह काला दिन इतिहास में रोंगटे खड़ा कर देने वाला दिन था। राष्ट्रभक्त कैदियों को जेल से निकाल कर मैदान में खड़ा किया गया।

जनरल ह्यूरोज के आदेश पर 356 फौजियों को गोलियों से भून दिया गया। सारी दुनिया के सामने था ब्रिटिश हुकूमत का क्रूरतम घिनौना चेहरा। इस सामूहिक हत्याकांड के बाद जनरल रोज ने राहतगढ़ पर हमला किया।

31 जनवरी 1858 को राहतगढ़ किले के दरवाजे पर फाजिल मोहम्मद और कमादार खां को साथियों सहित फांसी दे दी गई। महावीर कोठ को 12 फरवरी 1858 को सागर में अंग्रेजों द्वारा मार दिया गया। सिपाही बहादुर सरकार में शामिल सभी देशभक्त शहीद हो गये।

देवेन्द्र गोरे
(लेखक, समसामयिक विषयों पर लेखन करते हैं)

मां बिजासन धाम

सीहोर जिले से 80 किलोमीटर दूर रेहटी तहसील में स्थित है, सलकनपुर गांव। यहां पहाड़ी पर विराजमान हैं बिजासन देवी। सलकनपुर का मां बिजासन धाम शक्तिपीठ है। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से 75

किलोमीटर की दूरी और नर्मदा के घाट से 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस मंदिर पर पहुंचने के लिये भक्तों को 1400 सीढ़ियाँ चढ़कर जाना होता है। यदि सड़क मार्ग से पहुंचे तो साढ़े 4 किलोमीटर और रोप वे से 5 मिनट में आप पहुंच सकते हैं। पुराणों के अनुसार देवी बिजासन माता पार्वती का अवतार है, जिन्होंने देवताओं के आग्रह पर रक्त बीज नामक राक्षस का वध किया था। राक्षस वध के बाद जिस स्थान पर माता बैठी उसी स्थान को बिजासन के रूप में जाना जाता है। विंध्याचल श्रृंखला पर विराजी बिजासन माता को विंध्यवासिनी भी कहते हैं। इस मंदिर का निर्माण 1100 ई. के आसपास गौंड राजाओं द्वारा किला गिन्नौरगढ़ निर्माण के समय करवाया था प्रसिद्ध संत भद्रानंद स्वामी ने मां बिजासन धाम में कठोर तपस्या की थी। यह दक्षिण मुखी पाषाण मूर्ति है। मूर्ति के सामने भैरवजी स्थापित है। मान्यता है कि देवीधाम में दर्शनार्थियों की विजय कामना और मनवांछित फल प्राप्ति की पुकार कभी खाली नहीं जाती।

(पिछले पृष्ठ का शेष)

मध्यप्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजातियां

प्रदेश में तीन विशेष पिछड़ी जनजातियां, सहरिया, बैगा और भारिया निवास करती हैं। राज्य की विशेष पिछड़ी जनजातियां इस प्रकार हैं -

सहरिया

सहरिया का शाब्दिक अर्थ है शेर के साथ (स+हरि) रहने वाला। सहरिया आर्थिक विकास की दौड़ में सर्वाधिक पिछड़ी जनजाति है। सहरिया जनजाति ग्वालियर चंबल क्षेत्र में प्रमुखता से पायी जाती है। इनका गुना, अशोक नगर, शिवपुरी, श्योपुर कलां, भिंड, मुरैना, ग्वालियर एवं दतिया में प्रमुख निवास है। यह जनजाति जंगल, पहाड़ियों तथा पहाड़ियों की तलहटी में निवास करती है।

सहरिया अपनी आजीविका के लिए वनोपज संग्रह, जड़ी-बूटियों की खेती और मजदूरी पर निर्भर रहते हैं। वे जड़ी-बूटियों के गुणों की पहचान कर इलाज भी करते हैं। शिकार करना उनका प्रमुख शौक है। यह जनजाति कला-संस्कृति की दृष्टि से भी समृद्ध है। इनका मुखिया पटेल होता है। वह पीढ़ी दर पीढ़ी पद संभालता है।

बैगा

बैगा जनजाति प्रदेश के मंडला, बालाघाट, शहडोल, डिंडोरी, अनूपपुर, उमरिया जिलों में प्रमुखता से निवास करती है। सतपुड़ा और मैकल पर्वत श्रृंखला के बीच बैगा जनजाति की सघन बसाहट है। मंडला जिले में बैगाओं के अस्सी से ज्यादा गांव हैं, इन्हें बैगा चक कहा जाता है। जंगलों में निवास करने के कारण इनका रहन-सहन सादा है।

वे अल्प संसाधनों में अपना जीवन यापन करने के लिए पहचाने जाते हैं। मूलत: वे बहुत कम वस्त्र पहनते हैं। पुरुष प्राय: उघाड़े बदन रहते हैं। शरीर के निचले हिस्से पर एक कपड़ा होता है, जिसे वे लंगोट कहते हैं। विशेष अवसरों पर पुरुष धोती तथा जैकेट भी धारण करते हैं। स्त्रियां धोती (साड़ी) पहनती हैं। छोटे बच्चे अक्सर निर्वस्त्र रहते हैं। बैगा पुरुष तथा पितृ सत्तात्मक समुदाय है। स्त्रियों की सामाजिक स्थिति पुरुषों के बाद आती है। बैगा समाज में पुरुषों के द्वारा बनाए गए कानून व सामाजिक मान्यताएं प्रभावी रहती हैं। सामाजिक मामलों के निपटारे के लिए बैगाओं की अपनी पारम्परिक व्यवस्था है। इसमें पांच पंच होते हैं।

अपनी आजीविका के लिए बैगा जंगल, उसके उत्पादों, खेती किसानी और मजदूरी पर निर्भर रहते हैं। बैगाओं की उत्पत्ति के बारे में जो - लोक गाथाएं प्रचलित हैं उनमें से एक के अनुसार 'प्रारंभ में भगवान ने नागा बैगा और नागी बैगिन को बनाया। नागा बैगा और नागा बैगिन जंगल में रहने लगे। थोड़े दिन बाद उनकी दो संतानें हुई। पहली संतान बैगा और दूसरी गोंड। बैगा जनजातियों की सात प्रमुख शाखाएं हैं जिनमें बिंझवार, भारोटिया, नरोटिया (या नाहर) राय मैना, कठमैना, कोंडमान, कुंडी या गोंड वैना शामिल हैं।

भारिया

भारिया मुख्यतः प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले में निवास करती है। उनकी कुछ आबादी जबलपुर जिले में भी है। भारिया जनजाति के लोग एकांत और सुदूर इलाके में रहना पसंद करते हैं। छिंदवाड़ा जिले में तामिया विकासखण्ड के पातालकोट इलाके में इनकी जनसंख्या अधिक है। पातालकोट जाने के लिए सामान्य धरातल से उतरकर पहाड़ियों के बीच में काफी नीचे तक जाना होता है। इसलिए इस इलाके की पाताल से तुलना करते हुए पातालकोट कहा जाता है। एक जमाने में यह इलाका अल्प विकसित था, लेकिन आज यह क्षेत्र विकसित है।

भारिया समतामूलक समाज है। इसमें स्त्री-पुरुषों का दर्जा बराबर का होता है। आजीविका के लिए भारिया वनोपज, जड़ी-बूटियां, घास की झाड़ू बनाने, काष्ठ कला पर निर्भर रहते हैं। भारिया, सगोत्री विवाह नहीं करते हैं। भारियाओं में विवाह की चार पद्धतियां हैं। इनमें 1. मंगनी विवाह, 2. लमसेना, 3. राजीबाजी का विवाह, 4. विधवा विवाह शामिल हैं।

हिन्दू धर्म में आस्था रखने वाले भारिया के अपने लोक देवता- बूढ़ा देव, दूल्हादेव, नागदेव और बरूआ हैं। वे होली, दीवाली, बिरही पूजा, नवाखानी जैसे त्यौहार मनाते हैं। भारियाओं में मृत्यु पर शव दफनाने का रिवाज है। इस मौके पर गमी रोटी के आयोजन की परंपरा है।

अन्य जनजातियां

अगरिया

अगरिया पारंपरिक तौर पर लौह अयस्क को पिघलाकर लोहे के शिल्प, कृषि उपकरण और औजार बनाने वाली जनजाति है, इस जनजाति के लोग मुख्यत: मध्यप्रदेश के बालाघाट, सीधी, मंडला और डिंडोरी जिलों में निवास करते हैं। इस जनजाति के लोगों ने लोहे से उपकरण आदि बनाने की पारंपरिक कला को जीवित रखा है। अगरिया शब्द की उत्पत्ति अग्नि से हुई है। धोकनी, जिसे जनजातीय लोग भाथी भी कहते हैं। अगरिया जनजाति को दो भागों में वर्गीकृत किया गया है। एक हैं पथरिया अगरिया और दूसरे हैं खुटिया अगरिया। वे अगरिया जिन्होंने अपने समुदाय की प्रारंभिक अवस्था में धोकनी के साथ पत्थर का उपयोग किया। वे पथरिया अगरिया कहलाये।

वहीं लकड़ी की खूंटी गाड़कर जिन अगरियाओं ने लौह अयस्क को पिघलाने के लिए धोकनी का प्रयोग किया वे खुटिया अगरिया कहलाए। अगरिया मध्यप्रदेश के अलावा छत्तीसगढ़ और झारखंड राज्य में भी निवास करते हैं। कुछ अगरिया जनजाति के लोग उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर से लेकर मध्यप्रदेश के रीवा जिले में भी निवास करते हैं। प्रसिद्ध जनजातीय लेखक बेरियर एल्विन ने अपनी पुस्तक 'द अगरिया' में लिखा है कि अगरिया पट्टी मिर्जापुर, रीवा से लेकर रांची तक फैली है। बेरियर एल्विन ने अगरिया जनजाति को पठरिया अगरिया, खलहा अगरिया, चोख और महाली अगरिया में वर्गीकृत करते हुए कहा है कि ये सब मूलतः अगरिया हैं।

अगरिया जनजाति में मान्यता है कि वे लोग संसार की उत्पत्ति के समय से ही अगियासुर देव की कृपा से इस पृथ्वी पर आये, अगियासुर देव के प्रताप से ही उन्होंने पत्थरों से लोहा निकालकर उपकरण, हथियार और शिल्प बनाना सीखा। माना जाता है कि अगरिया जनजाति के लोगों ने ही खेती-किसानी में उपयोग होने वाले हल और फाल का निर्माण किया था। अगरिया जनजाति को महत्वपूर्ण आदिम जनजाति के रूप में जाना जाता है। अगरिया समुदाय के आवास कच्चे होते हैं जो मिट्टी, लकड़ी, बांस और खपरेल से निर्मित होते हैं। अगरिया जनजाति के लोगों के घरों में या उसके आस-पास मिट्टी की भट्टी होती है जहां वे लोहे को गलाकर अथवा गर्म कर विभिन्न उपकरण तथा शिल्प बनाते हैं।

गोंड

मध्यप्रदेश की जनजातीय आबादी में गोंडों की जनसंख्या भीलों के बाद सर्वाधिक है। इस जनजाति के लोग राज्य के उत्तरी भाग को छोड़कर बैतूल, छिंदवाड़ा, बालाघाट, शहडोल, मंडला, होशंगाबाद, सागर, दमोह और छतरपुर जिलों में पाए जाते हैं। इस क्षेत्र में गोंडों ने शासन किया था। इसलिए आज के जबलपुर संभाग के अंतर्गत आने वाले एक बड़े क्षेत्र को गोंडवाना के रूप में भी जाना जाता है। आमतौर पर गोंड पहाड़ी या नदी के किनारे रहना पसंद करते हैं। गोंड अपनी परंपराओं से बंधा हुआ समुदाय है। वे अपनी संस्कृति और परंपराओं से दूर नहीं होना चाहते। गोंडों की उत्पत्ति के संबंध में अनेक जनश्रुतियां और अवधारणाएं हैं। एक कथा के अनुसार सृष्टि के आरंभिक समय एक तुम्बे से दो आदमी निकले, पहला बैगा हुआ और दूसरा गोंड।

भील

भीलों की बड़ी जनसंख्या मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग यानी कि झाबुआ, धार, खंडवा, बड़वानी और खरगौन में निवास करती है। इनका प्रमुख पर्व भगौरिया है। इसे प्रणय पर्व भी कहते हैं।

भील जनजाति- चार प्रमुख उप शाखाओं 1. भील, 2. भिलाला, 3. बोला, 4. पटलिया में विभाजित है। भील भारत की प्राचीन जनजातियों में से एक है। भील जनजाति की उपस्थिति का विवरण कई प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में भी उपलब्ध है। भील शहर, संस्कृत भाषा के भिल्ल पठार से उत्पन्न हुआ है। मध्यप्रदेश में भील जनजाति झाबुआ और उसके आसपास के जिलों में निवासरत है। भील धनुर्विद्या के लिए पहचाने जाते हैं। वे तीर-कमान के जरिए अंधेरे में भी अचूक निशाना लगा लेते हैं। वास्तव में कहा जाए तो तीर-कमान भीलों की संस्कृति का प्रतीक है। भील एक बड़े गांव के रूप में रहने के स्थान पर फालियों में रहते हैं। उनके घर खुले व हवादार होते हैं। वे अपने घरों की दीवारों पर कलात्मक चित्र बनाते हैं। उनकी इस चित्रकला को पिथौरा कहते हैं।

कोरकू

कोरकू जनजाति के लोग मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा, बैतूल, होशंगाबाद, खंडवा और बुरहानपुर जिले में निवासरत हैं। वनोपज खेती और मजदूरी पर निर्भर रहने वाली कोरकू जनजाति को जंगली क्षेत्रों में रहना पसंद है। कोरकू चार समूहों में पाए जाते हैं। यह समूह हैं: रूमा, पोतड़िया, दुलाप और बोवई।

हिन्दू धर्म में आस्था रखने वाले कोरकू होली, दीपावली के साथ ही देव, दशहरा, डोडवली, जिरोती, पाला आदि त्यौहारों को मनाते हैं। कोरकुओं में विवाह की चार पद्धतियां प्रचलित हैं- 1. लमझना या घर दामाद, 2. चिथोड़ा, 3. राजी बाजी 4. विधवा या तलाक विवाह। कोरकू अपने आपको रावण का वंशज और महादेव को अपनी सृष्टि का रचयिता मानते हैं। एक कोरकू मान्यता के अनुसार कोरकू विन्ध्य और सतपुड़ा के जंगलों में जड़ें खोदते थे या कोरते थे, इसलिए कोरकू कहलाए।

कोल

मध्यप्रदेश के रीवा, सतना, सीधी, शहडोल और जबलपुर जिले में कोल जनजाति के लोग निवास करते हैं। कोल का पूर्व निवास स्वतंत्रता पूर्व तत्कालीन रीवा राज्य का कुराली इलाका माना जाता है। यहाँ से वे अन्य स्थानों को गए। कोल जनजाति का उल्लेख अनेक हिन्दू धर्मग्रंथों में मिलता है। इनमें मत्स्य पुराण, अग्निपुराण, ऋग्वेद, महाभारत, रामायण, रामचरित मानस प्रमुख हैं। कोल हिन्दू धर्म को मानने वाली जनजाति है। कोल होली, दीपावली, नवदुर्गा, रामनवमीं प्रमुख हिन्दू त्योहारों को मनाते हैं। कोल जनजाति के लोगों की आजीविका का प्रमुख साधन खेती और मजदूरी है। कोल कलाप्रिय जनजाति है। उनका कोल दहरा नृत्य लोकप्रिय है।

मध्यप्रदेश के अलावा कोल महाराष्ट्र, ओडिशा और उत्तरप्रदेश राज्यों में भी पाए जाते हैं। कोल जनजाति के नामकरण और कोल शब्द के संबंध में विद्वानों के कई मत हैं। इस संबंध में कोलों में भी कई जनश्रुतियां और अवधारणाएं हैं। विद्वानों का मत है कि कोल या मुण्डा अपनी बोली में अपने सदस्यों को 'हर', 'होर' 'हो' तथा 'कोरो' नाम से पुकारते हैं। इन शब्दों का अर्थ मानव होता है। यह संभव है कि आर्य भाषा-भाषियों ने जब 'होर' या 'कोरो' शब्द सुने तो उन लोगों को 'कोल' नाम दे दिया गया हो।

भीमा

मध्यप्रदेश में भीमा जनजाति मंडला और डिंडोरी जिलों में निवासरत है। इनकी जनसंख्या बहुत कम आंकी गई है। भीमा को भिम्मा के तौर पर भी जाना जाता है। भीमा गाने, बजाने और नृत्य करने वाली जनजाति है। इस जनजाति के लोग सदैव अपने आप में तल्लीन रहते हैं। भीमा जनजाति के लोग घुमक्कड़ स्वभाव के होते हैं।

- हितेश शर्मा

(लेखक समसामयिक विषयों पर लेखन करते हैं)

अमिताव घोष

जलवायु परिवर्तन के लिए मिला इरास्मस पुरस्कार

जाने-माने भारतीय लेखक अमिताव घोष को जलवायु परिवर्तन के वैश्विक संकट को सामने लाने के लिए प्रतिष्ठित इरास्मस पुरस्कार से नवाजा गया है। उन्हें नीदरलैंड्स के प्रीमियम इरास्मियानम फाउंडेशन द्वारा यह सम्मान दिया गया है। अमिताव ने द नटमेग्सकर्स, द हंग्री टाइड और द ग्रेट डिरेंजमेंट जैसी बेस्टसेलर किताबें लिखी हैं। अमिताव को वर्ष 2007 में पद्मश्री और वर्ष 2018 में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है।

बिली इलिश

दो बार ऑस्कर जीतने वाली सबसे युवा गायिका बनीं

अमेरिका की मशहूर गायिका बिली इलिश ने ऑस्कर पुरस्कार जीतकर इतिहास रच दिया है। 22 वर्षीय इलिश दो बार ऑस्कर अवॉर्ड जीतने वाली सबसे युवा गायिका बन गई हैं। इलिश ने इस मामले में लुईस रेनर का 87 वर्ष पुराना रिकॉर्ड तोड़ा है। इलिश को 'व्हाट वॉज आई मेड फॉर' के लिए ऑरिजनल सॉन्ग कैटेगरी में ऑस्कर अवॉर्ड मिला है। बिली इलिश वर्ष 2021 में फिल्म 'जेम्स बॉन्ड- नो टाइम-टू डाई' के लिए बेस्ट ऑरिजनल सॉन्ग के लिए ऑस्कर पुरस्कार जीत चुकी हैं।

विनय मोहन क्वात्रा

भारतीय विदेश सचिव का कार्यकाल 6 महीने बढ़ा

भारत के विदेश सचिव विनय मोहन क्वात्रा का कार्यकाल छह महीने के लिए बढ़ाया गया है। केंद्रीय कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) की ओर से जारी अधिसूचना के अनुसार केंद्रीय मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने वर्ष 1988 बैच के भारतीय विदेश सेवा (आई.एफ.एस.) के अधिकारी विनय मोहन क्वात्रा की विदेश सचिव के रूप में सेवा अवधि में छह माह का विस्तार किया है।

रॉकेट स्टारशिप

दुनिया के सबसे ताकतवर रॉकेट का तीसरा ट्रायल

दुनिया के सबसे ताकतवर रॉकेट स्टारशिप का तीसरा ट्रायल लगभग सफल रहा। इस रॉकेट को अमेरिकी कारोबारी एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स ने बनाया है। यह दुनिया का सबसे बड़ा स्पेसक्राफ्ट है। 397 फीट ऊंचा यह स्पेसक्राफ्ट 150 मीट्रिक टन भार ले जाने में सक्षम है। इसमें एक साथ 100 लोगों को एक साथ मंगल ग्रह पर ले जाया जा सकता है। इस स्पेसक्राफ्ट को 14 मार्च को टेक्सास के बोका चिका से लॉन्च किया गया। स्टारशिप को अंतरिक्ष में ले जाने के बाद वापस हिंद महासागर में लैंड करना था, लेकिन रॉकेट जब पृथ्वी से 65 किलोमीटर ऊपर था, तब इसका संपर्क टूट गया था।

माइक टाइसन

मुक्केबाजी रिंग में चार वर्ष बाद करेंगे वापसी

अमेरिका के पूर्व पेशेवर मुक्केबाज माइक टाइसन एक बार फिर मुक्केबाजी रिंग में वापसी करने जा रहे हैं। 57 वर्षीय टाइसन 20 जुलाई, 2024 को जैक पॉल के खिलाफ रिंग में उतरेंगे। इन दोनों मुक्केबाजों के बीच मुकाबला टेक्सास के एटी एंड टी स्टेडियम में खेला जाएगा। टाइसन ने इससे पहले अपनी आखिरी फाइट नवंबर 2020 में एक प्रदर्शनी मैच में रॉय जोन्स जूनियर के खिलाफ लड़ी थी। टाइसन ने अपने कॅरियर में 58 पेशेवर फाइट लड़ी हैं।

टीओआई-270डी ग्रह

पृथ्वी से करीब सत्तर प्रकाश वर्ष दूर मिला ग्रह

वैज्ञानिकों ने पृथ्वी से लगभग 70 प्रकाश वर्ष दूर एक ऐसे ग्रह का पता लगाया है, जहां महासागर होने की संभावना है। यह ग्रह पृथ्वी से दोगुने आकार का है। वैज्ञानिकों ने जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप के जरिए यह ग्रह खोजा है, इसे टीओआई-270डी नाम दिया गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार इस ग्रह पर जलवाष्प, मीथेन और कार्बन डाइऑक्साइड की मौजूदगी का पता चला है, जो पानी की उपस्थिति का संकेत है।

एआई समा

दुनिया की पहली एआई एयर होस्टेस लॉन्च

कतर एयरवेज ने दुनिया की पहली एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) आधारित एयर होस्टेस लॉन्च की है। इस एआई एयर होस्टेस का नाम समा रखा गया है। कतर एयरवेज ने अपनी पहली डिजिटल ह्यूमन केबिन क्रू को आईटीबी बर्लिन-2024 के दौरान लॉन्च किया। कतर एयरवेज ने वेब समिट कतर के दौरान एआई बेस्ड डिजिटल एयर होस्टेस का डेमो दिया।

नीता अंबानी

ब्यूटी विद ए पर्पस ह्यूमैनिटेरियन अवॉर्ड मिला

रिलायंस फाउंडेशन की चेयरपर्सन नीता अंबानी को 71वीं मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में ब्यूटी विद ए पर्पस ह्यूमैनिटेरियन अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। यह अवॉर्ड विश्व में मानवीय कल्याण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए दिया जाता है। नीता अंबानी को मिस वर्ल्ड ऑर्गनाइजेशन की चेयरपर्सन जूलिया मॉर्ले ने पुरस्कार प्रदान किया। नीता अंबानी को यह पुरस्कार शिक्षा, स्वास्थ्य, कला एवं संस्कृति, खेल और परोपकार के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए दिया गया है।

इशाक डार

पाकिस्तान के नए विदेश मंत्री बने

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने पूर्व वित्त मंत्री रह चुके इशाक डार को देश का नया विदेश मंत्री नियुक्त किया है। इशाक पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट और पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज के वरिष्ठ नेता हैं। वह पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के करीबी माने जाते हैं। इशाक चार बार पाकिस्तान के वित्त मंत्री भी रह चुके हैं। उन्हें विदेश मामलों का अनुभव काफी कम है, इसके बावजूद इशाक को विदेश मंत्रालय की कमान सौंपी गई है। शरीफ सरकार में इशाक डार के अलावा 18 और मंत्री शामिल किए गए हैं।

राहुल सिंह

सीबीएसई के अध्यक्ष नियुक्त किए गए

भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) के अधिकारी राहुल को केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) का नया अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। वे निधि छिब्बर की जगह लेंगे, निधि छिब्बर को नीति आयोग में सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया है। 1996 बैच के बिहार कैडर के अधिकारी राहुल सिंह इससे पहले केंद्रीय कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) में अतिरिक्त सचिव के पद पर कार्यरत थे।

बर्नार्ड डुने

भारतीय मुक्केबाजी संघ के हाई परफॉर्मेंस निदेशक का इस्तीफा

भारतीय मुक्केबाजी संघ के हाई परफॉर्मेंस निदेशक बर्नार्ड डुने ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। आयरलैंड के पूर्व मुक्केबाज बर्नार्ड ने विश्व ओलिंपिक मुक्केबाजी क्वालिफायर में भारतीय मुक्केबाजों के निराशाजनक प्रदर्शन के बाद यह निर्णय लिया है। बर्नार्ड अक्टूबर 2022 में हाई परफॉर्मेंस निदेशक के तौर पर भारतीय मुक्केबाजी संघ से जुड़े थे। उनके मार्गदर्शन में ओलिंपिक क्वालिफायर में भारत के मुक्केबाजों का प्रदर्शन बेहद खराब रहा।

योगिता पासी

एफआईएच पैनल में आउटडोर अंपायर बनीं

अंतर्राष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) ने भारत की महिला अंपायर योगिता श्यामलाल पासी को इंटरनेशनल पैनल में आउटडोर अंपायर के रूप में पदोन्नत किया है। यह जानकारी हॉकी इंडिया ने दी। हॉकी इंडिया ने कहा कि योगिता को यह सम्मान हॉकी में उनके उत्कृष्ट योगदान और समर्पण के लिए मिला है। योगिता वर्ष 2023 में आयोजित महिला एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी, महिला जूनियर एशिया कप में अंपायरिंग कर चुकी हैं।

मोहम्मद मुस्तफा

फिलिस्तीन के नए प्रधानमंत्री बने

फिलिस्तीन के राष्ट्रपति महमूद अब्बास ने मोहम्मद मुस्तफा को देश का नया प्रधानमंत्री नियुक्त किया है। मुस्तफा इजराइल के कब्जे वाले वेस्ट बैंक में फिलिस्तीन सरकार का नेतृत्व करेंगे। मुस्तफा फिलिस्तीन अथॉरिटी के आर्थिक मामलों के सलाहकार रहे हैं। साथ ही वे विश्व बैंक में भी वरिष्ठ पद पर काम कर चुके हैं। उन्होंने वर्ष 2014 में गाजा पर हुए इजराइली हमले के बाद गाजा के पुनर्निर्माण में अहम भूमिका निभाई थी।

नवनीत कुमार सहगल

प्रसार भारती बोर्ड के नए अध्यक्ष बने

भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) के सेवानिवृत्त अधिकारी नवनीत कुमार सहगल को प्रसार भारती बोर्ड का नया अध्यक्ष बनाया गया है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अनुसार राष्ट्रपति ने चयन समिति की सिफारिश के आधार पर पूर्व आई.ए.एस अधिकारी नवनीत कुमार को प्रसार भारती बोर्ड का अध्यक्ष नियुक्त किया है। यह पद पिछले चार वर्षों से खाली था। उनसे पहले प्रसार भारती के अध्यक्ष ए. सूर्य प्रकाश थे, जिनका कार्यकाल फरवरी 2020 में समाप्त हो गया था। नवनीत कुमार वर्ष 1988 बैच के उत्तर प्रदेश कैडर के अधिकारी हैं। उनका कार्यकाल तीन वर्ष का होगा।

डेनिस वान डी पोल

भारतीय हॉकी टीम के नए गोलकीपिंग कोच बने

हॉकी इंडिया ने नीदरलैंड्स के गोलकीपिंग विशेषज्ञ डेनिस वान डी पोल को भारतीय पुरुष हॉकी टीम का गोलकीपिंग कोच नियुक्त किया है। हॉकी इंडिया ने पेरिस ओलिंपिक की तैयारियों के मद्देनजर डेनिस की नियुक्ति की है। वे टीम के मुख्य कोच क्रेग फुल्टन की देख-रेख में गोलकीपर पी.आर. श्रीजेश, कृष्ण बहादुर पाठक और सूरज करकेरा को प्रशिक्षित करेंगे।

शीतल देवी

चुनाव आयोग की राष्ट्रीय आइकॉन बनीं

चुनाव आयोग ने पैरा तीरंदाज और अर्जुन पुरस्कार विजेता खिलाड़ी शीतल देवी को दिव्यांग व्यक्ति (पीडब्ल्यूडी) श्रेणी में राष्ट्रीय आइकॉन घोषित किया है। 17 वर्षीय शीतल देवी ने पीडब्ल्यूडी आइकॉन बनाए जाने पर चुनाव आयोग का आभार व्यक्त करते हुए देशवासियों को मतदान के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि चुनाव के इस पर्व में भाग लें और देश का गर्व बनें।

स्मृति शेष

आयरन लंग्स के साथ जीवन बिताने वाले पॉल का निधन

मशीनी फेफड़े (आयरन लंग्स) के सहारे सबसे लंबा जीवने बिताने वाले दुनिया के एकमात्र व्यक्ति पोलियो पॉल का 78 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका असली नाम एलेक्जेंडर पॉल था। वे वर्ष 1952 में छह वर्ष की उम्र में पोलियो से ग्रसित होने के बाद लकवाग्रस्त हो गए। इसके बाद से उन्हें पोलियो पॉल के नाम से पहचाना जाता है।

पद्मश्री से सम्मानित बुनकर कपिल देव प्रसाद का निधन

पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित बुनकर कपिल देव प्रसाद का 68 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वह लंबे समय से हृदय रोग से पीड़ित थे। कपिल देव प्रसाद हाथों से बुनाई कर बावन बूटी साड़ी बनाने के लिए देशभर में प्रसिद्ध थे। इस कला के लिए उन्हें वर्ष 2023 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

भारतीय नौसेना के पूर्व प्रमुख एल. रामदास का निधन

भारतीय नौसेना के पूर्व प्रमुख एडमिरल (सेवानिवृत्त) एल. रामदास का एक सैन्य अस्पताल में निधन हो गया। 90 वर्षीय एडमिरल रामदास उम्र संबंधी परेशानियों से जूझ रहे थे। उन्होंने दिसम्बर 1990 से सितम्बर 1993 तक नौसेना प्रमुख के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। उन्होंने वर्ष 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

(स्रोत : संपादकीय टीम द्वारा संकलित, फोटो : गूगल से साभार)

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

सामान्य अध्ययन

1. किस राज्य ने ''उबेर शटल'' नामक बस सेवा शुरू करने के लिए उबेर के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए?
अ. पश्चिम बंगाल
ब. मध्यप्रदेश
स. उत्तरप्रदेश
द. हरियाणा
उत्तर- अ. पश्चिम बंगाल

2. निम्नलिखित में से किस राज्य को काजू के लिए भौगोलिक संकेत प्राप्त हुआ है?
अ. केरल
ब. गोवा
स. आंध्रप्रदेश
द. महाराष्ट्र
उत्तर- ब. गोवा

3. कोणार्क के सूर्य मंदिर का निर्माण करने वाला राजा नरसिंह किस वंश का था?
अ. मराठा वंश
ब. चोल वंश
स. गंग वंश
द. विजयनगर
उत्तर- स. गंग वंश

4. बाघ की गुफाएं निम्नलिखित में से किस काल की हैं?
अ. मौर्य काल
ब. गुप्त काल
स. वर्धन काल
द. राजपूत काल
उत्तर- ब. गुप्त काल

5. अनिवार्य वस्तु अधिनियम निम्नलिखित में से कब लागू हुआ?
अ. 1955 ब. 1956
स. 1971 द. 1975
उत्तर- अ. 1955

6. राज्यसभा की स्थापना निम्न में से कब हुई?
अ. 1948 ब. 1952
स. 1951 द. 1950
उत्तर- ब. 1952

7. रिक्सडॉग किस देश की संसद का नाम है?
अ. ईरान ब. स्वीडन
स. नॉर्वे द. बेल्जियम
उत्तर- ब. स्वीडन

8. ''90 पूर्व चोटी'' कहां पर स्थित है?
अ. प्रशांत महासागर
ब. अटलांटिक महासागर
स. हिंद महासागर
द. आर्कटिक महासागर
उत्तर- स. हिंद महासागर

9. क्षेत्रीय भूगोल अवधारणा का प्रतिपादन किसने किया था?
अ. कार्लरिटर
ब. एलेग्जेंडर वोन हमबोल्ट
स. हेरोडोट्स
द. स्ट्राबो
उत्तर- अ. कार्लरिटर

10. पम्पास नामक घास के मैदान किस क्षेत्र में पाए जाते हैं?
अ. दक्षिण अमेरिका
ब. आस्ट्रेलिया
स. अफ्रीका
द. यूरोप
उत्तर- अ. दक्षिण अमेरिका

11. हीरे का सबसे बड़ा व्यापार केंद्र किस देश में स्थित है?
अ. बेल्जियम ब. भारत
स. अमेरिका द. फ्रांस
उत्तर- अ. बेल्जियम

12. शुद्ध चीनी में कौन सा तत्व उपस्थित नहीं है?
अ. कार्बन
ब. हाइड्रोजन
स. नाइट्रोजन
द. ऑक्सीजन
उत्तर- स. नाइट्रोजन

13. निम्नलिखित में से कौन सा एक न्यूक्लिऑन नहीं था?
अ. प्रोट्रॉन
ब. न्यूट्रॉन
स. इलेक्ट्रॉन
द. पॉजिट्रॉन
उत्तर- द. पॉजिट्रॉन

14. 'स्वर्ण' निम्नलिखित में से किस पदार्थ में घुल जाता है?
अ. हाइड्रोक्लोरिक अम्ल
ब. नाइट्रिक अम्ल
स. एसीट्रिक अम्ल
द. एक्वा रेजिया
उत्तर- द. एक्वा रेजिया

15. विसंक्रमण के बाद जल में उपलब्ध क्लोरीन की मात्रा को क्या कहते हैं?
अ. मुक्त क्लोरीन
ब. अवशिष्ट क्लोरीन
स. मुक्त उपलब्ध क्लोरीन
द. संयुक्त उपलब्ध क्लोरीन
उत्तर- ब. अवशिष्ट क्लोरीन

16. निम्नलिखित में से कौन सा प्राकृतिक बहुलक है?
अ. बेकेलाइट
ब. सेलुलोस
स. पी.वी.सी.
द. नायलॉन
उत्तर- ब. सेलुलोस

17. अप्रत्यक्ष निवेश का उदाहरण निम्नलिखित में से क्या है?
अ. म्यूचुअल फंड
ब. गोल्ड ETFS
स. स्टॉक्स
द. शेयर
उत्तर- ब. गोल्ड ETFS

18. आत्मनिर्भरता किस पंचवर्षीय योजना का उद्देश्य था?
अ. पहली
ब. चौथी
स. तीसरी
द. पांचवी
उत्तर- ब. चौथी

19. सुल्तान अजलन शाह कप किस खेल से संबंधित था?
अ. बैडमिंटन ब. हॉकी
स. टेबलटेनिस द. गोल्फ
उत्तर- ब. हॉकी

20. एग्रीकल्चर शॉट किस खेल से संबंधित है?
अ. क्रिकेट ब. हॉकी
स. गोल्फ द. पोलो
उत्तर- अ. क्रिकेट

21. एक पारम्परिक वस्त्र कपड़ा 'शफी लांफी' निम्नलिखित में से किस राज्य का एक जीआई उत्पाद है?
अ. असम
ब. मणिपुर
स. जम्मू काश्मीर
द. आंध्रप्रदेश
उत्तर- ब. मणिपुर

22. टैगोर संस्कृति और सभ्यता अध्ययन केंद्र कहां स्थित है?
अ. शिमला
ब. कोलकाता
स. भोपाल
द. दिल्ली
उत्तर- अ. शिमला

23. निम्नलिखित में से कौन सी नदी यमुना की सहायक नहीं है?
अ. केन
ब. बेतवा
स. चम्बल
द. तवा
उत्तर- द. तवा

24. किस देश ने दुनिया के सबसे बड़े एकल साइट सौर ऊर्जा संयंत्र 'अल-वफरा' परियोजना का उद्घाटन किया?
अ. संयुक्त अरब अमीरात
ब. अमेरिका
स. भारत
द. चीन
उत्तर- अ. संयुक्त अरब अमीरात

25. 'कालिदास सम्मान' किस क्षेत्र में दिया जाता है?
अ. संगीत ब. नृत्य
स. साहित्य द. सिनेमा
उत्तर- स. साहित्य

26. निम्नलिखित में से कौन सी नदी का उद्गम स्थल मध्यप्रदेश में नहीं है?
अ. चंबल
ब. बनास
स. बैनगंगा
द. क्षिप्रा
उत्तर- ब. बनास

27. मलाजखंड खदान किस खनिज से संबंधित है?
अ. बॉक्साइट
ब. तांबा
स. मैगनीज
द. लाइमस्टोन
उत्तर- ब. तांबा

28. बैजू बाबरा की समाधि किस जिले में स्थित है?
अ. अशोकनगर (चंदेरी)
ब. ग्वालियर
स. मण्डला
द. बुरहानपुर
उत्तर- अ. अशोकनगर (चंदेरी)

29. मध्यप्रदेश में हांडीखोह नामक खाई किस जगह पर है?
अ. पंचमढ़ी ब. सतना
स. ग्वालियर द. इंदौर
उत्तर- अ. पंचमढ़ी

30. 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' के लेखक कौन हैं?
अ. जयशंकर प्रसाद
ब. हरिशंकर परसाई
स. फणीश्वरनाथ रेणु
द. सुमित्रा नंदन पंत
उत्तर- ब. हरिशंकर परसाई

31. मध्यप्रदेश के मोहम्मद समीर दाद किस खेल के खिलाड़ी थे?
अ. हॉकी
ब. किक्रेट
स. बॉलीबॉल
द. हैंडबॉल
उत्तर- अ. हॉकी

32. सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रीन हाउस गैस कौन सी है?
अ. कार्बन डाइऑक्साइड
ब. मीथेन
स. जल वाष्प
द. इनमें से कोई नहीं
उत्तर- अ. कार्बन डाइऑक्साइड

33. गोल्डन लंगूर है?
A. भारत के पश्चिमी घाटों और पलानी के पहाड़ियों में पाया जाता है।
B. IUCN द्वारा लुप्तप्राय प्रजातियों की सूची में जोड़ा गया हो।
अ. केवल A
ब. केवल B
स. अ व ब दोनों
द. कोई नहीं
उत्तर- ब. केवल B

34. मरूभूमि राष्ट्रीय उद्यान किस प्रदेश में है?
अ. राजस्थान
ब. गुजरात
स. मध्यप्रदेश
द. उत्तरप्रदेश
उत्तर- अ. राजस्थान

35. जिन वस्तुओं की मांग उनकी कीमत पर निर्भर करती है, वे वस्तुएं कहलाती हैं?
अ. वेबलेन वस्तुएं
ब. गिण्डिन वस्तुएं
स. आवश्यक वस्तुएं
द. इनमें से कोई नहीं
उत्तर- अ. वेबलेन वस्तुएं

36. अर्थव्यवस्था का पिता किसे कहा जाता है?
अ. एडम स्मिथ
ब. लैमार्क
स. डेविड ह्यूम
द. डार्विन
उत्तर- अ. एडम स्मिथ

37. भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान कहां है?
अ. बैंगलुरू
ब. गांधीनगर
स. भोपाल
द. भुवनेश्वर
उत्तर- अ. बैंगलुरू

38. उद्योगों के लिए वित्तीय सहायता देने के लिए सर्वोच्च संगठन कौन सा है?
अ. IDBI
ब. ICICI
स. एक्सिस बैंक
द. SBI
उत्तर- अ. IDBI

39. दश्त-ए- मार्गो जिसे मृत्यु का मरुस्थल भी कहा जाता है, किस देश में स्थित है?
अ. कजाखस्तान
ब. सऊदी अरब
स. अफगानिस्तान
द. चीन
उत्तर- स. अफगानिस्तान

40. पृथ्वी की किस परत पर घनत्व सबसे ज्यादा होता है?
अ. कोर
ब. भूपर्पटी
स. मेंटल
द. मेग्मा
उत्तर- अ. कोर

41. मकड़ी का जाला किससे बना हुआ होता है?
अ. कार्बोहाइड्रेट पॉलीनर्स
ब. प्रोटीन
स. वसा
द. इनमें से कोई नहीं
उत्तर- ब. प्रोटीन

42. किस फसल में असली तथा नकली फसलों के गुण सम्मिलित हैं?
अ. केला
ब. बादाम
स. आम
द. काजू
उत्तर- द. काजू

43. किस महापुरुष को बंग बंधु के नाम से जाना जाता है?
अ. मौलाना भसानी
ब. नुरुल हसल
स. मुजीबुर रहमान
द. जुबेर खान
उत्तर- स. मुजीबुर रहमान

44. अमेरिकी ग्रहयुद्ध के बाद किसका अंत हुआ था?
अ. राजतंत्र
ब. रंगभेद
स. जमींदारी
द. दासप्रथा
उत्तर- द. दासप्रथा

45. निम्नलिखित में से कौन सा शहर प्रसिद्ध राजा कर्मवीर्य अर्जुन की राजधानी थी?
अ. महेश्वर
ब. ग्वालियर
स. सतना
द. ओंकारेश्वर
उत्तर- अ. महेश्वर

46. ब्रह्मराक्षक नामक पुस्तक के रचनाकार कौन हैं?
अ. निदा फाजली
ब. गजानन माधव मुक्तिबोध
स. माखनलाल चतुर्वेदी
द. हरिशंकर परसाई
उत्तर- ब. गजानन माधव मुक्तिबोध

47. डुबरी किस राष्ट्रीय उद्यान का पुराना नाम है?
अ. संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान
ब. बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान
स. कान्हा राष्ट्रीय उद्यान
द. माधव राष्ट्रीय उद्यान
उत्तर- अ. संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान

48. संध्या अग्रवाल किस खेल से संबंधित हैं?
अ. हॉकी
ब. क्रिकेट
स. फुटबॉल
द. बॉलीबॉल
उत्तर- ब. क्रिकेट

49. अहिरे लोकनृत्य किस जनजाति का है?
अ. सहरिया
ब. भारिया
स. बैगा
द. भील
उत्तर- ब. भारिया

50. इन्द्रवती राष्ट्रीय उद्यान किस प्रदेश में है?
अ. मध्यप्रदेश
ब. उत्तरप्रदेश
स. छत्तीसगढ़
द. महाराष्ट्र
उत्तर- स. छत्तीसगढ़

- पूर्वी जैन
(लेखिका, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी विषयों पर लेखन करती हैं।)

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे जाने वाले संभावित महत्वपूर्ण प्रश्न

सामान्य ज्ञान

प्र. 1 वर्ष 2013 में मध्यप्रदेश के किस जिले में अत्याधुनिक वेधशाला स्थापित की गई?
(अ) इन्दौर (ब) सागर
(स) उज्जैन (द) रतलाम
उत्तर- (स) मध्यप्रदेश का उज्जैन काल गणना की दृष्टि से अत्याधिक महत्वपूर्ण रहा है। इसीलिए 1733 में जयपुर के राजा जयसिंह ने उज्जैन में जन्तर-मंतर वेधशाला स्थापित की थी। इसी महत्व के चलते जून, 2013 को मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने उज्जैन जिले के महिदपुर तहसील के डोंगला ग्राम में प्रदेश की अत्याधुनिक वेधशाला का लोकार्पण किया तथा इसका नाम प्रसिद्ध खगोलशास्त्री वराहमिहिर के नाम पर रखा।

प्र. 2 मध्यप्रदेश में सर्वाधिक वर्षा किस शाखा से होती है?
(अ) बंगाल की खाड़ी
(ब) अरब सागर
(स) दोनों शाखाओं से बराबर
(द) इनमें से कोई नहीं
उत्तर- (अ) मध्यप्रदेश में सर्वाधिक वर्षा बंगाल की खाड़ी शाखा से होती है और यही शाखा भारत में सर्वाधिक वर्षा करती है। इस शाखा के बाद प्रदेश में वर्षा अरब सागर से होती है।

प्र. 3 निम्नलिखित में से कौन-सी रेखा मध्यप्रदेश में जल विभाजक रेखा कहलाती हैं?
(अ) 50 सेमी. वर्षा रेखा
(ब) 75 सेमी. वर्षा रेखा
(स) 100 सेमी. वर्षा रेखा
(द) 125 सेमी. वर्षा रेखा
उत्तर- (ब)

प्र. 4 मध्यप्रदेश की जलवायु को, ऊष्ण कटिबंधीय स्वरूप प्रदान करने में कौन उत्तरदायी है?
(अ) कर्क रेखा
(ब) मकर रेखा
(स) दक्षिण-पश्चिम से आने वाली मानसून
(द) उपरोक्त सभी
उत्तर- (अ)

प्र. 5 मध्यप्रदेश की जलवायु के अनुसार प्रदेश में कितनी ऋतुएं पायी जाती हैं?
(अ) दो (ब) तीन
(स) चार (द) छः
उत्तर- (ब)

प्र. 6 मध्यप्रदेश के किस क्षेत्र में ग्रीष्म ऋतु में अत्याधिक गर्मी तथा सर्दी में साधारण ठंड पड़ती है?
(अ) उत्तर का मैदान
(ब) विंध्याचल का पहाड़ी भाग
(स) नर्मदा सोन घाटी
(द) मालवा का पठार
उत्तर- (स) नर्मदा घाटी क्षेत्र के निकट से कर्क रेखा के गुजरने से ग्रीष्म ऋतु में यहां अत्याधिक गर्मी पड़ती है तथा शीत ऋतु में साधारण ठंड पड़ती है यह घाटी सतपुड़ा तथा विंध्याचल पर्वत के मध्य में स्थित है।

प्र. 7 मध्यप्रदेश में ऋतुओं को अन्य नाम से भी जाना जाता है?
(अ) चुनाला (ब) चौमासा
(स) सियाला (द) उपरोक्त सभी
उत्तर- (द)

प्र. 8 सूर्य का उत्तरायण होने से प्रदेश में क्या परिवर्तन होगा?
(अ) तापमान में वृद्धि
(ब) तापमान में कमी
(स) तापमान में कोई परिवर्तन नहीं
(द) उपरोक्त सभी असत्य हैं
उत्तर- (अ) सूर्य उत्तरायण होने से उत्तरी गोलार्द्ध में तापमान बढ़ने लगता है। इससे उत्तरी मध्यप्रदेश में तापमान शीघ्रता से बढ़ता है मुख्यत: ग्वालियर, मुरैना, दतिया, में तापमान अधिक हो जाता है परन्तु दक्षिणी मध्यप्रदेश में अपेक्षाकृत कम गर्मी पड़ती है।

प्र. 9 सूर्य की किरणें किस रेखा पर लम्बवत् पड़ने से मध्यप्रदेश में अधिक गर्मी पड़ती है?
(अ) मकर रेखा
(ब) कर्क रेखा
(स) विषुवत रेखा
(द) किसी पर नहीं
उत्तर- (ब)

प्र. 10 किस माह के समूहों को प्रदेश में द्वितीय गर्मी ऋतु कहा जाता है?
(अ) जून-जुलाई
(ब) जुलाई-अगस्त
(स) अगस्त-सितम्बर
(द) सितम्बर-अक्टूबर
उत्तर- (द)

प्र. 11 मध्यप्रदेश को वर्षा के आधार पर कितने भागों में बांटा गया है?
(अ) तीन (ब) चार
(स) पांच (द) छः
उत्तर- (ब)

प्र.12 मध्यप्रदेश में शीत ऋतु में लौटने वाले मानसून से होने वाली वर्षा को क्या कहते हैं?
(अ) पाला (ब) मावठा
(स) ओला (द) सियाला
उत्तर- (ब)

प्र.13 मध्यप्रदेश में ऋतु संबंधित जानकारी जुटाने वाली वेधशाला कहां स्थित है?
(अ) इन्दौर (ब) भोपाल
(स) पचमढ़ी (द) शिवपुरी
उत्तर- (अ)

प्र.14 मध्यप्रदेश का सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान कहां अवस्थित है?
(अ) मालवा का पठार
(ब) मध्य भारत का पठार
(स) नर्मदा सोन घाटी
(द) सतपुड़ा मैकाल श्रेणी
उत्तर- (द)

प्र.15 मध्यप्रदेश में दैनिक तापान्तर किस माह में सर्वाधिक होता है?
(अ) मार्च (ब) अप्रैल
(स) मई (द) जून
उत्तर- (अ)

प्र. 16 मध्यप्रदेश के किस भाग में सर्वाधिक वर्षा होती है?
(अ) उत्तरी भाग (ब) दक्षिणी भाग
(स) पश्चिमी भाग (द) पूर्वी भाग
उत्तर- (द)

प्र. 17 मध्यप्रदेश में सबसे ज्यादा वर्षा किससे होती है?
(अ) दक्षिण मानसून से
(ब) दक्षिण-पूर्वी मानसून से
(स) दक्षिण-पश्चिम मानसून से
(द) उपरोक्त सभी
उत्तर- (स)

प्र.18 मध्यप्रदेश को कितने कृषि जलवायु क्षेत्रों में बांटा गया है?
(अ) 10 (ब) 7
(स) 6 (द) 11
उत्तर- (द) छत्तीसगढ़ समेत 11

प्र.19 तापक्रम के आधार पर मध्यप्रदेश का अधिकांश भाग किस तापीय वर्ग में आता है?
(अ) अति तापीय
(ब) मध्य तापीय
(स) सूक्ष्म तापीय
(द) उपरोक्त में कोई नहीं
उत्तर- (अ)

प्र. 20 मध्यप्रदेश के किस जिले से कर्क रेखा नहीं गुजरती है?
(अ) विदिशा (ब) भोपाल
(स) उज्जैन (द) इन्दौर
उत्तर- (द)

प्र. 21 कर्क रेखा पर सूर्य की लम्बवत किरणें कब पड़ती हैं?
(अ) 21 मार्च (ब) 21 जून
(स) 23 सितम्बर (द) 22 दिसम्बर
उत्तर- (ब)

प्र. 22 मध्यप्रदेश की जलवायु के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
(अ) मध्यप्रदेश की जलवायु राज्य के मध्य से गुजरने वाली कर्क रेखा से प्रभावित होती है
(ब) ग्वालियर मार्ग ग्रीष्मकाल के साथ उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु का एक उदाहरण है
(स) मध्यप्रदेश में अरब सागर की शाखा और बंगाल की खाड़ी की शाखा दोनों से वर्षा होती है
(द) राज्य की लगभग 50 प्रतिशत वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून से प्राप्त होती है
उत्तर- (द)

प्र. 23 मध्यप्रदेश में औसत तापमान को प्रभावित करने वाला सबसे प्रमुख भौगोलिक कारण है?
(अ) बंगाल की खाड़ी से निकटता
(ब) कर्क रेखा का मध्यप्रदेश के बीच से गुजरना
(स) मध्यप्रदेश के लगभग 25 प्रतिशत भाग पर वनों का आवरण है
(द) मध्यप्रदेश के दक्षिण भाग की भू-मध्य रेखा से समीपता
उत्तर- (ब)

प्र. 24 मध्यप्रदेश में दक्षिण-पश्चिम मानसून की समाप्ति तिथि है?
(अ) दिसम्बर की शुरुआत
(ब) नवम्बर माह
(स) अक्टूबर का पूर्वार्द्ध
(द) जनवरी माह
उत्तर- (स)

प्र. 25 कितने वन क्षेत्रीय मंडलों में मध्यप्रदेश को विभाजित किया गया है?
(अ) 15 (ब) 16
(स) 14 (द) 13
उत्तर- (ब)

प्र. 26 नर्मदा घाटी में कम वर्षा का मुख्य कारण है?
(अ) नर्मदा घाटी तक पहुंचते-पहुंचते मानसून हवाएं शुष्क हो जाती हैं
(ब) सतपुड़ा पर्वत की वृष्टि छाया में होने के कारण
(स) विध्यांचल पर्वत की वृष्टि छाया में होने के कारण
(द) घाटी की गहराई के कारण
उत्तर- (ब)

प्र. 27 वन स्थिति रिर्पोट 2021 के अनुसार मध्यप्रदेश का सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाला जिला कौन-सा है?
(अ) श्योपुर (ब) छिंदवाड़ा
(स) बालाघाट (द) बैतूल
उत्तर- (स)

प्र. 28 वन स्थिति रिर्पोट 2021 में मध्यप्रदेश के वन क्षेत्र में वर्ष 2019 की तुलना में कितने वर्ग किमी. वन क्षेत्र में वृद्धि हुई?
(अ) 9.80 वर्ग किमी.
(ब) 10 वर्ग किमी.
(स) 28 वर्ग किमी.
(द) 36 वर्ग किमी.
उत्तर- (ब)

प्र. 29 वन स्थिति रिर्पोट 2021 के अनुसार मध्यप्रदेश में न्यूनतम वन प्रतिशत वाला जिला कौन-सा है?
(अ) उज्जैन (ब) शाजापुर
(स) रतलाम (द) राजगढ़
उत्तर- (अ)

प्र. 30 पर्यावरणीय दृष्टि से कितने प्रतिशत भूमि पर वनों का होना आवश्यक है?
(अ) 23 प्रतिशत (ब) 27 प्रतिशत
(स) 33 प्रतिशत (द) 35 प्रतिशत
उत्तर- (स)

प्र. 31 मध्यप्रदेश में वनों का वर्गीकरण कितने आधारों पर किया गया है?
(अ) चार (ब) पांच
(स) छह (द) सात
उत्तर- (ब)

प्र. 32 मध्यप्रदेश के किन जिलों में ऊष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन पाये जाते हैं?
(अ) सागर, छिंदवाड़ा, छतरपुर
(ब) मण्डला, बालाघाट, सीधी
(स) श्योपुर, शिवपुरी, रतलाम
(द) इन्दौर, देवास, उज्जैन
उत्तर- (अ)

प्र. 33 ऊष्ण कटिबंधीय अर्द्धपर्णपाती वन पाये जाते हैं?
(अ) ये वन 100 से 150 सेमी. वर्षा के क्षेत्रों में पाये जाते हैं
(ब) इन वनों में साल, सागौन, बांस आदि की बहुलता होती है
(स) ये वन शिवपुरी रतलाम मन्दसौर जिलों में पाये जाते हैं
(द) ये वन 50 से 100 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्र में पाये जाते हैं
उत्तर- (अ) और (ब) दोनों

प्र. 34 निम्न जिला- समूह में सागौन के घने वन पाये जाते हैं?
(अ) मण्डला, बालाघाट, सीधी
(ब) उमरिया, शिवपुरी, निमाड़
(स) नर्मदापुरम, जबलपुर, छिंदवाड़ा
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं
उत्तर- (स)

प्र. 35 निम्न में से किस प्रकार के वन में शासन का कठोर नियंत्रण रहता है?
(अ) आरक्षित वन
(ब) संरक्षित वन
(स) अवर्गीकृत वन
(द) सभी
उत्तर- (अ)

प्र. 36 मध्यप्रदेश में सर्वाधिक वन किस प्रजाति के हैं?
(अ) साल (ब) सागौन
(स) खैर (द) धावड़ा
उत्तर- (ब)

प्र. 37 कीट लगने से किस वृक्ष को बड़ी संख्या में काटा गया था?
(अ) सागौन (ब) यूकेलिप्ट्स
(स) साल (द) खैर
उत्तर- (स)

प्र. 38 मध्यप्रदेश वन विकास निगम की स्थापना कब की गई थी?
(अ) 1972 (ब) 1973
(स) 1974 (द) 1975
उत्तर- (द)

प्र. 39 भारतीय वन अनुसंधान संस्थान देहरादून का क्षेत्रीय कार्यालय मध्यप्रदेश के किस स्थान पर है?
(अ) बालाघाट (ब) जबलपुर
(स) मण्डला (द) सीहोर
उत्तर- (ब)

प्र. 40 मध्यप्रदेश में वन प्रबंधन शिक्षा केन्द्र कहां स्थित है?
(अ) बालाघाट (ब) मण्डला
(स) बैतूल (द) छिंदवाड़ा
उत्तर- (अ)

प्र. 41 मध्यप्रदेश में वन पहरेदारों के ट्रेनिंग स्कूल कहां पर हैं?
(अ) अमरकंटक (ब) गोविंदगढ़
(स) लखनादौन (द) उपरोक्त सभी
उत्तर- (द)

प्र. 42 मध्यप्रदेश में वनों का राष्ट्रीयकरण किस वर्ष किया गया?
(अ) 1965 (ब) 1970
(स) 1975 (द) 1980
उत्तर- (ब)

प्र. 43 सबसे अधिक आरक्षित वन किस वन-वृत में आते हैं?
(अ) उज्जैन (ब) खण्डवा
(स) होशंगाबाद (द) इन्दौर
उत्तर- (ब)

प्र. 44 प्रदेश का वन राजिक महाविद्यालय कहां है?
(अ) मण्डला (ब) बैतूल
(स) जबलपुर (द) बालाघाट
उत्तर- (द)

प्र. 45 सागौन किस क्षेत्र में बहुतायत में उगता है?
(अ) हिमाचल
(ब) पश्चिमी घाट
(स) मध्य भारत
(द) असम तथा मेघालय
उत्तर- (स)

प्र. 46 निम्न में से किस वस्तु का प्रयोग औषधि निर्माण के लिये किया जाता है?
(अ) खैर (ब) साल
(स) सागौन (द) लाख
उत्तर- (अ)

प्र. 47 निम्नलिखित जिलों में से कौन-सा जिला घने वन आवरण वाले जिलों की श्रेणी में आता है?
(अ) मुरैना (ब) सीधी
(स) ग्वालियर (द) निमाड़
उत्तर- (ब)

- इमरतलाल खरते
(लेखक, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी विषयों पर लेखन करते हैं।)

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न

सामान्य ज्ञान

1. सतत् विकास के लिये आवश्यक है-
a. जैविक विविधता का संरक्षण
b. प्रदूषण का निरोध व नियंत्रण
c. निर्धनता को घटाना
d. उपर्युक्त सभी
उत्तर- d. उपर्युक्त सभी

2. निम्न में से किसका संबंध पर्यावरणीय सुरक्षा से नहीं है-
a. धारणीय विकास
b. गरीबी कम करना
c. वातानुकूलन
d. कागज के थैलों का प्रयोग
उत्तर- b. गरीबी कम करना

3. प्रथम पृथ्वी शिखर सम्मेलन कहां हुआ-
a. वाशिंगटन
b. जेनेवा
c. रियो डी जेनेरियो
d. स्युनर्स आयर्स
उत्तर- c. रियो डी जेनेरियो

4. संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का मुख्यालय कहां है-
a. द हेग
b. नैरोबी
c. न्यूयॉर्क
d. वाशिंगटन डी.सी.
उत्तर- b. नैरोबी

5. U.N.E.P. का गठन कब हुआ -
a. 1970
b. 1960
c. 1950
d. 1972
उत्तर- d. 1972

6. ग्रीन पीस इंटरनेशनल का मुख्यालय अवस्थित है -
a. एम्सटर्डम में
b. कैनबरा में
c. ओटावा में
d. नागासाकी में
उत्तर- a. एम्सटर्डम में

7. विश्व मौसम विज्ञान संगठन का मुख्यालय अवस्थित है-
a. जिनेवा
b. रोम
c. सिडनी
d. टोक्यो
उत्तर- a. जिनेवा

8. 'इकोमार्क' किन भारतीय उत्पादों को दिया जाता -
a. शुद्ध व मिलावट रहित हों
b. प्रोटीन समृद्ध हों
c. पर्यावरण के प्रति मैत्रीपूर्ण हों।
d. आर्थिक दृष्टि से व्यवहार्य हों
उत्तर- c. पर्यावरण के प्रति मैत्रीपूर्ण हों।

9. 'हरित विकास' (ग्रीन डेवलपमेंट) के लेखक हैं -
a. एम.जे. ब्रैडशा
b. एम. निकोल्सन
c. आर.एम. व्हीटेकर
d. डब्ल्यु.एम. एडम्स
उत्तर- d. डब्ल्यु.एम. एडम्स

10. पर्यावरण संरक्षण के लिये 'ग्रीन आर्मी' को किसने प्रारंभ किया -
a. जापान b. चीन
c. ऑस्ट्रेलिया d. इजिप्ट
उत्तर- c. ऑस्ट्रेलिया

11. पृथ्वी का सर्वाधिक वृहद पारिस्थितीक तंत्र निम्न में से कौन है -
a. जलमंडल
b. जीवोम
c. स्थलमंडल
d. जैवमंडल
उत्तर- d. जैवमंडल

12. ग्रीनवाश इंगित करता है?
a. झुमकृषि को प्रोदन्नत्त
b. नदी जल का शुद्धीकरण
c. हरियाली हटाना
d. पर्यावरण संरक्षण का पूर्ण वादा करना
उत्तर- d. पर्यावरण संरक्षण का पूर्ण वादा करना

13. पारिस्थितिकी निम्न में से किसके मध्य पारस्परिक संबंधों का अध्ययन है -
a. जीव तथा वातावरण
b. मनुष्य तथा वन
c. मृदा तथा जल
d. उपर्युक्त में से कोई नहीं
उत्तर- a. जीव तथा वातावरण

14. निम्न में से कौन सा कृत्रिम पारिस्थितिकी तंत्र है -
a. धान का खेत
b. वन
c. घास का मैदान
d. झील
उत्तर- a. धान का खेत

15. सबसे अधिक स्थिर पारिस्थितिकी तंत्र कौन सा है -
a. सागरीय (महासागरीय)
b. वन
c. पर्वतीय
d. मरुस्थल
उत्तर- a. सागरीय (महासागरीय)

16. निम्न में से किसका पारिस्थितिकी संतुलन से संबंध नहीं है -
a. जल प्रबंधन
b. वनरोपण
c. औद्योगिक प्रबंधन
d. वन्यजीव सुरक्षा
उत्तर- c. औद्योगिक प्रबंधन

17. प्रथम पोषक स्तर के अंतर्गत आते हैं -
a. शाकाहारी जंतु
b. मांसाहारी जंतु
c. सर्वभक्षी जंतु
d. हरित पादप
उत्तर- d. हरित पादप

18. जैविक तथा अजैविक संघटकों के मध्य बिचौलिया का कार्य करते हैं -
a. परजीवी
b. वियोजक
c. उत्पादक
d. (a) और (b) दोनों
उत्तर- d. (a) और (b) दोनों

19. पारिस्थितिकी तंत्र का प्रेरक बल होता है -
a. कार्बोहाइड्रेट
b. बायोमास
c. कार्बन
d. सौर ऊर्जा
उत्तर- d. सौर ऊर्जा

20. पारिस्थितिकी पादप के माप की इकाई है-
a. भूमंडलीय हेक्टेयर
b. नैनोमीटर
c. हार्पस क्युबिक फुट
d. क्युबिक टन
उत्तर- a. भूमंडलीय हेक्टेयर

21. दो भिन्न समुदायों के बीच का संक्रमित क्षेत्र कहलाता है -
a. इकोटाइप
b. इकेड़
c. इकोस्फीयर
d. इकोटोन
उत्तर- d. इकोटोन

22. निम्न में से कौन जल निकाय में घनत्व की प्रवणता को दर्शाती है -
a. एकोक्लाइन
b. क्लोरीन
c. पिकनोक्लाइन
d. थर्मोक्लाइन
उत्तर- c. पिकनोक्लाइन

23. भारत द्वारा भूमि क्षरण तटस्थता प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है -
a. 2025 तक
b. 2030 तक
c. 2035 तक
d. 2040 तक
उत्तर- b. 2030 तक

24. साइलेंट वैली परियोजना किस राज्य से संबंधित है-
a. उत्तराखंड
b. केरल
c. हिमाचल प्रदेश
d. तमिलनाडु
उत्तर- b. केरल

25. सर्वाधिक जैव विविधता पाई जाती है-
a. टुण्ड्रा में
b. शंकुधारी वनों में
c. ऊष्णकटिबंधीय वर्षा वनों में
d. शीतोष्ण वनों में
उत्तर- c. ऊष्णकटिबंधीय वर्षा वनों में

26. भारत में जैव विविधता की दृष्टि से संतृप्त क्षेत्र निम्न में से कौन सा है -
a. पूर्वी घाट
b. पश्चिमी घाट
c. थार का रेगिस्तान
d. बंगाल खाड़ी
उत्तर- b. पश्चिमी घाट

27. भारत के ''जैविक विविध हॉटस्पॉट'' के रूप में पहचाना जाता है -
a. सुंदरबन
b. सतपुड़ा
c. मानस
d. चेरापूंजी
उत्तर- a. सुंदरबन

28. जैव विविधता के ह्रास का मुख्य कारण है -
a. आवासीय प्रदूषण
b. विदेशी प्रजातियों का समावेश
c. अत्यधिक दोहन
d. प्राकृतिक आवासीय विनाश
उत्तर- d. प्राकृतिक आवासीय विनाश

29. टुमारोज बायोडायवर्सिटी पुस्तक के लेखक हैं -
a. वंदना शिवा
b. वी.के. शर्मा
c. एम.एच. स्वामीनाथन
d. मेघा पाटेकर
उत्तर- a. वंदना शिवा

30. जलवायु परितर्वन का कारण है -
a. ग्रीन हाउस गैसें
b. ओजोन परत का क्षरण
c. प्रदूषण
d. उपर्युक्त सभी
उत्तर- d. उपर्युक्त सभी

31. भारत में मैंग्रोव (ज्वारीय वन) वनस्पति मुख्यतः पाई जाती है -
a. मालाबार तट
b. सुंदरबन
c. कच्छ का रन
d. दंडकारण्य
उत्तर- b. सुंदरबन

32. भारत का सबसे पहला जैविक खेती पर आधारित राज्य कौन सा है -
a. मध्यप्रदेश
b. केरल
c. सिक्किम
d. अरुणाचल प्रदेश
उत्तर- c. सिक्किम

33. चैर्नोबिल दुर्घटना संबंधित है -
a. नाभिकीय दुर्घटना
b. भूकंप
c. बाढ़
d. अम्लीय वर्षा
उत्तर- a. नाभिकीय दुर्घटना

34. प्रतिष्ठित 'टायलर पुरस्कार' किस क्षेत्र में प्रदान किया जाता है -
a. नाटक
b. महिलाओं का अधिकार
c. बच्चों का अधिकार
d. पर्यावरण सुरक्षा
उत्तर- d. पर्यावरण सुरक्षा

35. भारत के प्रधानमंत्री ने 'स्वच्छ भारत अभियान' आधिकारिक रूप से कब प्रारंभ किया-
a. स्वतंत्रता दिवस
c. गणतंत्र दिवस
c. गांधी जयंती
d. पर्यावरण दिवस
उत्तर- c. गांधी जयंती

36. मेधा पाटकर का नाम किस आंदोलन के साथ जुड़ा है -
a. चिपको आंदोलन
b. नर्मदा बचाओ आंदोलन
c. नक्सलवादी आंदोलन
d. उपर्युक्त में से कोई नहीं
उत्तर- b. नर्मदा बचाओ आंदोलन

37. निम्न में से कौन मानवजनित जीवोम का एक उदाहरण है-
a. जलतंत्र
b. घास का मैदान
c. वर्षा वन
d. फसली भूमि
उत्तर- d. फसली भूमि

38. भारत का राष्ट्रीय सामुद्रिक पार्क स्थित है-
a. कच्छ में
b. सुंदरबन में
c. चिल्का झील में
d. निकोबार द्वीप समूह में
उत्तर- a. कच्छ में

39. निम्नलिखित में से कौन सदाबहार फल वृक्ष है-
a. सेब
b. बादाम
c. आड़ु
d. लोकाट
उत्तर- d. लोकाट

40. सुनामी की उत्पत्ति किसके द्वारा होती है -
A. पृथ्वी की ऊपरी परत के सिकुड़ने से
B. चक्रवातों से
C. समुद्र के भीतर उत्पन्न होने वाले भूकंप से
D. ज्वार - भाटे से
उत्तर- C. समुद्र के भीतर उत्पन्न होने वाले भूकंप से

41. विज्ञान के निम्नलिखित क्षेत्रों में से किस एक में बोरलॉग पुरस्कार दिया जाता है -
a. औषधी
b. अंतरिक्ष अनुसंधान
c. कृषि
d. परमाणु भौतिकी
उत्तर- c. कृषि

42. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इकोलॉजी एंड एनवायरमेंट स्थित है -
a. नई दिल्ली
b. तिरुवनंतपुरम
c. कोलकत्ता
d. जोधपुर
उत्तर- a. नई दिल्ली

43. केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) अवस्थित है -
a. अहमदाबाद में
b. बेंगलुरू में
c. हैदराबाद में
d. जोधपुर में
उत्तर- d. जोधपुर में

44. पीने के पानी को शुद्ध करने के लिये, निम्नांकित गैसों में से किसे प्रयोग में लाया जाता है -
a. सल्फर डाइऑक्साइड
b. क्लोरीन
c. फ्लोरीन
d. कार्बन-डाई-ऑक्साइड
उत्तर- b. क्लोरीन

45. हवा में तैरते हुये श्वसनीय सूक्ष्म कणों का आकार होता है -
a. 7 माइक्रोन से अधिक
b. 6 माइक्रोन से अधिक
c. 5 माइक्रोन से अधिक
d. 5 माइक्रोन से कम
उत्तर- d. 5 माइक्रोन से कम

46. निम्न में कौन सा प्रदूषण कारक जैवीय रूप से अपघटित होता है -
a. एस्बेस्टस
b. डीडीटी
c. प्लास्टिक
d. जैविक अपशिष्ट
उत्तर- d. जैविक अपशिष्ट

47. स्वचालित वाहन निर्वात्तक का सबसे अविषालु धातु प्रदूषक है -
a. कॉपर
b. लेड
c. कैडमियम
d. मरकरी
उत्तर- b. लेड

48. नाभिकीय ऊर्जा का उपयोग प्रायः कारक है -
a. वायु प्रदूषण
b. जल प्रदूषण
c. ऊष्मीय प्रदूषण
d. ध्वनि प्रदूषण
उत्तर- c. ऊष्मीय प्रदूषण

- श्रृद्धा सुमन
(लेखिका, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी विषयों पर लेखन करती हैं)

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न

अर्थशास्त्र

1. एडम स्मिथ ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभों को समझाने के लिये किस प्रकार की लागतों का वर्णन किया था -
(अ) निरपेक्ष लागत अंतर
(ब) सापेक्ष लागत अंतर
(स) निरपेक्ष एवं सापेक्ष दोनों लागतें
(द) उपरोक्त सभी।
उत्तर- (अ)
व्याख्या - इस लागत अंतर के अनुसार एडम स्मिथ यह बताते हैं कि दो देशों के बीच व्यापार उस स्थिति में लाभप्रद होगा, जब दोनों देश अलग-अलग वस्तुओं के उत्पादन में एक दूसरे की तुलना में निरपेक्ष रूप से लाभ प्राप्त करते हों।

2. तुलनात्मक लागत का सिद्धांत किसने प्रतिपादित किया था -
(अ) एडम स्मिथ
(ब) डेविड रिकार्डो
(स) जे.एस. मिल
(द) माल्थस।
उत्तर- (ब)

3. रिकार्डो का तुलनात्मक लागत का सिद्धांत किस पर आधारित है -
(अ) श्रम के मूल्य
(ब) पूंजी के मूल्य
(स) भूमि के मूल्य
(द) उत्पादन मूल्य।
उत्तर- (अ)

4. रिकार्डो का तुलनात्मक लागत सिद्धांत कितने देशों का मॉडल है -
(अ) एक
(ब) दो
(स) तीन
(द) चार।
उत्तर- (ब)
व्याख्या - यह सिद्धांत दो देश और दो वस्तुओं के सरल मॉडल पर आधारित है।

5. रिकार्डो के तुलनात्मक लागत सिद्धांत में उत्पत्ति के साधनों में गतिशीलता होती है -
(अ) पूर्ण
(ब) अपूर्ण
(स) अनिश्चित
(द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर- (अ)

6. उत्पादन के साधनों में गतिशीलता के अभाव के कारण विभिन्न देशों के -
(अ) मजदूरों की मजदूरी एवं ब्याज की दरों में विभिन्नता पाई जाती है
(ब) मजदूरों की मजदूरी एवं ब्याज की दरों में समानता पाई जाती है
(स) मजदूरी समान होती है तथा ब्याज दरें भिन्न होती हैं
(द) मजदूरी भिन्न होती है तथा ब्याज दरें समान रहती हैं।
उत्तर- (अ) इसी विभिन्नता के कारण अंतर्राष्ट्रीय व्यापार होता है।

7. रिकार्डो के दृष्टिकोण में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार इसलिये होता है, क्योंकि -
(अ) विभिन्न देशों को भिन्न-भिन्न वस्तुओं के उत्पादन में भिन्न-भिन्न लाभ प्राप्त होता है
(ब) सभी देशों को एक समान लाभ प्राप्त होता है
(स) उपरोक्त दोनों कथन सत्य हैं
(द) उपरोक्त दोनों कथन असत्य हैं।
उत्तर- (अ)

8. रिकार्डो के सिद्धांत की मान्यतायें हैं -
(अ) साधनों में पूर्ण गतिशीलता
(ब) पूर्ण रोज़गार
(स) वस्तु विनिमय प्रणाली का प्रचलन
(द) उपरोक्त सभी।
उत्तर- (द)
व्याख्या - इन मान्यताओं के अतिरिक्त परिवहन लागतों का भी अभाव होता है।

9. वणिकवादी विचारधारा का विरोध करने वाली विचारधारा को किस नाम से जाना जाता है -
(अ) आधुनिक विचारधारा
(ब) प्रतिष्ठित विचारधारा
(स) हेक्सचर एवं ओहलिन की विचारधारा
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
उत्तर- (ब)

10. किन अर्थशास्त्रियों ने तुलनात्मक लागत सिद्धांत की आनुभविक एवं सांख्यिकीय जांच प्रस्तुत की है -
(अ) जी.डी.ए. मैकडगाल
(ब) फोर्शीमर
(स) प्रो. क्रेविस
(द) उपरोक्त सभी।
उत्तर- (द)

11. तुलनात्मक लागत के सिद्धांत अर्द्धविकसित देशों में लागू होते हैं -
(अ) सैद्धांतिक रूप में
(ब) व्यावहारिक रूप में
(स) उपरोक्त दोनों में
(द) किसी भी रूप में लागू नहीं होते हैं।
उत्तर- (द)

12. किस अर्थशास्त्री ने तुलनात्मक लागत सिद्धांत का रूपांतर मौद्रिक लागतों के अंतर्गत किया है -
(अ) मैकडगाल
(ब) जे.एस. मिल
(स) प्रो. टॉसिग
(द) हैबरलर।
उत्तर- (स)

13. पारस्परिक मांग के सिद्धांत का प्रतिपादन किसके द्वारा किया गया -
(अ) जे.एस. मिल
(ब) हैबरलर
(स) रिकार्डो
(द) टॉसिग।
उत्तर- (अ)

14. रिकार्डो का तुलनात्मक लागत का सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के किस पक्ष को सम्मिलित करता है -
(अ) मांग
(ब) पूर्ति
(स) दोनों
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
उत्तर- (ब)

15. निम्न में से सही कथन पर निशान लगाइये -
(अ) जब राष्ट्रीय आधार पर श्रम विभाजन होने लगता है, तब अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की स्थिति उत्पन्न हो जाती है
(ब) जब अंतर्राष्ट्रीय आधार पर श्रम विभाजन होने लगता है तो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार उत्पन्न होता है
(स) जब अंतर्राष्ट्रीय आधार पर श्रम विभाजन होने लगता है, तब अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की स्थिति समाप्त होने लगती है
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
उत्तर- (ब)

16. एडम स्मिथ द्वारा प्रतिपादित स्वतंत्र व्यापार का केन्द्र बिन्दु है -
(अ) श्रम विभाजन
(ब) राजकीय नियंत्रण
(स) मांग एवं पूर्ति की शक्ति
(द) विदेशी सहयोग
उत्तर- (अ)

17. जब देश अवमूल्यन करके निर्यात अधिक तथा आयात कम कर लेता है तो उसके भुगतान संतुलन की प्रतिकूलता -
(अ) समाप्त होकर साम्य की ओर बढ़ने लगती है
(ब) बढ़ जाती है
(स) समाप्त हो जाती है
(द) उपरोक्त में से कोई भी।
उत्तर- (अ)

18. एक देश जब अपने अति उत्पादन से छुटकारा पाने के लिये दूसरे देश में अपना माल बहुत कम कीमतों में बेच देता है और उस हानि को अपने देश में ऊंची कीमतें लेकर पूरी करता है तो इस पूरी प्रक्रिया को किस तकनीकी शब्द से जाना जाता है -
(अ) अवमूल्यन
(ब) अधिमूल्यन
(स) राशिपातन
(द) विनिमय नियंत्रण।
उत्तर- (स)

19. राशिपातन तभी संभव है - जब
(अ) जब दोनों बाजारों में पूर्ण प्रतियोगिता हो
(ब) जब विश्व बाजार में मांग की लोच अधिक व आंतरिक बाजार में मांग की लोच कम हो
(स) जब दोनों बाजारों में एकाधिकारी फर्म हो
(द) उपरोक्त में से किसी भी परिस्थिति में राशिपातन नहीं हो सकता है।
उत्तर- (ब)

20. हैबरलर द्वारा प्रस्तुत अवसर लागत सिद्धांत लागू होता है -
(अ) स्थिर साधन अनुपातों पर
(ब) उत्पत्ति वृद्धि नियम पर
(स) उत्पत्ति समता नियम पर
(द) परिवर्ती साधन अनुपातों पर।
उत्तर- (द)

21. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ किससे प्रभावित होते हैं -
(अ) व्यापार की शर्तों से
(ब) लागतों के तुलनात्मक अंतर से
(स) विक्रय संगठन की क्षमता से
(द) उपरोक्त सभी से।
उत्तर- (द)

22. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में लाभ की मात्रा दोनों देशों के -
(अ) उत्पादन व्यय की समानता पर निर्भर करती है
(ब) उत्पादन व्यय के अंतर पर निर्भर करती है
(स) श्रम की गतिशीलता पर निर्भर करती है
(द) उपरोक्त सभी।
उत्तर- (ब)

23. विदेशी व्यापार के कारण प्रत्येक देश केवल उसी वस्तु का उत्पादन करता है जिसे वह -
(अ) न्यूनतम लागत पर उत्पादित कर सके
(ब) बिना लागत पर उत्पादित कर सके
(स) अधिकतम लागत पर उत्पादित कर सके
(द) उपरोक्त में से कोई भी।
उत्तर- (अ)

24. रिकार्डो के तुलनात्मक लागत सिद्धांत में क्या-क्या सुधार बाद के अर्थशास्त्रियों द्वारा किये गये -
(अ) मांग की लोच को महत्व देना
(ब) लागतों को मुद्रा में व्यक्त करना
(स) उत्पत्ति के नियमों को महत्व देना
(द) उपरोक्त सभी।
उत्तर- (द)

25. हेक्सचर ओहलिन प्रमेय में -
(अ) दो साधन लिये गये
(ब) दो वस्तुयें ली गईं
(स) दो राष्ट्र लिये गये
(द) उपरोक्त सभी सम्मिलित किये गये।
उत्तर- (द)

26. अवसर लागत से तात्पर्य है -
(अ) एक वस्तु का उत्पादन प्राप्त करने के लिये अन्य वस्तु के वैकल्पिक उत्पादन त्याग
(ब) उसी वस्तु का वैकल्पिक उपयोग
(स) उपरोक्त दोनों
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
उत्तर- (अ)

27. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केवल -
(अ) लागतों में समान अंतर की स्थिति में ही संभव हो सकता है
(ब) लागतों में अंतर की स्थिति में ही संभव हो सकता है
(स) श्रम की गतिशीलता की स्थिति में ही संभव हो सकता है
(द) परिवर्तनशील लागत की स्थिति में संभव हो सकता है।
उत्तर- (ब)

28. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अवसर लागत का सिद्धांत किस अर्थशास्त्री ने दिया है -
(अ) रिकार्डो
(ब) ओहलिन
(स) हैबरलर
(द) मार्शल।
उत्तर- (स)

29. हैबरलर के अनुसार दो वस्तुओं के बीच विनिमय अनुपात किससे व्यक्त किया जाता है -
(अ) प्रतिस्थापन वक्र
(ब) उत्पादन संभावना वक्र
(स) उपरोक्त दोनों
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
उत्तर- (स)

30. प्रस्ताव वक्र का प्रतिपादित किसने किया -
(अ) रिकार्डो
(ब) ओहलिन
(स) हैबरलर
(द) मार्शल
उत्तर- (द)

31. प्रो. हैबरलर के अनुसार घटती अवसर लागत या बढ़ते उत्पत्ति के नियम की दशा में उत्पादन संभावना वक्र मूल बिंदू के प्रति कैसा होता है -
(अ) नतोदर (Concave)
(ब) उन्नतोदर (Convex)
(स) अनिश्चित
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
उत्तर- (ब)

32. "अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अंतर्क्षेत्रीय व्यापार का ही एक विशिष्ट रूप है।" यह कथन किसका है -
(अ) रिकार्डो
(ब) ओहलिन
(स) हैबरलर
(द) मार्शल।
उत्तर- (ब)

33. हैक्सचर ओहलिन के अनुसार दो देशों के बीच व्यापार वस्तुओं की लागतों में सापेक्षिक अंतर के कारण होता है यह अंतर उत्पन्न होता है क्योंकि -
(अ) उत्पत्ति के साधनों की कीमत में सापेक्षिक अंतर होता है
(ब) विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में उत्पत्ति के साधनों की आवश्यकता में भी सापेक्षिक भिन्नता होती है
(स) उपरोक्त दोनों
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं।
उत्तर- (स)

34. हैक्सचर ओहलिन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत की व्यवहारिकता की जांच किस अर्थशास्त्री द्वारा की गई है -
(अ) लियोन्तिफ
(ब) स्टोप्लर
(स) सैम्युलसन
(द) क्रेविस
उत्तर- (अ)
व्याख्या - इसे लियोन्तिफ विरोधाभास भी कहा जाता है।

- डॉ. माया राठी
(लेखिका, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या महाविद्यालय, भोपाल में अर्थशास्त्र की प्राध्यापिका हैं।)

खेल चर्चा

मनीष ने पैरा निशानेबाजी विश्वकप में जीते दो पदक

नई दिल्ली, भारतीय निशानेबाज मनीष नरवाल ने पैरा निशानेबाजी विश्वकप में शानदार प्रदर्शन करते हुए दो रजत पदक जीते हैं। प्रतियोगिता में मनीष ने पुरुषों की दस मीटर एयर पिस्टल एसएच-1 व्यक्तिगत स्पर्धा में 236.7 अंकों के साथ रजत पदक जीता। इसके अलावा मनीष ने रुद्रांश खंडेलवाल और संजीव गिरी के साथ मिलकर पी-1 पुरुष टीम 10 मीटर एयर पिस्टल एसएच-1 स्पर्धा में भी रजत पदक जीता। मनीष के अलावा रुबीना फ्रांसिस ने भी इस प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीता है।

भारतीय ओलिंपिक संघ ने भंग की तदर्थ समिति

नई दिल्ली, भारतीय ओलिंपिक संघ (आईओए) ने भारतीय कुश्ती महासंघ का कामकाज देखने के लिए बनाई गई भूपेंद्र सिंह बाजवा की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय तदर्थ समिति को भंग कर दिया है। आईओए ने कहा कि कुश्ती की वैश्विक संस्था यूनाइटेड वर्ल्ड रेसलिंग द्वारा भारतीय कुश्ती महासंघ का निलंबन रद्द होने के बाद तदर्थ समिति की आवश्यकता नहीं है।

रणजी ट्रॉफी

मुंबई ने 42वीं बार जीता खिताब

मुंबई, घरेलू क्रिकेट की सबसे सफल टीम मुंबई ने एक बार फिर रणजी ट्रॉफी में अपनी बादशाहत बरकरार रखते हुए 42वीं बार खिताब अपने नाम किया है। मुंबई ने रणजी ट्रॉफी के फाइनल में विदर्भ को 169 रनों से हराया। रणजी ट्रॉफी के इतिहास में यह पहला अवसर है, जब एक ही राज्य की दो टीमें फाइनल में पहुंची हैं।

मैच में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी मुंबई की टीम को सलामी बल्लेबाज पृथ्वी शॉ और भूपेन लालवानी ने 81 रनों की साझेदारी कर टीम को मजबूत शुरुआत दिलाई, लेकिन इन दोनों बल्लेबाजों के आउट होने के बाद विदर्भ के गेंदबाजों ने वापसी करते हुए 111 रन के स्कोर पर 6 विकेट झटक लिए। इसके बाद शार्दुल ठाकुर ने 75 रनों की बेहतरीन पारी खेलकर टीम को 224 रन तक पहुंचाया। पहली पारी में विदर्भ की बल्लेबाजी निराशाजनक रही। टीम के चार बल्लेबाज ही दहाई का आंकड़ा छू सके, जिसके कारण विदर्भ की पारी 105 रनों पर सिमट गई।

पहली पारी के आधार पर 119 रनों की बढ़त हासिल करने वाली मुंबई टीम के बल्लेबाजों ने दूसरी पारी में जमकर रन बटोरे। टीम के युवा बल्लेबाज मुशीर खान ने बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए 136 रनों की पारी खेली। कप्तान अजिंक्य रहाणे (73) और श्रेयस अय्यर (95) ने मुशीर का बखूबी साथ निभाया। इनके अलावा शम्स मुलानी

- रणजी ट्रॉफी के इतिहास की सबसे सफल टीम मुंबई है।
- मुंबई ने 48 बार रणजी ट्रॉफी का फाइनल खेला है, इनमें से 42 बार खिताब जीता है।
- विदर्भ की टीम तीसरी बार इस टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंची थी, इससे पहले टीम दो बार विजेता बनी है।
- मुंबई के खिलाड़ी तनुष कोटियन ने इस टूर्नामेंट में 502 रन बनाये और 29 विकेट लिए हैं।

(50) ने भी अर्धशतकीय पारी खेली। मुंबई ने दूसरी पारी में 418 रन बनाये और विदर्भ को जीत के लिए 538 रनों का विशाल लक्ष्य दिया।

लक्ष्य का पीछा करने उतरे विदर्भ के बल्लेबाजों ने दूसरी पारी में जुझारुपन दिखाया और डटकर बल्लेबाजी की। कप्तान अक्षय वाडकर एक छोर पर टिके रहे और 102 रनों की पारी खेली। उनके अलावा करुण नायर (74) और हर्ष दुबे (65) ने भी संघर्षपूर्ण पारियां खेलीं। इन बल्लेबाजों के प्रयासों के बावजूद विदर्भ की टीम 134.2 ओवरों में 368 रन बनाकर ऑल आउट हो गई।

मुंबई को मिलेगी दोगुनी इनामी राशि

मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीए) ने रणजी ट्रॉफी का खिताब जीतने वाली अपनी टीम के लिए बंपर घोषणा करते हुए इनामी राशि को दोगुना कर दिया है। टीम को रणजी ट्रॉफी जीतने पर 5 करोड़ रुपये मिले थे, इस घोषणा के बाद टीम के खिलाड़ियों को अब 10 करोड़ रुपये मिलेंगे।

रचिन रवींद्र को मिला रिचर्ड हेडली मेडल

नई दिल्ली, न्यूजीलैंड क्रिकेट बोर्ड ने युवा क्रिकेटर रचिन रवींद्र को वर्ष के सर्वश्रेष्ठ पुरुष क्रिकेटर के लिए रिचर्ड हेडली मेडल प्रदान किया है। यह मेडल न्यूजीलैंड क्रिकेट बोर्ड द्वारा एक कैलेंडर वर्ष में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले क्रिकेटर को दिया जाता है। 24 वर्षीय रचिन यह मेडल हासिल करने वाले सबसे युवा खिलाड़ी बन गए हैं। रचिन ने वर्ष 2023 में भारत में खेले गए आईसीसी वन-डे विश्वकप में ऑलराउंडर प्रदर्शन करते हुए 10 मैचों में तीन शतक सहित 578 रन बनाये, साथ ही 5 विकेट भी झटके थे। रचिन के अलावा महिला क्रिकेटर एमिलिया केर ने सर्वश्रेष्ठ महिला क्रिकेटर के लिए लगातार दूसरे वर्ष डेबी हॉकले मेडल जीता है।

आकिब जावेद बने श्रीलंका के गेंदबाजी कोच

कोलंबो, श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड ने पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज आकिब जावेद को श्रीलंकाई क्रिकेट टीम का नया गेंदबाजी कोच नियुक्त किया है। आकिब की नियुक्ति इस वर्ष खेले जाने वाले आईसीसी ट्वेंटी-20 विश्वकप तक के लिए की गई है। पाकिस्तान के लिए 163 वन-डे और 22 टेस्ट मैच खेल चुके आकिब ने 182 वन-डे और 54 टेस्ट विकेट लिए हैं। आकिब इससे पहले पाकिस्तान और संयुक्त अरब अमीरात की क्रिकेट टीमों के कोच भी रह चुके हैं। वह वर्ष 1992 में आईसीसी वन-डे विश्वकप जीतने वाली पाकिस्तान क्रिकेट टीम के सदस्य रहे हैं।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने पहली बार जीता डब्ल्यूपीएल

नई दिल्ली, गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के दम पर रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) का खिताब जीत लिया है। डब्ल्यूपीएल के फाइनल में बेंगलुरु ने दिल्ली कैपिटल्स को 8 विकेट से हराया। बेंगलुरु ने पहली बार यह टूर्नामेंट जीता है।

मैच में दिल्ली कैपिटल्स ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की। सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा (44) और मेग लेनिंग (23) ने दिल्ली को मजबूत शुरुआत दिलाई और पहले विकेट के लिए 64 रन जोड़े। इस जोड़ी के टूटने के बाद दिल्ली की पारी बिखर गई। मॉलिनेक्स ने 3 और श्रेयंका ने 4 विकेट झटककर दिल्ली को 113 रनों पर रोक दिया।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी बेंगलुरु की टीम को स्मृति मंधाना और सोफी डिवाइन

ने शानदार शुरुआत दिलाई। मंधाना ने 31 रन बनाये, वहीं डिवाइन ने 32 रनों की पारी खेली। इनके बाद एलिस पेरी (35) और रिचा घोष (17) ने नाबाद साझेदारी कर 19.3 ओवरों में लक्ष्य हासिल कर लिया।

- बेंगलुरु की श्रेयंका ने सबसे ज्यादा 13 विकेट लेकर पर्पल कैप जीती।
- बेंगलुरु की एलिस पेरी ने सबसे ज्यादा रन (347) बनाये और ऑरेंज कैप जीती।

सरफराज और जुरेल केंद्रीय अनुबंध में हुए शामिल

मुंबई, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में पदार्पण करने वाले सरफराज खान और ध्रुव जुरेल को केंद्रीय अनुबंध सूची में शामिल किया। इस सीरीज में इन दोनों युवा खिलाड़ियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया था। बीसीसीआई ने कहा कि इन दोनों खिलाड़ियों ने मौजूदा सत्र में तीन टेस्ट मैच खेलने के मानदंडों को पूरा कर लिया है। इन दोनों खिलाड़ियों को अनुबंध सूची में ग्रेड-सी में शामिल किया गया है। बीसीसीआई के नियमों के अनुसार अगर कोई खिलाड़ी एक सत्र में तीन टेस्ट मैच खेल लेता है, तो वह वार्षिक अनुबंध में ग्रेड-सी में स्वत: शामिल हो जाएगा। इस ग्रेड में खिलाड़ियों को एक करोड़ रुपये वार्षिक मिलते हैं। सरफराज और जुरेल को शामिल करने के बाद अनुबंध सूची में शामिल खिलाड़ियों की संख्या बढ़कर 32 हो गई है।

जोनाथन क्रिस्टी ने जीता ऑल इंग्लैंड बैडमिंटन खिताब

लंदन, इंडोनेशिया के अनुभवी शटलर जोनाथन क्रिस्टी ने ऑल इंग्लैंड बैडमिंटन चैम्पियनशिप का खिताब अपने नाम किया है। क्रिस्टी ने टूर्नामेंट में पुरुष एकल वर्ग के फाइनल में एंथोनी सिनिसुका गिंटिंग को 21-15, 21-14 से हराया।

सेमीफाइनल में भारत के लक्ष्य सेन को हराने वाले क्रिस्टी ने फाइनल में भी शानदार प्रदर्शन किया। मैच के पहले गेम में क्रिस्टी ने गिंटिंग को 21-15 से हराया। दूसरे गेम में भी गिंटिंग वापसी करने में असफल रहे और क्रिस्टी ने 21-14 से गेम जीतकर खिताब पर कब्जा जमाया। टूर्नामेंट में महिला एकल वर्ग के फाइनल में केरोलिना मारिन ने अकाने यामागुची को हराकर खिताब जीता। फाइनल मैच के पहले गेम में दोनों खिलाड़ियों के बीच कांटे की टक्कर हुई। मारिन ने यह गेम 26-24 से जीता। दूसरे गेम में भी मारिन 11-1 से आगे थीं, तभी यामागुची चोट के कारण मैच से हट गईं।

गुलवीर ने 10 हजार मीटर दौड़ में बनाया नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड

कैलिफोर्निया, भारत के लंबी दूरी के धावक गुलवीर सिंह ने अमेरिका में आयोजित द टेन एथेलेटिक्स प्रतियोगिता में पुरुषों की 10 हजार मीटर दौड़ में 16 वर्ष पुराना राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ दिया है। गुलवीर ने प्रतियोगिता में अपनी हीट में दूसरा स्थान हासिल किया। एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता गुलवीर ने 10 हजार मीटर की रेस 27 मिनट 41.81 सेकेंड में पूरी कर सुरेंद्र सिंह का राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा। सुरेंद्र ने वर्ष 2008 में यह दौड़ 28 मिनट 02.89 सेकेंड में पूरी की थी। इस प्रदर्शन के बावजूद गुलवीर पेरिस ओलिंपिक के लिए क्वालिफाई नहीं कर सके।

इंडियन वेल्स मास्टर्स

अलकराज लगातार दूसरी बार बने चैम्पियन

कैलिफोर्निया, स्पेन के युवा टेनिस खिलाड़ी कार्लोस अलकराज ने लगातार दूसरी बार इंडियन वेल्स मास्टर्स टेनिस टूर्नामेंट का खिताब अपने नाम किया है। टूर्नामेंट में पुरुष एकल वर्ग के फाइनल में अलकराज ने रूस के डेनिल मेदवेदेव को सीधे सेटों में 7-6 (7-5), 6-1 से हराया।

मैच में अलकराज ने दमदार खेल दिखाया। पहले सेट की शुरुआत में मेदवेदेव ने बढ़त बनाते हुए अलकराज को दबाव में ला दिया। एक समय मेदवेदेव 3-1 से आगे चल रहे थे, इसके बाद अलकराज ने शानदार वापसी की और लगातार प्वाइंट्स अर्जित कर सेट को टाइब्रेकर में ला दिया। टाइब्रेकर में भी दोनों खिलाड़ियों के बीच रोमांचक मुकाबला देखने को मिला, जिसमें अलकराज ने 7-5 से बाजी जीती। दूसरे सेट में मेदवेदेव से वापसी की उम्मीद थी, लेकिन

- अलकराज के टेनिस कॅरियर का यह 13वां एटीपी खिताब है।
- अलकराज ने दूसरी बार जीता है इंडियन वेल्स टूर्नामेंट।
- ईगा स्वितेक ने भी दूसरी बार जीता है इंडियन वेल्स का खिताब।

अलकराज ने उन्हें वापसी का कोई मौका नहीं दिया।

महिला वर्ग में ईगा स्वितेक बनीं विजेता

इंडियन वेल्स टूर्नामेंट में महिला एकल वर्ग का खिताब पोलैंड की ईगा स्वितेक ने जीता है। स्वितेक ने फाइनल में ग्रीस की मारिया सकारी को लगातार सेटों में 6-4, 6-0 से हराया। फाइनल में स्वितेक के शानदार खेल के सामने मारिया सकारी ज्यादा देर टिक नहीं पाईं। मैच में स्वितेक ने पहला सेट 6-4 से जीता, इसके बाद दूसरे सेट में उन्होंने बिना किसी चुनौती के आराम से जीत दर्ज की।

टूर्नामेंट में पुरुष युगल वर्ग का खिताब वेस्ले कूलहोफ और निकोल मैकटिक की जोड़ी ने जीता वहीं, सेह सू वेई और इलिस मर्टेंस की जोड़ी महिला युगल वर्ग में चैम्पियन बनीं।

स्टॉप क्लॉक नियम

वन-डे और ट्वेंटी-20 में होगा लागू

दुबई, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने स्टॉप क्लॉक नियम को सीमित ओवर प्रारूप में स्थायी बनाने का फैसला किया है। आईसीसी ने बताया कि इस नियम को परीक्षण के तौर पर दिसंबर 2023 में पेश किया गया था। इसके सकारात्मक परिणाम आने के बाद इसे वन-डे और ट्वेंटी-20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में लागू किया जाएगा। यह नियम आगामी आईसीसी ट्वेंटी-20 विश्वकप से लागू हो जाएगा।

क्या है स्टॉप क्लॉक नियम

स्टॉप क्लॉक नियम के अंतर्गत फील्डिंग टीम को 60 सेकेंड के अंदर नया ओवर शुरू करना जरूरी होता है। इसके लिए मैदान में एक इलेक्ट्रॉनिक घड़ी 60 से लेकर शून्य तक उल्टी गिनती करेगी। यदि इस अवधि के दौरान नया ओवर शुरू नहीं किया गया, तो फील्डिंग टीम पर 5 रन की पेनाल्टी लगेगी। पेनाल्टी से पहले टीम को दो बार चेतावनी दी जाएगी, तीसरी बार नियम का उल्लंघन होने पर पेनाल्टी लगाई जाएगी। अगर बार-बार इस नियम को उल्लंघन होता है, तो पेनाल्टी बढ़ती जाएंगी। हालांकि चोट के कारण या डीआरएस के कारण अगर मैच रुकता है, तो यह नियम लागू नहीं होगा।

International Cricket Council

(स्रोत : संपादकीय टीम द्वारा संकलित, फोटो : गूगल से साभार)

सामयिकी

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने कहा दो मई को चुनाव की संभावनाएं नहीं

ब्रिटेन के पहले भारतवंशी प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने तय समय से पहले चुनाव

कराए जाने की अटकलों पर विराम लगा दिया है। उन्होंने कहा कि दो मई को देश के आम चुनाव नहीं कराए जाएंगे। उल्लेखनीय है कि कुछ दिन पहले लेबर पार्टी ने कहा था कि लंदन में स्थानीय और प्रशासकों के चुनाव के साथ ही आम चुनाव भी कराए जा सकते हैं। स्थानीय चुनाव के साथ आम चुनाव की संभावना पर एक चैनल के साथ इंटरव्यू के दौरान 43 वर्षीय सुनक ने कहा कि लोगों को अनुमान लगाते रहना पसंद है, लेकिन ब्रिटेन में दो मई को आम चुनाव की कोई संभावना नहीं है। उन्होंने कहा कि कई हफ्तों में ब्रिटेन में पुलिस और अपराध आयुक्तों, स्थानीय परिषदों, महापौर के लिए चुनाव कराए जाएंगे।

भारतीय सेना संयुक्त मैत्रीय सैन्य अभ्यास-2024 में हुई शामिल

भारतीय सेना की टुकड़ी और सेशेल्स रक्षा बलों (एसडीएफ) के बीच संयुक्त मैत्रीय सैन्य अभ्यास-2024 के दसवें संस्करण का आयोजन किया जा रहा है। यह सैन्य अभ्यास सेशेल्स में चल रहा है। यह संयुक्त सैन्य अभ्यास 18 मार्च से शुरू हुआ और 27 मार्च 2024 तक चलेगा। यह एक द्विवार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम है और वर्ष 2001 से इसका आयोजन सेशेल्स में किया जा रहा है। भारतीय गोरखा राइफल्स और सेशेल्स रक्षा बल प्रत्येक से 45 कर्मी सैन्य अभ्यास में हिस्सा लेते हैं। संयुक्त सैन्य अभ्यास का उद्देश्य शांति स्थापना संचालन पर संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अध्याय VII के तहत अर्ध-शहरी परिदृश्य में उप-पारंपरिक संचालन में अंतर संचालन को बढ़ाना है। यह अभ्यास शांति स्थापना अभियानों के दौरान दोनों पक्षों के बीच सहयोग और अंतर संचालन को बढ़ावा देगा। यह अभ्यास दोनों सेनाओं के बीच कौशल, अनुभव और अनुरूप अभ्यासों के आदान-प्रदान के अलावा द्विपक्षीय सैन्य संबंधों का निर्माण भी करेगा और उन्हें प्रोत्साहन देगा। दोनों सैन्य पक्षों द्वारा आधुनिक उपकरणों और प्रौद्योगिकी के प्रदर्शन के बाद अर्ध-शहरी वातावरण में आने वाले संभावित खतरों को विफल करने के लिए अभ्यास किया जाता है।

एलबीएसएनएए में प्रेरणा प्रशिक्षण कार्यक्रम

हमारी समावेशी विकास की अवधारणा से होगी वंचित वर्ग की प्रगति

यह वह समय है जब सहयोग और अनुकूल समय की मांग है। कम समय अवधि में परिणाम प्राप्त करने के लिए संगठनात्मक, राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न हितधारकों के बीच सहयोग आवश्यक होता है। इसी तरह समृद्ध और विविध अनुभवों के साथ नए विचारों और नई प्रौद्योगिकियों का अनुकूल होना ऐसे प्रभावशाली बदलाव ला सकता है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है। यह कहना है राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का।

राष्ट्रपति ने लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी (एलबीएसएनएए) में 125वें प्रेरणा प्रशिक्षण कार्यक्रम में राज्य सिविल सेवा अधिकारियों को संबोधित किया। इस दौरान राष्ट्रपति ने राज्य सिविल सेवा अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे उस स्थिति में हैं जहां वे दूसरों के लिए प्रेरणा बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि अधिकारियों द्वारा उठाया गया प्रत्येक कदम उनके आसपास के लोगों को विभाग या संगठन की प्रगति के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए प्रेरित कर सकता है। उन्होंने कहा कि भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के रूप में उन्हें प्रशासनिक कामकाज और सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों पर एक अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य विकसित करने की आवश्यकता है।

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी (एलबीएसएनएए) में 125वें प्रेरणा प्रशिक्षण कार्यक्रम में राज्य सिविल सेवा अधिकारियों को संबोधित किया

सभी वर्गों की प्रगति सुनिश्चित

राष्ट्रपति ने कहा कि अधिकारियों को कोई भी विकास कार्य करते समय स्थिरता और समावेशिता को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए। दुनिया ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के खतरों का सामना कर रही है। उन्होंने कहा कि समावेशन विकास का एक और प्रमुख पहलू है, जिसका अर्थ है भागीदारी को प्रोत्साहित करना और वंचित तथा हाशिए पर रहने वाले वर्गों सहित सभी की प्रगति सुनिश्चित करना है।

उपराष्ट्रपति ने हैदराबाद में आयोजित विश्व आध्यात्मिकता महोत्सव को किया संबोधित

हमारी राजनीति और सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था अध्यात्म की शक्ति से प्रभावित है

हैदराबाद में आयोजित विश्व आध्यात्मिकता महोत्सव को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने कहा कि विश्व के सभी धर्मों और आस्थाओं के आध्यात्मिक नेतृत्व, विद्वानों और साधकों को संबोधित करना सम्मान और प्रसन्नता के क्षण हैं। यह आयोजन दुनिया के सबसे बड़े ध्यान केंद्र कान्हा शांति वनम में हो रहा है। उन्होंने कहा कि श्रीराम चंद्र मिशन एक आध्यात्मिक आंदोलन है जो "सहज मार्ग" या "हार्टफुलनेस मेडिटेशन" के अभ्यास पर केंद्रित है।

उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने हैदराबाद में विश्व आध्यात्मिकता महोत्सव को संबोधित किया

उपराष्ट्रपति ने कहा कि "आंतरिक शांति से विश्व शांति" की थीम वैश्विक परिवेश में संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए समसामयिक प्रासंगिकता रखती है। बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, अन्यायपूर्ण और असमान विकास, धर्म या आस्था के आधार पर दमन, असहिष्णुता, भेदभाव और हिंसा के बढ़ने से विश्व परिदृश्य चिंता का विषय है। इसमें हमारा भारत आशा की किरण और मानवता का घर है।

बहुलवाद का गौरवशाली नेतृत्व

उपराष्ट्रपति ने कहा कि हमारी सभ्यता का सदाचार सर्व धर्म समभाव के सिद्धांत पर केन्द्रित है। भारत सदियों से अनेकता में एकता को प्रतिबिंबित करने वाले सभी धर्मों और सभी आस्थाओं के समान संरक्षण और संवर्धन के सिद्धांत को दृढ़ता से फलीभूत करते हुए बहुलवाद का गौरवशाली नेतृत्व कर रहा है। उन्होंने कहा कि विविध धर्मों को मानने वाले बहुलवादी और लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में हमारे समृद्ध इतिहास ने आस्था के लिए प्रताड़ितों को शरण दी है।

सद्गुण को परिभाषित करता है

यह आध्यात्मिक महोत्सव एक समागम से कहीं अधिक है। यह सार्वभौमिक मूल्यों का अभिनंदन और उत्सव दोनों है जो सीमाओं और सांस्कृतिक विविधताओं से निकलते हुए मानवता को एक साथ जोड़ता है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि भारत, मानवता का ऐसा घर है जो आध्यात्मिकता के प्रति गहन प्रतिबद्धता से प्रेरित विश्व उपदेश को परिभाषित कर रहा है। आत्मा ही परम सार है, जो शरीर, मन, हृदय से बहुत परे है। अध्यात्म मानव की परम औदात्य और सद्गुण को परिभाषित करता है।

जीवन के प्रति समग्र दृष्टिकोण

उपराष्ट्रपति ने कहा कि हमारे पांच हज़ार वर्षों के सभ्यतागत सदाचार में निमित मात्र भी संदेह नहीं है कि इतिहास का घटनाक्रम आध्यात्मिक विचारों से प्रभावित था। जीवन के प्रति यह समग्र दृष्टिकोण हमारी संस्कृति को अनूठा बनाता है। भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक कल्याण और प्रकृति के साथ भी, सामंजस्यपूर्ण संतुलन को बढ़ावा देता है।

लगातार पांचवीं बार रूस के राष्ट्रपति बने व्लादिमीर पुतिन

व्लादिमीर पुतिन लगातार 5वीं बार रूस के राष्ट्रपति बन गए हैं। 15 से 17 मार्च 2024 को हुई वोटिंग में पुतिन को 88 प्रतिशत वोट मिले। चुनाव के परिणाम घोषित होने के बाद राष्ट्रपति पुतिन ने कहा कि अब रूस और भी ज्यादा ताकतवर और प्रभावशाली बनेगा। उन्होंने रूस-नाटो विवाद को लेकर भी चर्चा करते हुए कहा कि अगर अमेरिकी नेतृत्व वाला सैन्य संगठन नाटो और रूस आमने-सामने हुए तो दुनिया तीसरे विश्व युद्ध से एक कदम दूर होगी।

2036 तक रूस के राष्ट्रपति रह सकते हैं पुतिन

रूसी संविधान में लिखा है कि कोई भी व्यक्ति लगातार दो बार से ज्यादा राष्ट्रपति नहीं बन सकता है। इसके चलते 8 मई 2008 को पुतिन ने अपने पीएम दिमित्री मेदवेदेव को रूस का राष्ट्रपति बनवाया और खुद पीएम बन गए। जनवरी 2020 में पुतिन ने संविधान संशोधन के जरिए दो टर्म तक राष्ट्रपति की सीमा खत्म कर दी। पुतिन ने जनमत संग्रह से इसे सही साबित करवाया। इसी के साथ पुतिन के 2036 तक राष्ट्रपति बनने का रास्ता साफ हो गया। पुतिन सोवियत संघ पर 3 दशक तक राज करने वाले स्टालिन से आगे हो गए हैं।

पेटेंट कार्यालय ने एक वर्ष में एक लाख पेटेंट प्रदान किए

पेटेंट नियम 2024 को आधिकारिक तौर पर अधिसूचित कर दिया गया है, जो इनोवेशन और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने की दिशा में मील का पत्थर है। ये नियम पेटेंट प्राप्त करने और मैनेज करने की प्रक्रिया को सरल बनाने के उद्देश्य से कई प्रावधान पेश करते हैं, जिससे इनवेंटर्स और क्रिएटर्स के लिए अनुकूल वातावरण की सुविधा मिलती है। पेटेंट किए गए इन्वेंशन में इन्वेंटर्स के योगदान को स्वीकार करने के लिए नए 'सर्टिफिकेट ऑफ इन्वेंटरशिप' का अनूठा प्रावधान पेश किया गया है। प्रौद्योगिकी की तेज गति को ध्यान में रखते हुए परीक्षा के लिए अनुरोध दाखिल करने की समय सीमा आवेदन की प्राथमिकता की तारीख से या आवेदन दाखिल करने की तारीख से, जो भी पहले हो, 48 महीने से घटाकर 31 महीने कर दी गई है।

आईएनएस चिल्का में 02/23 बैच के अग्निवीरों की पासिंग परेड

ओडिशा के आईएनएस चिल्का में अग्निवीरों के तीसरे बैच की एक शानदार पासिंग आउट परेड (पीओपी) आयोजित की गई। इस समारोह में 396 महिला अग्निवीरों सहित कुल 2,630 अग्निवीरों ने हिस्सा लिया। नौसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने परेड की सलामी ली। इस दौरान वाइस एडमिरल वी श्रीनिवास, फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ, दक्षिणी नौसेना कमान संचालन अधिकारी मौजूद थे। मास्टर मूर्तिकार और पद्मश्री तथा पद्म विभूषण से सम्मानित श्री सुदर्शन साहू कार्यक्रम के अतिथि थे। प्रतिष्ठित खेल हस्ती और अर्जुन पुरस्कार विजेता एम सुरंजय सिंह, एमसीपीओ (पीटी) और उपलब्धि हासिल करने वाले दिग्गज पासिंग आउट परेड में मौजूद रहे। परेड 16 सप्ताह के नौसेना प्रशिक्षण के समापन और भारतीय नौसेना में नई यात्रा की शुरुआत का प्रतीक है।

(स्रोत : संपादकीय टीम द्वारा संकलित, फोटो गूगल से साभार)

हेल्थ

अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन के लिये तैयार किये गये स्पेशल शूज

अमेरिका के 81 वर्षीय राष्ट्रपति जो बाइडेन की मेंटल और फिजिकल हेल्थ अक्सर सवालों के घेरे में रहती है। अब तक तीन बार वो गिर चुके हैं और हर बार कैमरे की नजर उन पर थी। न्यूज रिपोर्ट के मुताबिक प्रेसिडेंट के बार-बार गिरने का खतरा कम करने के मकसद से उनके लिए नए तरह के शूज डिजाइन कराए गए हैं। बाइडेन के नए शूज पहली बार पिछले महीने चर्चा में आए थे।

पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प समेत कई नेता बाइडेन की फिजिकल और मेंटल हेल्थ पर सवाल उठा रहे हैं। ज्यादातर का कहना है कि बाइडेन अब मेंटली और फिजिकली फिट नहीं हैं। ट्रम्प ने तो नवंबर 2023 में एक रैली में साफ कहा था कि बाइडेन की हालत ऐसी नहीं है कि वो अमेरिका जैसे ताकतवर देश को लीड कर सकें। इसके जवाब में बाइडेन ने कहा था मुझे मेरे काम से आंका जाना चाहिए।

पर्सनल स्टाफ के लिए फिक्र की बात

पिछले ही महीने एक मेडिकल रिपोर्ट में कहा गया था कि बाइडेन के पैरों में दिक्कत है और उनकी कुछ नर्सें कमजोर हैं। रिपोर्ट के मुताबिक पिछले महीने बाइडेन एयरफोर्स वन की स्टेयर्स पर दो बार लड़खड़ाए थे। 2021 में वो इन्हीं सीढ़ियों पर गिर गए थे। बाली में जी-20 मीटिंग के दौरान भी वो स्लिप हुए थे। उनके पर्सनल स्टाफ के लिए यह फिक्र की बात थी।

शूज को होका ट्रांसपोर्ट कहा जा रहा है

रिपोर्ट के मुताबिक आरएनसी रिसर्च एजेंसी ने कुछ दिन पहले बाइडेन के नए स्नीकर्स के फीचर्स का एनालिसिस किया था। एजेंसी ने बताया कि ये लाइफस्टाइल स्नीकर्स हैं और इन्हें होका ब्रांड ने तैयार किया है। इसके अलावा 'इनसाइड एडिशन' मैगजीन की रिपोर्ट में दावा किया गया है कि नए शूज में प्रेसिडेंट को मैक्सिमम सपोर्ट और वॉकिंग कम्फर्ट मिलेगा। ये नए शूज बैलेंस भी मेंटेन करेंगे, ताकि प्रेसिडेंट को चलते वक्त गिरने का खतरा कम रहे।

स्वामी- मध्यप्रदेश माध्यम, प्रकाशक - संदीप यादव, मुद्रक - संदीप यादव द्वारा मेसर्स डी.बी. कॉर्प लिमिटेड, 10-11, सेक्टर-B, इंडस्ट्रियल एरिया, गोविंदपुरा, भोपाल से मुद्रित एवं मध्यप्रदेश माध्यम 40, प्रशासनिक क्षेत्र, अरेरा हिल्स, भोपाल-462011 (म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक- रंजना चितले।